Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन ज्ञान

[मासिक] जनवरी १९८१
माघ-२०३७

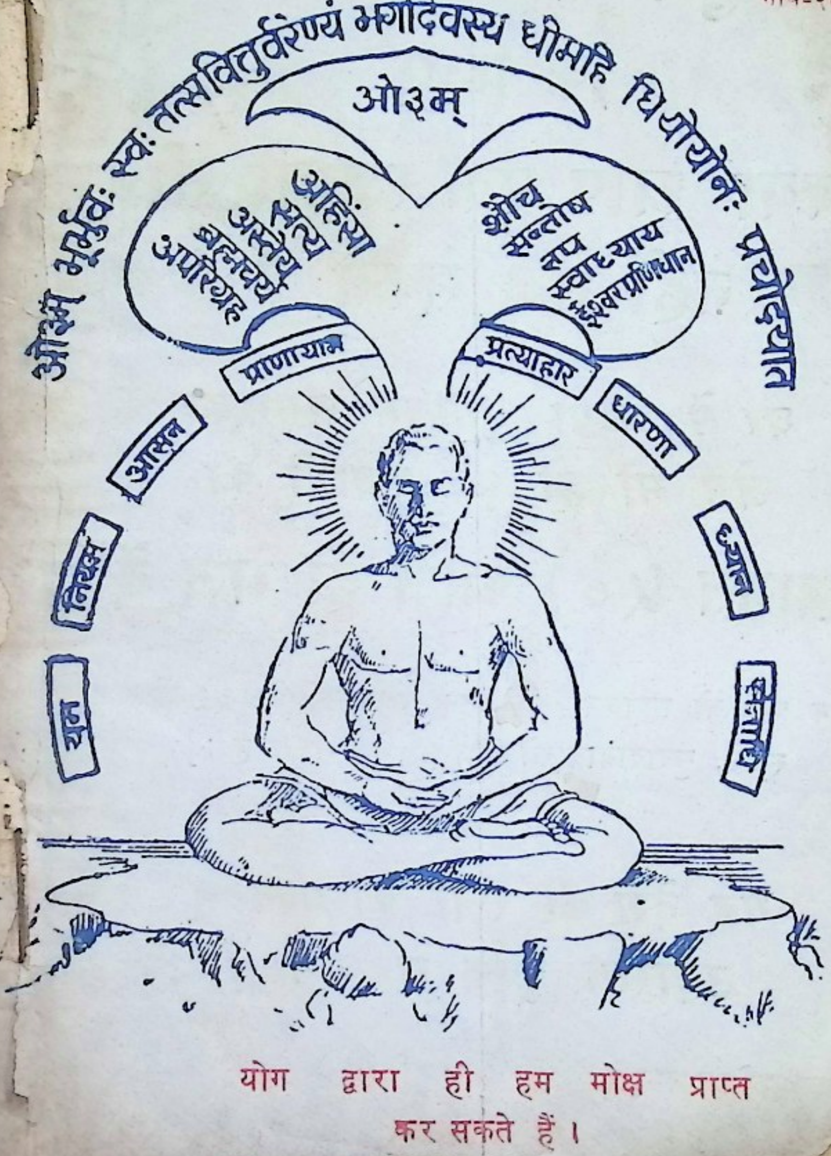

योग द्वारा ही हम मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुरादाबाद के लुटे और बर्बाद हुए

हिन्दुओं को जाड़े से बचाने के लिए

क्या आप एक रजायी भी नहीं भेज सकते ?

घर में आयी मुसीबत समझकर जैसे भी हो एक रजायी की

लागत ५०) आज ही भेज दें

[आप चाहें तो सहायता मंत्री हिन्दू रक्षा समिति ३६ जीला स्ट्रीट, मुरादाबाद को सीधे भी भेज सकते हैं।]

यह देश की रक्षा का प्रश्न है उदारता पूर्वक सहयोग दें

अध्यक्ष अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति
..७, हरध्यानसिंह मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

र्षि दयानन्द सरस्वती

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

जन-ज्ञान
(मासिक)

सम्पादक

राकेशरानी

दूरभाष : ५६२६३९
: ५६९८६१
८०१२११

पता :
, नई दिल्ली-११०००५
क शुल्क २० रुपये
६ पौंड : विमान से
: समुद्री डाक से
वन : ३०१ रुपये
ति : २ रुपये
संवत् २०३७
१३ : अंक ९

तुम और अमरता

मैं जलता हूं,
इसलिए चलता हूं.....................
क्योंकि जलन मुझे सोने नहीं देती,
मुझे बैठने या हंसने नहीं देती।
मेरे सामने तस्वीर है,
जलते हुए मेरे घर की,
इन्सान के सिसकते भाग्य की,
धरती के सौभाग्य की।
मरते इन्सान की,
इसीलिए मैं जलता हूं।
तुम मुझे देख नहीं सकते,
पर मैं तुम्हें देख रहा हूं।
तुम जान नहीं सकते मेरा मन,
पर मैं तुम्हार अन्तर को
उस के भावों को
पहचान रहा हूं।
इसीलिए मैं जलता हूं।

देखो, ठहरो और जाओ
अपने को मत लजाओ॥

अपने को देखकर
गर्व से सिर उठाकर
सीना तानकर
खड़ा होना सीखो।
शान से जीना सीखो।
सत्य के लिए जियो,
और मर भी जाओ —
तब भी तुम मरोगे नहीं,
क्योंकि तुम्हें मारने वाले
स्वयं मर जाएंगे।
और तुम अमर हो जाओगे

—वेदभिक्षु:

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कागज की भीषण महंगायी

किन्तु परमात्मा की अमरवाणी

चारों वेदों का भाष्य

आप केवल २११) में मंगा सकते हैं

[३१ जनवरी १९८१ तक]

अधिक से अधिक मंगाएं और

प्रचार करें—अधिक सैट मंगाने के लिए

रियायत के लिए संपर्क करें

आदेश के साथ ५०) अगाऊ भेजें

सर्वश्रेष्ठ आर्ट पेपर पर:रियायती मूल्य ६०५)

अध्यक्ष दयानन्द संस्थान, वेद मंदिर नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—वेद भिक्षुः

मन की बात

अन्त हीन सी पीड़ाओं का नर्तन देख रहा हूं।
मन का आंगन सूना सूना सब कुछ सूखा टूटा सा है,
कैसा चिन्तन, कैसी पीड़ा, कौन कहां है बिखरा-बिखरा,
सपनों के जीवन को मैंने मुरझाता सा कब देखा था ?

पता नहीं क्यों...गहन वेदना साकार खड़ी है आज द्वार पर
अन्त हीन सा लक्ष्य सिसकता अपना सब कुछ भूल चुका है।
अपना धरती पर कौन···स्वार्थ की धरती पर कैसा प्यार,
किस को, किस से, सब मतलब के साथी देखे ॥

कोई नहीं ऐसा मिल पाया, जो रुकता, द्वार-द्वार पर
दीप जलाता, ज्योति दिखाता, अमृत गगरी को छलकाता,
मन सब का है एक, कि मेरा अपना सब मिल जाए,
दूर न जाए कोई मुझसे, सब जीवन में हम पा जाएं ॥

यह अवगुंठन ऐसा जर्जर है, जिसमें मानव उलझ गया है,
क्रंदन उस के भीतर बैठा, सिसक रहा है रुद्ध प्राण सा।
मैं तो अपने अंतिम क्षण में, शून्य धरोहर ले बैठा हूं।
मेरे अपने—सपने—साथी सब टूटे हैं, संगी कोई साथ नहीं है ॥

एकाकी चलना अब होगा, दूंर लक्ष्य तक, लम्बा पथ है,
रथ टूटा है, मन जगमग है, क्योंकि उजाला पास खड़ा है।
मेरी ममता, क्षमता, सब कुछ आज स्वयं को भुला चुकी है।
नयी राहपर मैं एकाकी, अपना भव्य स्वरूप संभाले अब चलता हूं, ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुरादाबाद के दंगों में उजड़े
गरीब हिन्दुओं के लिए
रजायी कंबल व घरेलू
सामान की अविलंब आवश्यकता है।
तुरन्त भेजिए……उन का दर्द
अनुभव कीजिए और

अधिक से अधिक सहायता
आज ही भेजें

एक रजायी पर ५०) लागत आती है। पुर्नवास के लिए
प्रति व्यक्ति ५००) की आवश्यकता है।

अपनी सहायता आप मन्त्री
हिन्दू रक्षा समिति ३९-जीलाल स्ट्रीट
मुरादाबाद के पते पर या हमें भेज सकते है

वेदभिक्षुः — अध्यक्ष
देवकी नन्दन एड्वोकेट — संयोजक
(डा०) रघुवीर — संगठक
दिवाकर देशपांडे — प्रधान मन्त्री

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति
१५९७ हरध्यानसिंह मार्ग करौल बाग नई दिल्ली-५

चैक-ड्राफ्ट, मनिआडर "अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति" के नाम का ही भे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

हम और नया सूरज

तुम लड़ते हो,
क्यों ?
किस के लिए ?

व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए, या आदर्शों के लिए, संघर्ष क्यों होते हैं, युद्ध क्यों चलते हैं ? इन प्रश्नों पर कभी चिन्तन किया है क्या आपने ?

यदि तनिक भी गहरायी में पैठ कर आप विचारेंगे ता स्वत: ज्ञान होगा कि यह सब कुछ होता है केवल अज्ञान के कारण।

अज्ञान एक ऐसा विष है जो सच को झूठ और झूठ को सच बना देता है। बुद्धि की मलिनता, मन की उच्छृंखलता केवल अज्ञान के कारण ही तो होती है।

अज्ञान का अर्थ है सत्य को न जानना। व्यक्ति क्या है, क्या उसका लाभ है, क्या उसकी हानि है, उसके हित में क्या है, अहित में क्या है ?

वेद कहता है—

> **न वि जानामि यदि वेदमस्मि निण्य सन्नद्धो मनसा चरामि। यदा मागन् प्रथमजा ऋतस्यादिद्वाचो अश्नुवे भागमस्या:।** ऋ—१-१६४-३७

जो अपने को नहीं जानता वह अज्ञानी है, क्योंकि अविद्या के कारण वह सही निर्णय करने में असमर्थ रहता है।

वस्तुत: जीव जब अपने को विस्मृति के गर्त में डालकर भौतिक पदार्थों में लीन होकर अपने को उन से संबद्ध कर लेता है तब उसकी चेतना-ज्ञान शक्ति लुप्त हो जाती है।

मनुष्य अपने को भूलकर अपने उस रूप को ही अपना स्वरूप मान लेता है जो वह सोचता है। धन, पद, परिवार, शक्ति, जाति, देश, वर्ग की भावनाएं तब सिर उठाती हैं और पशुता के भाव का विकास होने लगता है।

क्या मेरा शरीर ही मैं हूं, क्या यह छोटा सा घर ही मेरा है, कब तक के लिए, कौन जानता है। अनन्त जन्म हुए मेरे, यह मैं भूल गया, स्मरण है केवल आज, किन्तु यह सत्य मुझे गिराता है, इसलिए यह सत्य नहीं है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं प्रभु का पुत्र हूं। पर क्या सचमुच हूं। क्या मैंने कभी अपने को जाना है। प्रभु को देखा है? विराट ब्रह्मांड में मेरी क्या स्थिति है? ४ अरब वर्षों की एक सृष्टि में मेरा क्या स्थान है, कितना छोटा हूं मैं, पर मैं तो महान् था, छोटा कैसे हो गया? अज्ञान से।

ज्ञान बिन सूना है संसार। ज्ञान बिन सब डूबे मंझधार॥
प्रभु के पथ पर चलना सीखें, उस के पास रहें हम प्राण।
तभी हमारा सत्य जागता, तब होता सचमुच कल्याण॥

इसलिए, भाइयो और बहिनो!

इस धरती पर संघर्ष है ज्ञान का और अज्ञान का, सत्य का असत्य का, आत्मा का, भौतिकता का। यही संघर्ष पशुता को जन्म देकर मनुष्य को राक्षस बना देता है।

देश-काल-मजहब की दीवारों ने आसुरी भावों की बाढ़ ला दी है। सत्य और धर्म के उदात्त स्वरूप की गंगा को समूल नष्ट करने का उपक्रम किया जा रहा है। हमारा विवाद किसी वर्ग विशेष से नहीं अपितु उन सब भावों से है जो पशुता को जन्म देती हैं। मनुष्य के आत्म तत्व के विकास की बाधा बनकर खड़ी होने वाली दीवारों को खड़ा करना वास्तव में धरती का सबसे बड़ा अपराध है।

प्राणों को मुखरित होने दो, सत्य को गीत गाने दो, धर्म और आत्मा को मुस्कराने दो, यह हमारा चिन्तन है। इस चिन्तन को असुर रौंदते हैं तो हमें इसका प्रतिकार भी करना पड़ता है क्योंकि मानवता और सत्य की रक्षा हमारा एक मात्र लक्ष्य है।

यज्ञाग्नि की लपटों से हमें शांति मिलती है और लगायी हुई आग सभी कुछ जला देती है।

हम इस झुलसाने वाली अग्नि को समाप्त करने के लिए कृत संकल्प हैं। हमें आदि सृष्टि से सत्य की रक्षा के लिए बलिदान देकर विजय वरण करते आए हैं और आज भी हम जीतेंगे। भारत का वह प्राचीन गौरव जो अध्यात्म की गंगा बहाता था जो सत्य को विकास और प्राण को शक्ति प्रदान करता था, फिर से जागेगा। नया सूरज, नयी आशा, नया वैभव लेकर उभरेगा... ..तभी हम अपने आदर्श और धर्म का सूरज धरती पर चमकाने में सफल होंगे—

परमात्मा हमारे साथ है।

शिवरात्रि से पहले

यज्ञशाला बनवाइये! उसके लिए उदारता पूर्वक धन दीजिए। वेद मंदिर में इस बार का बड़ा यज्ञ उसकी अपनी भव्य यज्ञशाला में हो, यह हमारी इच्छा है! ५०१रु० देने वालों का नाम पत्थर पर अंकित किया जाएगा। —राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—वेद भिक्षुः

मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूँ~

प्रिय आभा !

अनेक झंझावातों के साथ १९८० भी जा रहा है, और इस समय तुम हमसे इतनी ही दूर हो, जितना भारत के भाग्य से आशा। आशा और आभा में थोड़ा ही अन्तर है न। आज ६० करोड़ भारत व सी जिस आशा के सहारे जीवित हैं उसकी पूर्ति के लिए त्याग, बलिदान और सर्वस्व समर्पण की जिस भावना की आवश्यकता है वह कहां है ? वह दीप्ति जो निर्धन को धन दे सके ? ठुकराए हुओं को गले लगा सके।

एक अंधेरा देखता हूं तो देखता ही रह जाता हूं। शायद तुम सोचो कि मेरा मस्तिष्क ही अब अंधेरा देखने का स्वभाव बना बैठा है, किन्तु बात ऐसी नहीं है। मैंने जीवन को बहुत पास से देखा है। उसकी कटुता भी देखी है और मिठास भी किन्तु आज तो ऐसा लगता है कि आजादी के ३३ वर्षों ने मिठास को पूरी तरह खा लिया है, जीवन एक चक्की-मशीन बन गया है, केवल पैसा कमाने का यंत्र।

यह सब क्यों हो रहा है, कैसे हो रहा है। इसका विश्लेषण तुम भली भांति कर सकोगी, क्योंकि तुम नयी पीढ़ी की प्रतिनिधि हो।

आज स्थिति यह है कि यदि त्रिपुरा में नर संहार होता है तो राजधानी का शासन या नागरिक उसको अनदेखा कर देते हैं। उनकी रंगरेलियां जारी रहती हैं। जिन्दा जलते मनुष्य, भूख से तड़पते बच्चे, पैसे के लिए तन बेचती सिसकती नारी, एक दूसरे का खून पीने के लिए तैयार इन्सान क्या आजाद भारत के हर नागरिक के लिए एक थप्पड़ नहीं है।

कोई मुसलमान है, तो कोई ईसाई, कोई सिख है तो कोई तमिल, कोई बंगाली, कोई आसामी है तो कोई गुजराती। सोचता हूं भारत में कोई भारतवासी भी है या नहीं। इस देश में देवताओं के परिवेश में राक्षस तो बहुत दीख रहे हैं पर कोई देवता खोजने पर भी तो नहीं मिलता।

मैं सारे भारत में एक आग जलती देख रहा हूं, यह आग स्वार्थ की, गद्दी की भूख की ज्वाला बनकर देश के भविष्य को निगलने के लिए बढ़ रही है। नयी पीढ़ी······हा-हा-हू-हू-ही-ही के सरगम अपने को भुलाने का या ध्वंसके सृजन का उपक्रम कर रही है। गंगा का पानी आज विष घोल रहा है। स्वतंत्रता, समानता, एकता, प्यार शब्द-केवल कोश की शोभा बढ़ा रहे हैं। अच्छा तुम ही सोचो क्या तुम्हें कोई दीखता है जो भारत के लिए अपने को मिटाने को तैयार हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैंने कई बार तुम्हें और तुम्हारे जैसे अनेक नयी पीढ़ी के लोगों को बलिदान की प्रेरणा की है, पर सिवाय हंस देने भर के किसी ने क्या कभी गम्भीरता से सोचा है। क्यों उठाएं कष्ट, क्यों न हम भी मौज करें। इस चिन्तन ने देश को जर्जर बना दिया है, और मुझे भी क्योंकि मैं अपने को कभी अपने रूप में देख ही नहीं पाया।

तुम अपने मन की गहराई में जीवन के सत्य को देखो तो सही, यह जीवन··· और वर्तमान का सब कुछ, क्या हमारे साथ जाएगा ? क्या धरती का विकास व्यक्ति के ठहराव से बंधा है ? व्यक्ति उठता है तो धरती पूजा के गीत गाती है। चरित्र-सत्य-प्यार सबको अपना समझने की भावना और सच्चायी के लिए प्राण अर्पित करने के भाव ही क्या धरती का श्रृंगार नहीं करते ?

मैंनें सब को सदा समान समझा है। तुममें और एक अनजानी बिटिया में मैं भेद करने की स्थिति में अपने को नहीं पाता। सब एक हैं, इसलिए तो आज मन की पीड़ा के गीत तुम्हें सुना रहा हू······आभा जी।

आभा जी !

एक दिन मैं नहीं रहूंगा, और तुम रहोगी, फिर एक दिन तुम भी नहीं रहोगी कोई और रहेगा, और यह प्रवाह करोड़ों वर्षों तक अबोध गति से चलता रहेगा। किन्तु वे संवेदनाएं, चिन्तन धाराएं सदा रहेंगी, उन्हें रहना भी चाहिए, क्योंकि वे न रहीं तो फिर मनुष्य नहीं रहेगा, वह कुछ और बन जाएगा।

मेरा प्रयत्न रहा है कि हमें उन चिन्तन मूल्यों को जीवित रखने के लिए जिएं। हमें देश के ६० करोड़ नागरिकों के जीवन में आशा की आभा तरंगित करने के लिए जिएं। हमारा प्रत्येक पल पुलक से प्रभावित हो। हमारी गरिमा धन में नहीं संग्रह में नहीं, त्याग में है, और वह त्याग मरता जा रहा है। क्या तुम सोचोगी कि वह कैसे जी सकेगा ? कैसे उभर सकेगा ?

प्राणों की वीणा तुमने कभी देखा है, कभी उसके संगीत की लहरों की झंकृतियों तुमने सुनी है। बोलो, तो और बताओ क्या कभी निशा के मध्य गहन रात्रि में तुमने आशा के तारों पर थिरकते भावों का नृत्य देखा है। यदि नहीं तो मैं चाहूंगा कि तुम उसे देखने का प्रयत्न करो।

तुम कल की आशा हो, तुम्हारे साथ की पीढ़ी······बहुत भटक रही है। मैं चाहता हूं कि १९८१ में तुम इस भटकन को रोकन की शक्ति मानस में संचित करो ! तुम अजेय बनो। और कुछ ऐसा करो कि मैं ही नहीं सारा देश तुम पर अभिमान कर सके। यह आशा मैं तुम से और तुम्हारे द्वारा सारी नयी पीढ़ी से करने की सोचता हूं। एक बुझते दीपक को कौन नमस्कार करता है, उसकी ओर कौन आता है।

मैं १९८० हूं और तुम १९८१। मैं बीता हुआ कल और तुम आने वाला कल आने वाला कल सौभाग्य उदित करने के लिए उभरे और अपने साथ उन सबको बिठाए-उठाए जो भटके राही हैं।

वैसे तो आभा जी !

मुझे जितनी निराशा नयी पीढ़ी ने दी है उतनी किसी ने नहीं। नयी पीढ़ी नारे देती है, बातें करती है और काम के नाम पर दम तोड़ती है। वह घोषणाओं में विश्वास रखती है, उन्हें पूरा करने में नहीं। अभी कल ही की तो बात है नई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पीढ़ी के एक प्रतीक ने अपने स्वार्थ का, जो नंगा रूप उपस्थित किया, उसे देख लगा कि आज का पहरेदार जागते रहो की आवाज लगाकर स्वयं सो जाने में विश्वास रखता है।

तुम इतना लम्बा पत्र पढ़कर ऊब गई होगी क्योंकि तुममें मन की भाषा पढ़ने की विद्या का चाव जागा नहीं है। किन्तु मैं तुम्हें नहीं १९८१ को—यह पत्र लिख रहा हूं। तुम केवल प्रतीक हो। अगला वर्ष भारत को किधर ले जाएगा, स्वार्थी लोलुप राजनीति के दलाल कुर्सियों पर चिपके मंत्री नामधारी बगुला भगत, धर्म के नाम पर दुकान चलाने वाले गिरगिट, और भोगवाद की सर्वनाशकारी तरंगों में झूलती नई पीढ़ी, और इन सबसे टकराने की सलाह देने वाला मैं···हो सकता है तुम्हारी दृष्टि में पागल होऊं, किन्तु समय आयेगा जब मेरी वाणी ऐतिहासिक दस्तावेज की भांति सत्य को जागरूक करेगी।

मुरादाबाद से लेकर त्रिपुरा तक, संजय से लेकर भागलपुर में अन्धे किए जाने वाले व्यक्ति तक, बागपत से लेकर कन्याकुमारी तककी पिसती नारी पर दृष्टि डालो। और प्रिय आभा ! भविष्य को बदलने के लिए अपने को जला दो···जिन्दा जला दो। तिल तिल कर जलो। संघर्ष करते हुए जलो। मेरी नई पीढ़ी की प्रतिनिधि तुम··· क्रांति की मशाल थामकर १९८१ का स्वागत करो, स्वयं जलने और सबको प्रकाश देने के लिए—

क्या यह मेरा अपराध था ?

मैंने बिना साधनों के परमात्मा की अमरवाणी वेद के प्रचार का व्रत लिया, क्या यह अपराध था ? नारे नहीं—२५ हजार वेद भाष्य छाप दिए, क्या यह पाप था ? २६ वें हजार वेद के लिए कागज का प्रबंध बीमार पड़ने से न कर सका ? क्या यह मेरा ही कर्त्तव्य था ?

अभावों की चक्की में पिसते हुए, दर्द से कराहते हुए मैं सोचता हूं कि कैसे हैं ये वेद के अनुयायी, जिन्हें वेद पर श्रद्धा नहीं। जो वेद भाष्य प्रकाशन को व्यापार समझते हैं। एक ओर कुरान-बाइबिल करोड़ों छपें, दूसरी ओर वेद कागज के अभाव में सिसके······यह कैसा न्याय है प्रभो !

वेद क्या सबका नहीं ? क्या उसका प्रचार सबका धर्म नहीं······आखिर कौन करेगा, इसके लिए प्रयत्न वेद की जय ? बोलने वाले सोचें कि जय क्या नारों से होगी।

सच तो यह है कि आज भी मेरे मन में बहुत कुछ करने की चाह है, उमंग है, मस्तिष्क भी काम कर रहा है, पर में देख रहा हूं कि वेद का भक्त तो कोई है ही नहीं। कोई नहीं आता इस काम में मेरा हाथ बंटाने। वेद मंदिर सूना है, योजनाएं सूनी हैं। वेद भाष्य के लिए कागज का अभाव परेशान करता है। फिर भी मैं आगे बढ़ने का प्रयत्न कर रहा हूं।

आप सोचते रहिए, मैं जानता हूं कि मेरे बाद··कोई भी मेरे काम को संभालने वाला नहीं दीखता। इसलिए मैं चाहता हूं कि आपके अन्तर में किसी तरह वद के प्रति श्रद्धा जागे और आप वेद प्रचार को यदि पाप नहीं मानते तो·····वेद भाष्य प्रकाशन के लिए अपने सामर्थ्य से बढ़कर सहयोग दीजिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक दिन व्रत रखकर भी प्रतिमाह के कागज के लिए धन दीजिए। कागज का प्रबंध वेद भक्त करें--धन की चिन्ता से हमें मुक्त करें तो फिर देखें इस देश के कायाकल्प के लिए हम क्या करते हैं ?

हिन्दू की रक्षा का प्रश्न

जब हम मानवता की बात करते हैं, विश्व बंधुत्व के गीत गाते हैं। सत्य-न्याय धर्म-समानता और ऊंचे आदर्शों का बखान करते हैं तब एक प्रश्न उठता है कि इन बातों को कौन कह सकता है ? इनके प्रचार के लिए सहयोग कौन दे सकता है ? केवल हिन्दू·······

मुसलमान-ईसाई दोनों तो सिर्फ कुरान-बाइबिल की लकीर पर चलते हैं। उन पर न चलने वालों को अपराधी मानते हैं जब कि हिन्दू के एक घर में अनेक चिन्तन जन्म लेते हैं, रहते हैं।

इसलिए हमारा विश्वास है कि हिन्दुत्व की रक्षा भारत माँ की रक्षा है। देश के उदात्त गौरव की, ऊंचे अध्यात्म की, दर्शन परंपरा की रक्षा है। वेद शास्त्र गौ- गंगा-गायत्री की रक्षा है। जो भी हिन्दू है वह ९५ प्रतिशत देश भक्त है जो अहिन्दू है वह ९५ प्रतिशत देश द्रोही है। इस नग्न सत्य को अनदेखा करने से काम चलने वाला नहीं। दुर्भाग्य यह है कि आज हिन्दू सो रहा है, अपने भाग्य पर रो रहा है, या धन बटोर रहा है।

किन्तु वर्तमान काल खन्ड में मैं वेद-शास्त्र-दर्शन- गीता गायत्री का एक छोटा सा पहरेदार हिन्दू को जगाने के लिए आवाज लगा रहा हूं। भारत मां की स्वतंत्रता को बचानेके लिए जन मानस को उठा रहा हूं। मेरी आवाज भारत के भविष्य की पुकार है। आप उसे सुनें या न सुनें किन्तु समय आएगा जब हमें पछताना होगा, और जागना होगा, न जाने कितने और सिर कटाकर। मुरादाबाद जलता है, और देश का हिन्दू सोता रहता है। त्रिपुरा में नर संहार होता है और किसी के कानों पर जूं तक नहीं रेंगती। असम में आग लगे एक वर्ष हो गया किन्तु शासन विदेशियों को निकालने के लिए तैयार नहीं। इन्दिरा जी कहती हैं। कि हमारे देश ने शरणार्थी को सदा अपनाया है किन्तु हे प्रधानमंत्री जी ! शरणार्थी को अपनाया है पर देशद्रोही को नहीं।

नागालैंड गया—सारा पूर्वांचल गया, झारखंड गया, केरल गया, अब हिमांचल की बारी है। विदेशी पादरियों के व्यापक षड़यन्त्रों के विरुद्ध संगठित सबल आन्दोलन यदि आज न किया गया तो क्रास और ईसा का झंडा और पादरियों का डंडा भारत माँ पर वज्र प्रहार करेगा।

इस्लाम का सुसंगठित राष्ट्र व्यापी गृह युद्ध का षड़यन्त्र कुचलने का काम शासन तो कर नहीं सकता, तब कौन करेगा—केवल हिन्दू ! भारत हमारा है, वह हमारी मातृ भूमि भी है और पुण्य भूमि भी। वह हमारी मां है। हमने अपनी मां के मस्तक पर प्रहार करने वालों को कभी क्षमा नहीं किया, जहां किया 'वहां अपनी स्वतंत्रता को संकट में डाला। इसलिए आज हिन्दू को पूरे मनोबल के साथ जागना होगा, संघर्ष करना होगा अन्यथा अपना सब कुछ स्वाहा करने के लिए तैयार रहना होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३३ वर्ष पहले तक हमने देश को स्वतंत्र कराने के लिए संघर्ष किया था अब शायद ३३ वर्ष बाद फिर अगले २५ वर्षों तक इस आजादी की रक्षा के लिए विशुद्ध राष्ट्रीय आदर्शों पर हमें फिर संघर्ष करना होगा। हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तान की रक्षा के लिए सिर कटाने वाले भगतसिंह और चन्द्रशेखर आजाद जैसे वीर युवक यदि आज आगे नहीं आएंगे तो फिर कुछ भी नहीं बचेगा।

साम्प्रदायिकता को मिटाना है, समाजवाद हटाना है और सैक्यूलरवाद जलाना हैं। देश में बढ़ता डिक्टेटर शिप का खतरा प्रजातंत्र को निगलने के लिए खड़ा है। ऐसे में क्या बातें-प्रस्ताव और भाषण-लेखन से काम चलेगा ?

स्वार्थ के लिए मां को मत वेचो। हिन्दुओ ! गहरी नींद छोड़कर उठो··· एक बार फिर कुरुक्षेत्र के मैदान में योगेश्वर कृष्ण के धनंजय का स्वर सुनो···और देश-धर्म स्वतंत्रता को बचाने के लिए संगठित हो जाओ। अपने को हिन्दू कहने में मत शरमाओ ! मुसलमान यदि राष्ट्रपति पद पर बैठकर भी पहले मुसलमान है तो हिन्दू प्रधानमंत्री पद पर बैठकर भी पहले हिन्दू क्यों नहीं। भारत के मुसलमानों-विदेशी पादरियों के षड़यन्त्र देश को मिटा दें, इससे पहले जागो······और खड़े हो जाओ।

गणतंत्र अमर रहे, जनता समान है। हम सब समान हैं। देश द्रोही को कुचलो। देश भक्त को उठाओ। भारत को बचाओ···यही मेरी पुकार है। एक ब्राह्मण की पुकार है। मैं सोते सिंहोंको जगाना चाहता हूं। इसलिए कि मेरी मां की ओर टेढ़ी आंख से देखने वाले को हम मिटा सकें। और गौ-गंगा गायत्री पर छाए संकट को हटा सकें।

आप क्या सोचते हैं ?

संस्थान को संभालो

राजधानी में एक विशाल वेद प्रचार का केन्द्र बनाकर हमने खड़ा कर दिया मैं देश के सभी प्रबुद्ध वेद भक्तों को निमंत्रण देता हूं कि वे आकर उसे संभालें।

योग्य व्यक्ति जिस दिन आकर सब कुछ संभाल लेंगे, उस दिन हम समझेंगे, कि हम जीवन में सफल हुए।

हमारी देह अब काम नहीं कर पा रही। जो भी संभाले वह चाहे तो हमारा उपयोग ले ले, अन्यथा जैसे चाहे इसे उन्नत करें। संस्थान की रक्षा कीजिए, इसे आकर संभालिए और हमारे द्वारा जलायी ज्योति को जलता रखिए यही चाह है। पता नहीं कब पूरी होगी ?

एफ. डी. की बीमारी

हमारे सर्वनाश का एक कारण है, F.D. की बीमारी। F.D. का अर्थ है बैंक में सुरक्षित निश्चित कालीन धन। यह बीमारी समाज सेवी संस्थाओं को पंगु-लालची कर्त्तव्य भ्रष्ट बना रही है। अभी पिछले दिनों हिन्दुओं की रक्षा के लिए एक संगठन बना। बड़ा शोर मचाया, किन्तु कार्य केवल एक हुआ—बैंक में F.D.।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारी संस्थाओं को न देश की समस्याओं से मतलब है, न अपने उद्देश्यों से उनका लक्ष्य है, धन संग्रह और फिर F.D. एक के बाद एक F.D. बनती जाती हैं और उद्देश्य जलता जाता है।

यह सुरक्षित धन संस्थाओं की शक्ति बताया जाता है। पर सारे झगड़े, चुनाव और निष्क्रियता का वातावरण उत्पन्न करने का कारण बन रही है F.D.। जमा करना संस्थाओं का काम नहीं। वे ब्राह्मण हैं। धन आए और उसे बांट दिया जाए, उद्देश्य के लिए व्यय कर दिया जाए तो संस्था आगे बढ़ती है और उसमें नये जीवन आते हैं।

इस बीमारी को समाप्त करने का एक ही प्रकार है कि दानदाता पूछें कि आपकी F.D. तो नहीं है। यदि है तो उस संस्था से कहें पहले उसे व्यय करो, फिर आना हमारे पास···अन्यथा संस्थाएं षड़यंत्रों का केन्द्र बनती ही जाएगी। ●

वेद अपने घर में लाएं

यदि अब तक भी वेद आपके घर में नहीं पहुंचे तो इस शिवरात्रि से पहले उन्हें घर लाइये। जन-ज्ञान के सदस्यों को हम चारों वेद केवल १७५) में देंगे। यह सुविधा ७ फरवरी तक ही रहेगी एक सदस्य केवल एक ही सेट मंगा सकेगा। अतः शीघ्र ही अपने घर में वेद लाने का निश्चय करें। या अपने किसी मित्र को अपनी ओर से भेंट दें। —वेद भिक्षुः

सर्वत्र हिन्दू रक्षा समिति स्थापित करें!

उन सभी से जो हिन्दू रक्षा समिति के उद्देश्यों से सहमत हैं – हमारा आग्रह है कि वे अपने नगर में अविलम्ब समिति की स्थापना करें।

१. कम से कम २० सदस्य बना कर उनके फार्म व शुल्क भेजें।

२. फार्म प्राप्त होने पर पूरी जांच कर हम आपको समिति की स्थापना की अनुमति देंगे।

३. विधिवत समिति स्थापित होने के बाद आप अधिक से अधिक सदस्य बनाएं। जो सदस्य बनाएंगे उसका आधा धन हम स्थानीय प्रचार के लिए आपको देंगे।

४. आप धन संग्रह भी कर सकेंगे। और उसमें तीन भाग अपने नगर में प्रचार पर व्यय करेंगे। एक चौथाई भाग केन्द्र में भेजेंगे।

५. समिति का उद्देश्य सभी हिंदुओं की रक्षा करना—आपत्ति में पड़ों को सहायता देना व जन जागरण उत्पन्न करना होगा।

६. पूर्वांचल में ईसाई मिशनरियों के विरुद्ध कार्य करने व देश में साम्प्रदायिकता विरोधी वातावरण उत्पन्न करने के लिए आप पूरे बल से जुट जाएं—

हिन्दू जागें! देश बचाएं यह समय की मांग है'

विनीत.

वेद भिक्षुः

जन-ज्ञान (मासिक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या आप हिन्दू हैं ?

क्या आप को अपने धर्म, संस्कृति
और परम्पराओं पर अभिमान है ?

क्या आप अपना सभी कुछ बचाने की
भावना रखते हैं ?

यदि आपका उत्तर हां में
हो तो
आज ही

अखिल भारतीय
हिन्दू रक्षा समिति
के स्वयं सदस्य बनें

और
अपने नगर में हिन्दू रक्षा
समिति स्थापित करें

हिन्दू जागें ! देश बचाएं

दूरभाष— ५६२६३६
५६६८६१

मंत्री, अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति,
वेद मन्दिर नई, दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति

प्रधान कार्यालय : १५६७, हरध्यानसिंह मार्ग,
नई दिल्ली-११०००५

सदस्यता पत्र

मैंने हिन्दू रक्षा समिति के उद्देश्यों को भली भांति समझ लिया है। मैं इसके लक्ष्य से सहमत होकर इसका........................सदस्य बनना स्वीकार करता हूं।

सदस्यता शुल्क.........रु० दे रहा हूं। मुझसे इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जो भी संभव होगा, करता रहूंगा।

हस्ताक्षर..................

नाम व पूरा पता..............................
....

हिन्दू रक्षा समिति के उद्देश्य—

१. भारत राष्ट्र की स्वतन्त्रता, सुरक्षा, एकता और संस्कृति को हानि पहुंचाने वाले तत्त्वों का—

२. मजहब के आधार पर आरक्षण, विशेष अधिकार व विधि-नियम मांगने की विघटनकारी प्रवृत्ति का—

३. विदेशी देशद्रोही शक्तियों के राष्ट्रघातक षड्यन्त्रों का—

४. भारत के नागरिकों के लिए पृथक् पृथक् राज्य नियम और अधिकार—

५. सांप्रदायिकता, ज़ातीपात, प्रान्तीयता व विदेशी चरित्र भ्रष्ट करने वाली विचारधाराओं का—

संगठित विरोध कर भारत की रक्षा करना "हिन्दू रक्षा समिति" का उद्देश्य है।

सदस्यता :

१. ५००१) वार्षिक देने वाले "संचालक सदस्य" होंगे।
२. १००१) वार्षिक देने वाले "संरक्षक सदस्य" होंगे।
३. ५०१) वार्षिक देने वाले "सहायक सदस्य होंगे।
४. २४१) वार्षिक देने वाले "दाता सदस्य होंगे।
५. १०१) वार्षिक देने वाले "पोषक सदस्य" होंगे।
६. ५१) वार्षिक देने वाले "विशिष्ट सदस्य होंगे।
७. २५) वार्षिक देने वाले "सहयोगी सदस्य" होंगे।
८. १२) वार्षिक देने वाले "प्राथमिक सदस्य" होंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद मंन्दिर मे बन रही

यज्ञ-शाला गायत्री यज्ञमन्दिर के लिए

ईंटें, संगमरमर-लोहा-सीमेंट भेजिए

५०१ रु० देने वालों के नाम का पत्थर लगेगा

१००१) या अधिक देने पर
चित्र भी प्रकाशित होगा

५-१० हजार देकर अपने किसी प्रिय जन की स्मृति में कमरा बनवाएं

★
★★

अध्यक्ष दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर
१५६७ हरध्यान सिंह मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अ. भा. हिन्दू रक्षा समिति की मांगें

१. मजहब के आधार पर पुलिस, सेना व सरकारी विभागों में आरक्षण की मांग को किसी भी स्थिति में स्वीकार न किया जाए।

२. कश्मीर, असम व देश के सभी भागों में पाकिस्तानी घुसपैठियों व सेवा की आड़ में राजनैतिक देशद्रोहपूर्ण षड्यन्त्रों में लगे सभी विदेशी पादरियों को तुरन्त भारत से निकाला जाए।

३. अल्पसंख्यक आयोग समाप्त किया जाए।

४. भारत के किसी भी भाग में मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलने की अनुमति न दी जाये और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया जाए।

५. अल्प संख्यक-बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग बन्द हो और तुष्टीकरण की नीति समाप्त की जाए।

६. भारत के सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानून, नियम और अधिकार बनाए जाएं।

७. कश्मीर सम्बन्धी धारा ३७० तुरन्त हटायी जाए और वहां भारत के नागरिकों को बसाने की व्यवस्था हो।

८. मजहब के नाम पर अधिकार मांगने व दंगा करने वालों को पूरी शक्ति से कुचल दिया जाए।

९. जो भारत को अपना देश नहीं मानते उनको वोट का अधिकार न दिया जाए। प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार देने से पहले एक शपथ-पत्र भरने का नियम बनाया जाए, जिसमें वह स्वीकार करे कि मैं भारत को अपनी मातृभूमि स्वीकार करता हूं और मेरी प्रथम निष्ठा भारत राष्ट्र के प्रति रहेगी।

१०. गौहत्या का कलंक तुरन्त समाप्त किया जाए।

आप भी अपने नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित कर इन मांगों को भारत सरकार को भेजें।

—वेदभिक्षु.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्यार्थप्रकाश के उत्तरार्ध में क्या है ?

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनी अमर कृति सत्यार्थप्रकाश के त्तरार्ध में पौराणिक, जैन, बौद्ध, इस्लाम और ईसाइयत समेत अनेक अवै- रक मतों का खंडन किया है। सत्यार्थ प्रकाश के पूर्वार्ध में दस समुल्लास और उत्तरार्ध में चार। इन चार समुल्लासों का सार-संक्षेप पढ़िये प्रस्तुत चना में।

ग्यारहवें समुल्लास का सार संक्षेप

५,००० वर्ष पूर्व सारे संसार में केवल वैदिक धर्म था। तब कौरवों और पांडवों में महाभारत का युद्ध हुआ, जिसमें प्रायः सभी बड़े-बड़े लोग मारे गये और फल- वरूप भारतीय साम्राज्य का पतन हो गया। उस युद्ध से पूर्व संसार भारतीय सभ्यता उत्कर्ष को देखकर आश्चर्यान्वित होता था और संसार भर के लोग विज्ञान और ला की शिक्षा के लिए भारत आते थे। (जैसे आजकल के लोग विज्ञान और कला शिक्षा के लिए सभ्यता के केन्द्र यूरोप जाते हैं।) [मनु २.२०] मैत्री उपनिषद् पढ़ने से पता चलता है कि भारत माता ससार भर की साम्राज्ञी थी। उसमें सार पर शासन करने वाले १७ राजाओं के नाम गिनाये गये हैं, जिनमें अन्तिम रत था, जिसके नाम पर भारत का नाम भरत खंड अथवा भारतवर्ष पड़ा।

प्राचीन भारतीयों ने सैन्य कला को आश्चर्यजनक स्तर तक विकसित किया -इस सीमा तक कि वह आधुनिक सैन्यकला का मुकाबला कर सकती थी। उस मय शतध्नी [तोप] और भुशुंडी [बन्दूक] का भी इस्तेमाल होता था। दर्शन, आयु- ज्ञान, गणित, काव्यशास्त्र और ज्ञान-विज्ञान की अन्य शाखाओं में भारत ने जो न्नति की, उसका प्रमाण पुस्तकों में मिलता है।

पाश्चात्य जगत् को भारत से ही ज्ञान मिला। पहले वह मिस्र पहुंचा, वहां से नान, यूनान से रोम और वहां से सारे यूरोप में फैलता हुआ अमरीका पहुंचा। कई र यूरोपियन प्राच्यविद् संस्कृत पुस्तकों के गलत अर्थ लगाते हैं। परिणाम यह होता कि वे सचाई तक नहीं पहुंच पाते। उदाहरणार्थ स्वर्गीय प्रो० मैक्समूलर ने ब्रध्नम् अर्थ घोड़ा किया है, जबकि इसका सही अर्थ परमात्मा है। अपनी पुस्तक "बाइ- ल इन इंडिया" में डा०गोल्डस्टकर ने ठीक ही लिखा है कि आर्यावर्त्त सारे ज्ञान, नैति-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह विश्वास भी गलत है कि भगवान ने राम, कृष्ण के रूप में अवतार लिया वेदों में बताया गया है कि भगवान कभी शरीर धारण नहीं करता, क्योंकि सर्वव्याप होने से उसे अवतार लेने की आवश्कता नहीं।

कुछ लोगों की यह गलत धारणा है कि वेद मन्त्रों द्वारा आवाहन करने प भगवान अवतार लेता है। इस धारणा के गलत होने का प्रमाण यही है कि जि शब्दों में भगवान का आवाहन किया जाता है, वे वेदों में हैं ही नहीं। पोपों ने अ नियों से धन ठगने के लिए ये पद घड़ लिये हैं। यजुर्वेद स्वयं कहता है कि भगव की प्रतिमा नहीं होती। केन उपनिषद् कहती है कि "जो वाणी की इयत्ता है अर्थ यह जल है, लीजिए, उसका विषय नहीं, उसी को ब्रह्म जान उसी की उपासना क जो उससे भिन्न है, वह उपासनीय नहीं।"

मूर्तिपूजा के कारण हमारे देश में अनेक बुराइयां आईं। इससे मन चं होता है, क्योंकि पहले तो मूर्त्ति पर ध्यान जाता है और फिर इधर-उधर भट लगता है। इस पर लाखों रुपये व्यय होते हैं, जिससे आपसी विवाद और क उत्पन्न होते हैं। मूर्त्ति पूजक अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं करते और व्यर्थ कामों में लगे रहते हैं। हमें मूर्त्तिपूजा छोड़कर माता, पिता, गुरू, अतिथि आदि सेवा करनी चाहिए।

मूर्त्तिपूजकों ने अनेक स्थानों पर मूर्त्तियों की स्थापना की हैं, जो तीर्थस्थान क लाते हैं। इन स्थानों पर पंडे तीर्थ यात्रियों को ठगते हैं। कुछ उदाहरण लीजि काशी में कहा जाता है कि महादेव ने एक म्लेच्छ से बचने के लिए अपने आप कुएं में छिपा लिया। सच यह है कि औरंगजेब मूर्त्तियां तुड़वाता था। जब मुस मानों ने काशी पर आक्रमण किया, तब किसी पोप ने महादेव की मूर्त्ति कुएं में ड दी। जगन्नाथ पुरी में पुजारी अनेक चालाकियां चलते हैं। वे एक चूल्हे पर चाव की अनेक पतीलियां चढ़ा देते हैं। और तीर्थ यात्रियों को दिखाते हैं कि सबसे ऊ वाली पतीली के चावल सबसे पहले पकते हैं। सचाई यह है कि वे पके हुए चाव की पतीली सबसे ऊपर रखते हैं और तब तीर्थ यात्रियों को उन्हें दिखाने के लाते हैं।

दक्षिण में मूर्त्ति इस ढग से बनाई जाती है कि उसमें नालियां लगी रहती इस तरह इसके पीछे बैठा और नालियों के सहारे हुक्का पीने वाला व्यक्ति ऐसा प्र करता है मानों मूर्त्ति हुक्का पी रही हो। महमूद गजनवी ने सोमनाथ म की जिस मूर्त्ति को तोड़ा और लूटा वह चुम्बक के सहारे आकाश में टि हुई थी।

इन सब तथाकथित तीर्थ स्थानों को बने कुछ ही समय बीता है। जब जै यों ने बारहवीं शताब्दी में गिरनार, आबू, पालिटाना आदि का निर्माण किया, ब्राह्मण पोपों ने उनकी नकल की। यदि इन पोपों के रिकार्ड देखे जायें, तो हम पायेंगे कि मूर्त्तियों का निर्माण एक हजार वर्ष से अधिक पुराना नहीं।

ये सब पन्थाई अपने मत के प्रवर्तक की पूजा पर जोर देते हैं और भगवान् के समान मानते हैं। लेकिन यह बेहूदा बात है, क्योंकि कोई भी मनु चाहे वह कितना भी महान क्यों न हो सृष्टि के रचयिता भगवान के समान नहीं सकता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिद्ध करने के लिए मूर्त्ति पूजक कहते हैं कि इन पुराणों की रचना वेदान्त दर्शन के रचयिता महर्षि व्यास ने की। लेकिन व्यास के ग्रन्थों के अध्ययन से हम इस परिणाम पर नहीं पहुंचते कि वे ऐसी असत्य और परस्पर विरोधी बातें लिख सकते हैं, जैसी पुराणों में मिलती हैं। उदाहरणार्थ शिवपुराण के अनुसार शिव तो महादेव हैं और अन्य देवता उनके सेवक हैं। विष्णुपुराण के अनुसार विष्णु सृष्टि के रचयिता हैं और अन्य देवता उनके भृत्य हैं। पुराणों की इन बातों से लगता है कि पुराण एक ही व्यक्ति की रचना नहीं हो सकते—विशेषत: व्यास जैसे विद्वान की। पुराणों की सृष्टि रचना की गाथाएं अत्यन्त हास्यप्रद हैं। उदाहरणार्थ भागवत के अनुसार विष्णु की नाभि से निकले पद्म से ब्रह्मा का जन्म हुआ, ब्रह्मा के दायें पैर के अंगूठे से स्वायम्भु का जन्म हुआ और बायें पैर के अंगूठे से रानी स्वरूपा का। उसके मस्तक से रुद्र और नौ अन्य पुत्रों का जन्म हुआ। इसी वंशानुक्रम में वृक्ष, पर्वत, पुरुष, दैत्य, सर्प आदि पैदा हुए। ये सब पागलों की कल्पनाएं हैं। मतलब यह है कि पुराणों की रचना व्यास ने नहीं की।

यह गलत है कि महर्षि कश्यप और उनकी पत्नियों से संसार के सब पदार्थ पैदा हुए। कोई मनुष्य वृक्षों, पर्वतों और नदियों को कैसे जन्म दे सकता है। कश्यप शब्द पश्यक का आद्यन्तविपर्यय है। पश्यक परमात्मा का नाम है जिसने संसार के सब पदार्थों की रचना की है।

पोपों का यह दावा भी गलत है कि वे मनुष्य के भाग्य को प्रभावित करने वाले दुष्ट ग्रहों को प्रसन्न कर सकते हैं। यदि ग्रह उनके नियन्त्रण में हैं तो वे घर-घर जाकर भीख क्यों मांगते हैं? मनुष्य के भाग्य की अच्छाई बुराई उसके कर्मों का फल है।

गरुड़ पुराण में लिखा है कि मरण शय्या पर पड़े व्यक्ति को चाहिए कि वह पुरोहित को गौ दान करे, ताकि मरने पर यजमान वैतरणी नदी पार कर सके। लेकिन होता यह है कि गौ पुरोहित के ही पास रह जाती है और मृतक की स्वर्ग यात्रा में उसकी कोई सहायता नहीं करती। जब बुद्धिमान लोग इन बातों को सोचेंगे, तब सच्चाई उनके समक्ष प्रकट हो जायेगी। एक बार एक जाट ने अपने म्रियमाण पिता की ओर से पुरोहित को गौ दान की। कुछ दिन बाद उसने देखा कि वह गौ तो पुरोहित के घर ही बंधी हुई है। उसने पुरोहित से पूछा कि गौ को उसके पिता के पास क्यों नहीं भेजा गया, ताकि वह वैतरणी नदी पार कर सकें। यह कह कर वह गौ को वापस ले आया। यदि सभी लोग इसी तरह समझ से काम लें, तो पोपों की जालसाजी का अन्त हो जाये।

पोप उपवासों के बारे में जो कहते हैं, वह भी गलत है। कहा जाता है कि एक बार एक वेश्या स्वर्ग से पृथ्वी पर गिर पड़ी। जब उसने स्वर्ग में पुन: प्रवेश की प्रार्थना की, तब उसे बताया गया कि यदि कोई व्यक्ति एकादशी के दिन उपवास करके उसका पुण्य उस वेश्या को दे दे, तो वेश्या को स्वर्ग में पुन: प्रवेश मिल सकता है। जिस नगर में वह गिरी थी, वहां रहने वाली एक स्त्री का एकादशी के दिन अपने पति से झगड़ा हो गया और उसने उस दिन भोजन न किया। वहां के राजा ने उस स्त्री को अपना पुण्य वेश्या को देने के लिए राजी कर लिया। इस पर वेश्या को पुन: स्वर्ग में प्रवेश मिल गया। पुराणों की ऐसी कहानियों पर मूर्ख ही विश्वास कर सकते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मूर्त्ति पूजक कहते हैं कि वेदों की कुछ शाखाएं अब लुप्त हो गई हैं, इनमें मूर्त्ति पूजा का विधान होगा। इसका उत्तर यह है कि ये शाखाएं व्यास आदि के समय विद्यमान थीं, परन्तु उन्होंने तो अपने ग्रन्थों में कहीं मूर्त्ति पूजा का विधान नहीं दिया। अतः सिद्ध हुआ कि वेदों में कहीं भी मूर्त्ति पूजा का विधान नहीं।

मूर्त्ति पूजक राम, कृष्ण और अन्य महापुरुषों की कठपुतलियां बनाकर उन्हें नचाते हैं और उनके नाम पर भीख मांगते हैं। यदि उन महापुरुषों के समय ये लोग ऐसा करते तो इन्हें कठोर दण्ड मिलता।

अनेक पन्थाई हैं जिन्हें धर्म के यथार्थ रूप का ज्ञान नहीं। खाखी, जोगी, सन्यासी आदि इधर-उधर घूमकर अपना समय नष्ट करते हैं। ये सब वैदिक धर्म के विरोधी हैं।

कबीर के अनुयायियों का मन्त्र "सत्यनाम कबीर" आदि है। नानक के अनुयायी सिख कहलाते हैं। इनका धर्म ग्रन्थ गुरु ग्रन्थ साहब है। इसमें कहीं कहीं वेदों की प्रशंसा की गई है और कहीं-कहीं निन्दा। इनके मत के पांच चिह्न हैं—केश, कंघा, कड़ा, कच्छा और किरपान। सिखों के ये पांच ककार उनके अन्तिम गुरु गोविन्दसिंह ने दिये। वे गुरू ग्रन्थ साहब की मूर्ति व पूजा करते हैं। रामस्नेही संप्रदाय के लोग रामनाम का उच्चारण करते हैं। इस सम्प्रदाय का प्रवर्तन रामचरण नामक व्यक्ति ने दिया था। उसने अपना मुख्य केन्द्र शाहपुरा (राजस्थान) में बनवाया। ये लोग वेदों और गीता की निन्दा करते हैं और अपने सम्प्रदाय से बाहर के सब लोगों को तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं।

गोसाइयों के समुदाय का प्रवर्तन एक पितृहीन बालक ने दिया, जिसे लछमन भट्ट नामक एक बहिष्कृत ब्राह्मण ने गोद ले लिया था। जब यह बालक बड़ा हो गया, तब वल्लभाचार्य कहलाया। उन्होंने संस्कृत में कुछ श्लोकों की भी रचना की। संस्कृत में एक पुस्तक लिखी, जिसमें लिखा कि इस सम्प्रदाय के अनुयायियों को अपनी कामना, शरीर और सम्पत्ति भगवान् कृष्ण के नाम पर इस सम्प्रदाय को अर्पित कर देनी चाहिए। यदि गोसाई किसी भक्त की पत्नी को पसन्द करले तो वह प्रसन्नता पूर्वक अपनी पत्नी उसके हवाले कर देता है। मथुरा में उनके कृष्ण मन्दिर में लाखों रुपये का चढ़ावा चढ़ता है, जिसे गोसाई अपने भोग विलास में व्यय करते हैं।

नारायण स्वामी सम्प्रदाय सहजानन्द नामक ब्राह्मण ने प्रारम्भ किया था, जिसने जालसाजी करके भगवान् नारायण का रूप धारण किया। माधवाचार्य के सम्प्रदाय के लोग कृष्ण की पूजा करते हैं। ये अपने माथे पर दो-दो सीधी रेखाएं और उनके मध्य में काला टीका लगाते हैं। इससे वे मुक्ति होना मानते हैं।

ब्राह्मण समाज और प्रार्थना समाज की स्थापना हुए अधिक समय नहीं बीता। ये धर्मशास्त्रों को निर्भ्रान्ति प्रमाण नहीं मानते और जाति पति में विश्वास करते हैं। पुनर्जन्म भी इनका विश्वास नहीं। ये ईसाइयों की नकल करते हैं और यूरोपियन रीति रिवाजों के प्रशंसक हैं। लेकिन इनमें यूरोपियनों के देशभक्ति, निस्वार्थ-भाव आदि गुणों का अभाव है। ये लोग जीव और प्रकृति को अनादि अनन्त नहीं मानते, प्रार्थना और पश्चात्ताप से पापों का क्षमा कर दिया जाना मानते हैं और आत्मा की अनन्त उन्नति म विश्वास करते हैं। जीव और प्रकृति का अनादि-अनन्त न होना अकल्पनीय है और तर्क की कसौटी पर यह सिद्धांत खरा नहीं उतरता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मा की उन्नति की सीमा है और यदि पाप क्षमा कर दिये जायें तो भगवान् ायी ठहरता है।

ये सब सम्प्रदाय अपने आपको सन्मार्ग पर और शेष सब को कुमार्ग पर ने वाला मानते हैं। वैष्णवों का मत है कि उनके सिवा अन्य सब मतावलम्बी क में जायेंगे। ईसाइयों और हिन्दुओं की स्वर्ग की कल्पना एक जैसी है। मुसलमानों बहिश्त के दरवाजे केवल उनके लिए खुले हैं, जो अल्लाह, मुहम्मद, कुरान और ामत पर विश्वास करें। ये सब सिद्धांत धन कमाने की पोप लीला है।

सच्चा धर्म वेदों और उपनिषदों में है। इनके अनुसार विद्वानों का कर्त्तव्य है वे जनता को सन्मार्ग दिखायें, कुमार्ग से हटायें और अच्छे काम करने के लिए रित करें। वेदों के अध्ययन, सत्संग, शुभकर्मों के करने, आत्मसंयम और शुद्ध रित्र से मुक्ति प्राप्त होती है।

बारहवें समुल्लास का सार-संक्षेप

चारवाक मत नास्तिकों का मत है। इस मत के प्रचारक बृहस्पति का कहना है कि "जब तक जीवित रहो, सुख से रहो। एक बार जब शरीर चिता जल कर भस्म हो गया, तब पुर्नजन्म कैसे सम्भव है?" उनका कहना है कि यह क यथार्थ है, परलोक तो कल्पना मात्र है। इस शरीर में चार तत्व हैं, जिनके मिल ने से चेतना उत्पन्न होती है। इसी चेतना को आत्मा कहते हैं। आत्मा शरीर के थ ही समाप्त हो जाती है। इसका उत्तर यह है कि भौतिक तत्व अचेतन हैं। वे ना को जन्म नहीं दे सकते। चेतन आत्मा इन तत्वों से पृथक् है। दृष्टा और दृश्य क नहीं हो सकते। इसलिए आत्मा की प्रकृति से पृथक् सत्ता माननीय होगी।

चारवाक मत के अनुयायियों द्वारा पशु बलि की निन्दा करना उचित है. क्यों यदि बलि दिये गये पशु स्वर्ग जाते हैं, तो बलि देने वालों को चाहिए कि वे अपने ता पिता की बलि देकर उन्हें स्वर्ग भेज दें। यदि मृतकों को भेजा गया भोजन हें मिल जाता है, तो यात्रा पर गये लोगों को भेजा गया पाथेय भी उन्हें मिल ना चाहिए।

नास्तिकों का यह आरोप गलत है कि वेदों में पशु बलि का विधान है और से यह सिद्ध होता है कि वे धूर्त्तों द्वारा लिखे गये हैं, क्योंकि पशु बलि का विधान ही नहीं। इस प्रकार की बातें वेदों के गलत भाष्य में कहीं गई हैं। पुरोहितों और ममार्गियों ने पुराणों में ऐसी बातें लिखीं इन लोगों को वेदार्थ की समझ न ।

बौद्धमत आत्मा का अस्तित्व मानता है। लेकिन संसार के अस्तित्व की ीरी के सम्बन्ध में इनमे चार सम्प्रदाय हैं =१. माध्यमिक सम्प्रदाय संसार की ता को नहीं मानता। उसका कहना है कि काल के कारण सत्ता का आभास होता । काल में ही सत्ता का लोप हो जाता है। २. योगाचार सम्प्रदाय का कहना है क यह संसार मन का प्रतिबिम्ब है। यह मन में है, मन से बाहर नहीं। ३. सौत्रा-न्तिक सम्प्रदाय का कहना है कि संसार की सत्ता का ज्ञान अप्रत्यक्ष रूप से होता है, त्यक्ष रूप से नहीं। ४. वैभाषिक सम्प्रदाय का कहना है कि ससार की सत्ता बाह्य । कुल मिलाकर बौद्ध संसार को शून्य मानते हैं। शून्य की थ्यौरी का खंडन तो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
अपने आप हो जाता है, क्योंकि शून्य को मानने वाला इस बात को प्रमाणित रहा है कि कहीं न कहीं सत्ता विद्यमान है।

बौद्धों और जैनियों के तीर्थंकर समान हैं। दोनों की शिक्षाओं में मुख्य यह है कि इच्छाओं का परित्याग किया जाये, जो योग से ही सम्भव है। इच्छ अनादि काल से मनमें विद्यमान हैं। इन्हें पांच स्कन्धों में बांटा जा सकता है रूप २. विज्ञान ६.वेदना ४. संज्ञा ५. संस्कार ।

एक अन्य सिद्धान्त है द्वादशायतनों की पूजा का— पांच ज्ञानेन्द्रियां, कर्मेन्द्रियां, इच्छा और तर्क। बौद्धों का ईश्वर और वेदों में विश्वास नहीं। वे इ यों की पूजा करते हैं, इस लिए वे भी भोगवादी ठहरते हैं।

बौद्ध बुद्ध को भगवान मानते हैं, संसार को दुःखों का घर मानते हैं और इच्छाओं की समाप्ति में मुक्ति मानते हैं। इनसे पूछना चाहिए कि बुद्ध और उ गुरु को किसने बनाया? संसार में सुख दुःख दोनों हैं। गहरी निद्रा में इच्छाओं समाप्ति हो जाती है। क्या उसे मुक्ति कहा जायेगा?

बौद्ध आकाश, काल, मन और प्रकृति की सत्ता मानते हैं। जैनी इनके अ रिक्त दो और की सत्ता मानते हैं=पुण्य और पाप। लेकिन पुण्य और पाप कोई पृ तत्व नहीं। इनका निवास मनमें है। वैशेषिक दर्शन नौ तत्व मानता है, जिन्हें व चार में परिवर्त्तित करने का विफल प्रयत्न करते हैं पाँच तत्वों के अतिरि आकाश काल, मन और प्रकृति—ये सब मिलाकर नौ हुए।

अस्तित्व के सिद्धान्त की पुष्टि के लिए जैनी सात भंग मानते हैं। लेकिन केवल शब्द जाल है और अस्तित्व के सम्बन्ध में किसी निर्णय पर पहुंचने के लि इस पर गम्भीर विचार करने की आवश्यकता नहीं।

जैनी भगवान् को नहीं मानते। उनका कहना है कि जीव ही भगवान् जाता है। ये चौबीस तीर्थंकरों को परमेश्वर मानते हैं। इनका कहना है कि जो इच्छ ओं और वासनाओं से मुक्त हो, वही भगवान् है और हमारे तीर्थंकरों ने इन दो का नाश कर दिया था, इस लिए वे भगवान् हैं। इनसे पूछा जा सकता है कि य भगवान् की कोई सत्ता नहीं, तो जैन तीर्थंकरों को किसने जन्म दिया? वे तीर्थं सान्त और सीमित थे और भगवान् अनन्त और असीम है। इसलिए वे भगवान् न हो सकते। जब हम पाप करते हैं, तब मनमें भय, शंका आदि पैदा होते हैं। य भगवान् के अस्तित्व का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

जैन तीर्थंकर सृष्टि रचना के बारे में बेसिर पैर की बातें करते हैं, जिस सिद्ध होता है कि वे भगवान् नहीं। रत्न भागसार में एक जूं की लम्बाई ४८ मी और एक मक्खी की लम्बाई आठ मील लिखी है। भारत के बारे में लिखा है कि की लम्बाई चार लाख मील है और यह आठ लाख मील समुद्र से घिरा हुआ है यह भी लिखा है कि भारत में दो सूर्य और दो चन्द्रमा हैं। ये बातें इतनी अविश्व नीय हैं कि अपना खंडन स्वयं करती हैं। जैन पुस्तकों में तीर्थंकरों के चमत्कार लि हैं। भगवान् महावीर के पैरों पर चावल पकाये गये, फिर भी उनके पैर न जले जैन मत को मानने वाली एक वेश्या सुई की नोक पर नाचती रही, लेकिन उसे सु न चुभी। जैनियों के ग्रन्थों में ऐसी गलत बातें लिखीं हैं।

चारवाक मत, बौद्धमत और जैनमत की थ्योरियों से पता चलता है कि सांख्यदर्शन पर विचार-विमर्श के फल स्वरूप निर्धारित की गई। इस का मत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह हुआ कि सांख्य दर्शन की रचना जैनमत की स्थापना से पूर्व हुई। चारवाक मत और उसका साहित्य अब लुप्तप्राय है। बौद्धमत और जैनमत में नाम का अन्तर है। इन के तीर्थंकर और सिद्धान्त एक समान हैं। अन्तर केवल इतना है कि बौद्ध मत के अनुयायी मांस खाते हैं और बुद्ध की मूर्त्ति की पूजा करते हैं, जबकि जैन मांस नहीं खाते और नेमिनाथ व पार्श्वनाथ की मूर्त्तियों की पूजा करते हैं। मतलब यह है कि भारत में बौद्ध मत जैनमत के ही रूप में जीवित है। यदि वे दार्शनिक विषयों पर विचार में अपने दुराग्रह का अनौचित्य समझलें, तो वे वेदों के सार्वभौम धर्म के अनुयायी हो जायेंगे।

पढ़े-लिखे जैनी मानते हैं कि पहले वे एक ही मत को मानते थे। दुर्भिक्ष के समय प्राण बचाने के लिए कुछ जैनी मांस खाने लगे। समृद्ध लोगों ने इस पर आक्षेप किया। इस पर सभा बुलाई गई और मांसाहारी बहिष्कृत कर दिये गये। इस पर इस मत के मानने वाले जैन और बौद्ध दो भागों में बंट गये। इस प्रकार जैनियों और बौद्धों में आहार का अन्तर है, विश्वास का नहीं।

तेरहवें सम्मुल्लास का सार-संक्षेप

बाइबिल में लिखा है कि १. पृथ्वी की रचना बेडौल थी २. प्रभू की आत्मा जल पर तैरती थी ३. प्रभुने अपने ही रूप में पृथ्वी कीधूल से आदमको बनाया४.उस ने आदम की पसली से हौवा को बनाया ५. शैतान ने उन्हें धोखा दिया और ३. प्रभु ने इस बात को पसन्द किया कि हाबील ने भेड़ की बलि दी। इन बातों का उत्तर यह है कि १. प्रभु की रचना कभी बेडौल या अपूर्ण नहीं होती २. प्रभु की आत्मा—यह वाक्यांश निरर्थक है और उसका जल परतैरना प्रभु को सीमित बना देता है ३. जब आदम प्रभुसदृश था, तो प्रभु भी मनुष्य सदृश रहा होगा ४. यह भी गलत है 'क उसने आदम की पसली से हौवा को बनाया,क्योंकि आदम के ढांचे में पूरी पसलियां हैं ५, प्रभ ने आदम को ठगने वाले शैतान को क्यों पैदा किया और वह उसे संसार को ठगने की छूट क्यों दे रहा है ? ३. प्रभु ने हाबील की भेंट स्वीकृत की, इसका मतलब है कि वह मांसाहारी है। ७. नूह के जल प्रलय की कहानी सच्ची नहीं, क्योंकि १५० गज लम्बी और २५ गज चौड़ी नाव में हाथी, ऊंट, गैंडा, शेर सदृश सब पशुओं के सब जोड़े अपने भोजन के साथ नहीं समा सकते। बलि चढ़ाने की बात सम्भवतः वेदों से ली गई। ६ प्रभु को यह शोभा नहीं देता कि वह लोगों की सांझी भाषा की गड़बड़ाये, जिससे वे नष्ट हो जायें १० प्रभु ने खलड़ी बनाई ही क्यों, जो बाद में खतना करने की आवश्यकता पड़ी। कई ईसाई भी इस नियम का पालन नहीं करते, जिससे सिद्ध होता है कि यह नियम गलत हैं। ११ प्रभु का इब्रर-अबिर हाम से बातें करना, उसके तम्बू में भोजन ग्रहण करना और इस प्रकार के अन्य कार्य सिद्ध करते है कि ईसाइयों का प्रभु मनुष्य ही था। १२. अबिरहाम द्वारा अपने पुत्र की बलि देना मानव बलि का उदाहरण है। १३. बाइबल में मूर्तिपूजा का भी विधान है—उन प्रसंगों में जहां याकूब ने देवताओं को चुरा लिया १४. ईश्वर ने तीन पीढ़ियों को उनके पूर्वजों के पापों का दंड दिया, इससे उसकी न्याय भावना और ईश्वरत्व खंडित होते हैं। १५. मूसा द्वारा बलि का चढ़ाया जाना बताता है कि ईश्वर निर्दयी है। यह एक भयानक सिद्धान्त है कि बैलों की हत्या और भोजनार्थ बलि-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
बेदी पर उनका मांस भूनने से पापों का प्रायश्चित्त हो जाता है और वे क्षमा कर दिये जाते हैं। १६. डेविड द्वारा भगवान् के लिए घर का निर्माण और भगवान् का वहां विश्राम करना सिद्ध करता है कि ईसाई मनुष्य की पूजा करते हैं। १७. यह असम्भव है कि यसू मसीह का जन्म कुमारी से हो जाये। १८. भूतों को निकालना, मुर्दों को खड़ा करना आदि भी गप्पें हैं। १९. यसू मसीह के ग्यारह शिष्यों ने उन्हें छोड़ दिया और उनके शिष्यत्व से इनकार कर दिया, जबकि बारहवें शिष्य जुडास इस्करियत ने केवल तीस रुपये की खातिर उसे धोखा दिया। इससे सिद्ध होता है कि यसू मसीह की संगति और शिक्षाओं के बावजूद उनका आचरण न सुधरा। फिर यसू मसीह के देहान्त के २,००० वर्ष बाद ईसाइयों का चरित्र कैसे सुधरेगा। २०. योहन का इलहाम स्वप्न ही है. जिसमें उसने सात सींगों वाली भेड़ (यसूमसीह) द्वारा खोली गई पुस्तक में से निकलते हुए चार घोड़ों को देखा, जो विजय के लिए चारों दिशाओं में फैल गये। उन्होंने २४ बुजुर्गों और हिंस्रजन्तुओं को देखा क्योंकि यह सब काल्पनिक हैं, इसलिए इस पर अधिक विचार करने की आवश्यकता नहीं।

क्योंकि बाइबिल की शिक्षाओं में कोई पारम्पर्य नहीं, इस लिए थोड़ी-सी ही असम्भव और बेहूदा बातों की समीक्षा की गई है।

चौदहवें समुल्लास का सार-संक्षेप

"क्षमा करने वाले दयालु अल्लाह के नाम के साथ आरम्भ" इन शब्दों के साथ कुरान प्रारम्भ होता है। इससे पता चलता है कि इसका रचयिता भगवान् नहीं वह दयालु भी नहीं, क्योंकि वह भोजन के लिए प्राणियों की हत्या की आज्ञा देता है। कुरान का भगवान प्राणियों का मालिक भी नहीं, क्योंकि वह मुसलमानों को आदेश देता है कि काफिरों को मार डालो। कहा जाता है कि खुदा कयामत के दिन लोगों की किस्मत का फैसला करता है। यह अन्याय है, क्योंकि जिन्होंने सृष्टि के प्रारम्भ में पाप किये उन्हें अन्त तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी और जिन्होंने सृष्टि के अन्त में पाप किये, उनकी किस्मत का फैसला तुरन्त हो जायेगा।

कुरान इस बात का कोई कारण नहीं बताता कि संसार में सब लोग एक समान सुखी-दुःखी क्यों नहीं। कुरान का कहना है कि यह अल्लाह की मर्जी है। यदि ऐसा है, तो अल्लाह अन्यायी है, क्योंकि उसने अकारण कुछ को सुखी और कुछ को दुःखी बना दिया।

अल्लाह का कुरान की प्रशंसा करना उसके अहंकार को प्रकट करता है। वह काफिरों के दिलों पर मुहर लगा देता है, फिर भी कुरान पर ईमान न लाने वालों को दंड देता है। उसका पृथ्वी को बिस्तर और स्वर्ग को चादर बताना प्रकट करता है कि उसे तथ्यों का ज्ञान नहीं। स्वर्ग आकाश है और पृथ्वी एक ग्रह है।

कुरान में चुनौती दी गई है कि कुरान जैसी पुस्तक तैयार करके दिखाओ। अकबर के दरबारी फैजी ने बिना नुक्ते की कुरान तैयार की थी। कुरान में लिखा है कि काफिरों को हमेशा दोजख में रहना पड़ेगा। लेकिन ज्ञान बढ़ने के साथ लोग ऐसी अन्धविश्वास पूर्ण बातों को मानने से इनकार करने लगेंगे। कुरान में लिखा है कि ईमान लाने वालों को बहिश्त में भेजा जायेगा, जहां नदियों के पानी से सरसब्ज बागात होंगे—जहां हूरें मिलेंगी। मुसलमानों का यह बहिश्त भी गोसाइयों के गोलोक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
जैसा है। स्वाभाविक था कि रेतीले प्रदेश में रहने वाले कामुक अरब ऐसी बातों की ओर आकृष्ट हुए।

भगवान ने आदम को पैदा किया, जिसने सब वस्तुओं के नाम रखे। भगवान् ने सब फरिश्तों को आदेश दिया कि वे आदम की पूजा करें। लेकिन शैतान ने आदेश मानने से इनकार कर दिया। फलस्वरूप उसे बहिश्त से निकाल दिया गया। उसने कयामत तक की मोहलत मांगी, जो उसे मिल गई। उसने वचन दिया कि वह लोगों को गुमराह करेगा। आदम और हौवा शैतान के प्रथम शिकार हुए। शैतान के समक्ष लोग असहाय हैं, इसलिए यह अपनी शैतानियत जारी रखता है। इसके बावजूद भगवान् ने शैतान को खुला छोड़ रखा है—इसका मतलब तो यह हुआ कि वह ठग भगवान् के ही आदेश पर सब कुछ करता है।

कुरान में अतीत में नाजिल हुए इलहामों की चर्चा है। भगवान् ने मूसा को कानून की किताब दी। फिर कुरान की क्या आवश्यकता थी? यदि भगवान् को बाद में कुछ और ज्ञान हुआ तो यह सर्वज्ञ नहीं और भगवान् कहलाने के योग्य नहीं। कहा जाता है कि जिन्होंने छह दिन काम करके सातवें दिन विश्राम न किया, उन्हें बन्दर बना दिया गया। आजकल भी अनेक ऐसे लोग हैं, जो छह दिन काम करके सातवें दिन विश्राम नहीं करते, लेकिन उन्हें बन्दर नहीं बनाया जाता। इससे सिद्ध होता है कि यह कथन मिथ्या है।

कुरान में लिखा है कि किसी भी दिशा में मुंह करके नमाज अदा की जा सकती है, लेकिन आगे चलकर लिखा है कि नमाज मक्का की ओर मुंह करके अदा की जानी चाहिए। इससे सिद्ध होता है कि अल्लाह भी मनुष्य की तरह अपने विचार बदलता रहता है। कुरान मे लिखा है कि अल्लाह ने कहा कि हो जा और सृष्टि पैदा हो गई। प्रश्न यह है कि प्रारम्भ मे जब केवल अल्लाह था, तब उसने किस से कहा और किसने उसकी बात सुनी? इससे सिद्ध होता है कि अल्लाह के हुक्म पर अमल के लिए संसार का उपादान कारण पहले से विद्यमान था।

सब हाजी मक्का की मस्जिद में जाते हैं। वहां एक काला पत्थर है, जिसे हाजी चूमते हैं। हाजी मस्जिद की परिक्रमा करते हैं। क्या यह मूर्ति पूजा नहीं?

कुरान में मांस भक्षण का विधान है, लेकिन सूअर का मांस और जिस मांस पर अल्लाह का नाम न पुकारा गया हो, उसे खाने का निषेध है। ये बातें मूसा की किताब से हूबहू नकल की गई है। यह बात प्रशंसनीय है कि कुरान में तेज शराब पीने का निषेध है।

कुरान में लिखा है कि ओ पैगम्बर, वफादारों में जंग के लिए जोश भर। यह भी लिखा है कि अल्लाह ने कर्ज मांगा। कुरान की इस शिक्षा (जंग करने की शिक्षा) ने अन्य मतावलम्बी पड़ोसियों के लिए मुसलमानों को बहुत खतरनाक बना दिया है। यह सर्वाधिक असहिष्णु मत है। कुरान में लिखा है कि सच्चा मजहब इस्लाम ही है। बछुओं के लिए तो यह बात ठीक ही है। अल्लाह ने लूट और फूट को भी कानूनी ठहरा दिया।

कुरान में बताया गया है कि अल्लाह जंग के लिए बेहतरीन पेंतरेबाजी करता है। यह तो धोखेबाजी है भगवान् धोखेबाजी नहीं कर सकता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस्लाम में मुहम्मद, जब्रील, [illegible], फरिश्तों और अल्लाह पर ईमान लाना लाजिमी है। इस प्रकार ये लोग अल्लाह के साथी हैं। इससे कुरान का यह दावा खंडित हो जाता हैं कि अल्लाह को छोड़कर अन्य कोई खुदा नहीं।

कयामत के दिन जो ५०,००० वर्ष बाद आयेगा, फरिश्ते बिगुल बजायेंगे। तब मुर्दे कब्रों से उठकर खड़े होंगे। आकाश के टुकड़े हो जायेंगे। कुरान की ये सब बातें भगवान् के प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध हैं।

अल्लाह पैगम्बर और उसकी बीवियों और रखैलों में समझौता करवाता है। पैगम्बर ने अपने पुत्र जैद की पत्नी से विवाह करके अपने चरित्र को कलंकित किया।

जिस पुस्तक में ऐसी बातें लिखी हों, वह भगवान् की तो क्या, किसी विद्वान की रचना भी नहीं हो सकती। उससे सिद्ध हुआ कि कुरान भगवान् का बनाया हुआ नहीं।

प्रचार योग्य साहित्य

१. सत्यार्थ प्रकाश में क्या है ?	:	८० पैसे
२. गीता का योग परकभाष्य	:	२०]
३. ईश्वर : वैज्ञानिकों की दृष्टि में	:	१५]
४. सामवेद भाष्य	:	४०]
५. प्रकृति और सर्ग	:	६]
६. ऋग्वेद शतकम्	:	३]
७. यज्ञ मीमांसा	:	१०]
८. वेदाञ्जलि	:	२५]
९. सोमसरोवर	:	१५]
१०. उपनिषद् संग्रह	:	१०]

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—बाबूलाल जोशी बी. ए.

ब्रह्मोपनिषद्

यजुर्वेद के ३२ वें अध्याय में ८ प्रतीक मन्त्रों को मिलाकर २४ मन्त्र ब्रह्मोपनिषद् के नाम से विख्यात है, जिसके अध्ययन के पश्चात् विचारों को काव्य रूप प्रदान करने का यह लघु प्रयास है। संस्कृत मन्त्रों के हिन्दी अनुवाद को हृदयंगम करने के उपरान्त ही यह संभव हो सका है। विद्वत्जनों से मार्गदर्शन की अपेक्षा है। आशा है आध्यात्म प्रेमी जन इसे अपनाकर अनुग्रहीत करेंगे।

अद्वितीय अनादि प्रभु वह, सत्‌चित् आनन्द शुद्ध स्वरूप।
स्रष्टाधारक अन्तर्यामी, अग्नि वायु आदित्य अनूप।
गति प्रदाता पूर्ण जगत का, आध्यात्मिक आनन्द कर्ता।
शांति स्वरुप प्रजा का रक्षक, दुर्गुण सर्व दूर करता ॥१॥

सर्व नियन्ता परमपुरुष वह ब्रह्मपुरी में रमता है।
सभी दिशा में विद्यमान पर चर्मचक्षु नहिं लखता है।
ज्ञान चक्षु से हृदय गुफा में ज्ञात हो सके वह सच्चा।
क्षण से लेकर कल्प काल के, ज्ञान हेतु आदित्य रचा ॥२॥

विश्व चेतना स्रोत बिन्दु वह, महायशों का स्वामी है।
महाकीर्तिमय पूर्ण यशस्वी, सकल विश्व का धारक है।
उसकी प्रतिमा हो नहिं सकती, चित्र बना सकता है कौन।
उस असीम की महिमा गाओ, मन में ढूंढो धारो मौन ॥३॥

प्रलय अवस्था में सत, रज-तम बीज रूप धारण कर्ता।
सृष्टि रचकर सब लोकों को नियमित गति का वह दाता।
सकल विश्व का पालनकर्त्ता सबका धारक पालक है।
उस आनन्द रूप प्रभुजी को अपनी श्रद्धा भेंट करें ॥४॥

अनन्त शक्ति के स्वामी प्रभुजी स्थावर जगत नियामक हो।
दो पाये औ चौपाये के, निर्माता अरु पालक हो।
उससे भिन्न उपास्यदेव नहिं, जिसका कोई स्मरण करें।
महति शक्ति उस परमेश्वर को अपनी श्रद्धा भेंट करें ॥५॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिव्य ईश की परमशक्ति से, ऊंचे पर्वत खड़े हुए।
बड़े बड़े गंभीर समन्दर, नदी स्रोत हैं भरे हुए।
सभी दिशायें दिव्य भुजायें, उसी ईश का ध्यान करें।
दिव्य रूप परमानन्द प्रभु को, अपनी श्रद्धा भेंट करें ॥६॥

आत्मिक शक्ति प्रदाता ईश्वर, महावली है वह करतार।
ज्ञानी सब उपासना करते, करते हैं शासन स्वीकार।
जिसका शासन अमर बनाता, मोक्ष देय वह सुखी करें।
उस आनन्द रूप प्रभु को हम, अपनी श्रद्धा भेंट करें ॥७॥

शाश्वत ज्ञान प्रदाता ईश्वर, विविध क्रिया रचता त्राता।
द्यु लोकादिक रचकर उनकी, निर्धारित गति का दाता।
सृष्टिपूर्व था विद्यमान जो चन्द्र नदी नद प्रकट करें।
ऐसे मोक्ष प्रदाता प्रभु को, अपनी श्रद्धा भेंट करें ॥८॥

वह परमात्मा अद्वितीय है, जिसका तुल्य नहीं लखता।
सब लोकों में निज सत्ता से, ज्ञान और गति का दाता।
तीन ज्योति के दर्शन देता, मन विज्ञान आनन्द मय कोष।
सोलह कला रचित कर दी है, अग्नि वायु आदित्य निदोष ॥९॥

अखंड अविनाशी ब्रह्म वह, सर्व दिशाओं में है शा ।
सृष्टि पूर्व भी विद्यमान था; अब भी है वह अचल महान।
क्रिया शक्ति है विद्यमान, सर्वत्र व्यापता वही अनन्त।
अचल सदा ही वही रहेगा, महा प्रलय के भी उपरान्त ॥१०॥

विद्यमान था सबसे पहले, सारे लोक समाये आज।
सकल प्रजाओं का पालक है, स्वामी सब तेरा है राज।
मनुज हृदय में तीन ज्योतियां अग्नि, वायु आदित्य रची।
ऋग-यजु-साम वेद के द्वारा, षोड्ष कला प्रदर्शित की ॥११॥

महातेजमयी पुंज द्यु लोक, जिसने धारण किया हुआ।
पार्थिव लोकों की रचना की, दृढ़ीभूत सुख धाम दिया।
मोक्ष धाम धारण करता प्रभु, रजोगुणी अंतरिक्ष निर्में।
उस आनन्द रूप प्रभुजी को, अपनी श्रद्धा भेंट करें। ॥१२॥

प्रकाश युक्त औ विन प्रकाश के, लोक अनन्त रच कर धारे।
महति शक्ति रक्षण द्वारा, गतिमान बने हैं ये सारे।
सम्यक् ज्ञान विज्ञान सहारे, ज्ञानी अन्तर्बोध करें।
ऐसे दिव्य रूप परमेश्वर को, हम अपनी श्रद्धा भेंट करें ॥१३॥

विश्व व्यापिनी अद्भुत शक्ति, सारा विश्व सृजन करती।
विश्व गर्भ प्रकृति को शक्ति तेज से गति देती।
इसी शक्ति के कारण ही वह सबलोकों के प्राण धरें।
परम रूप परमेश्वर को हम अपनी श्रद्धा भेंट करें ॥१४॥

विश्व चेतना अनन्त ईक्षण आदि बलों की धारक है।
यज्ञ रूप संसारोत्पादक सम्यक् गति का दाता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अद्वितीय उत्तम गुण शक्ति महिमा अपरम्पार धर।
आलौकिक चेतन शक्ति को, अपनी श्रद्धा भेंट करें ॥१५॥

ज्ञान चक्षु से हृदय गुहा में, ज्ञानी ब्रह्म निहारत है।
सकल विश्व ही प्रभु के आश्रित ज्ञात वही हो जाता है।
संयत होता प्रलय समय में, परम ब्रह्म में जग सारा।
सृजन काल में पृथक रूप धर, प्रजा बीच व्यापन हारा ॥१६॥

वेद वाणी के ज्ञानी मानव, वेद ज्ञान उपदेशत है।
तेजस विज्ञान आनन्द पाद, प्रभु स्वरूप में रहते हैं।
ध्यान योग में रत मानव ही, केवल इन्हें समझ पाते।
जिसने प्रभु को जान लिया वह, साधक सदा अमर होते ॥१७॥

मोक्षधाम उपभोग करत हैं, ज्ञानी तपोनिष्ठ मानव।
प्रभु के प्रेम पाश बधन में, सर्वत्र विचरते रमते सब।
उत्पादक वह श्रेष्ठ पिता है, सर्व पदार्थ सुलभ कर्त्ता।
सर्व लोक का वही विधाता, कर्म फलों का है दाता ॥१८॥

पृथ्वी वायु जल तेज अकाशा, पंचतत्व का प्रभु निर्माता।
सबलोकों का वह निर्माता, दिशामात्र का वह अधिष्ठाता।
मनुज सृष्टि के आदि समय से, ज्ञान प्रभ से सब पाये।
मन मन्दिर में करें प्रतिष्ठित, शुद्ध मनों से हम ध्यायें ॥१९॥

ध्यान योग का साधक मानव, चेतन सत्ता को माने।
अनुभूति कर ज्ञानेन्द्रियों से, हृदयाकाश में फिर माने।
ऋतज्ञान आकाश तरंगित, आत्मा में वह ज्योति बने।
निज ज्योति को दिव्य ज्योति में लीन करे तद्रूप बनें ॥२०॥

ऋत ज्ञात तंतु ब्रह्माण्ड व्यापत, आश्चर्य जनक रक्षक स्वामी।
जीवात्मा का प्रेय सखा वह, घट घट का अन्तर्यामी।
मेधाबुद्धि प्राप्त करूं मैं, अर्चनीय प्रभु कृपा करें।
आत्म समर्पित होऊं प्रभु को, समाधि योग का ध्यान धरें ॥२१॥

सदसत् विवेचनी बुद्धि ही सार तत्व है जीवन का।
सतत साधना रत हो मानव, यत्न करें केवल इतना।
ज्योति रूप प्रिय प्राण सखा प्रभु, मेधा बुद्धि प्रदान करो।
आत्म समर्पण करता हूं, प्रभु मेरा कल्याण करो ॥२२॥

वरुण रूप परमात्मा प्रभुजी, मेधा बुद्धि प्रदान करो।
दिव्य प्रकाश रूप सखा प्रभु, ज्ञान विवेचन प्रज्ञा दो।
दिव्य ज्ञान गति केन्द्र प्रभु की, प्रगति द्योतक क्षमता है।
हे प्रभु प्राणाधार ईश, मेधा दो यही याचना है ॥२३॥

दिव्य कांति को प्राप्त करे "जोशी" यह जीवन ध्यान ज्ञान।
अनुपम शक्ति भंडार प्रभु, मुझमें हो आभा का आधान।
साधन सफलता तक पहुंचे, ज्योति तेज मुझमें प्रभु हो।
आत्मा समर्पित हूं मैं ईश्वर, कांति प्राप्त हित साधन हो ॥२४॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अमरपन की प्राप्ति

—श्री देवीप्रसाद मस्करा

सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय, मान-अपमान, शीत, उष्ण आदि परस्पर-विरोधी द्वन्द्वों में हर्ष और विषाद न होकर चित्त का सर्वथा निर्विकार रहना तितिक्षा या द्वन्द्व- सहिष्णुता है। इस द्वन्द्व-सहिष्णुता का फल अमृत या मोक्ष की प्राप्ति है।

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुख -दुःखदः।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ॥
यं हि न व्यथमन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ।
समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥

(गीता २,१४,१५)

हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! इन्द्रियों के बाह्यसृष्टि के साथ होने वाले स्पर्श शीत-उष्ण-सुख-दुःख देने वाले हैं और कभी नहीं भी देते, अतः वे अनित्य हैं। इस कारण हे भरत-कुल में उत्पन्न अर्जुन! तू उनको सहन कर। हे मनुष्यों में श्रेष्ठ ! सुख-दुख को समान मानने वाले जिस धीर पुरुष को ये पीड़ा नहीं देते, वह अमरपन के लिये समर्थ होता है।

अमृत क्या है? 'जिसका पान करके, मृत्यु न आए'। मृत्यु होती है शरीर की; आत्मा की नहीं। इस सत्य को जान कर ही व्यक्ति दुःखों से छूट जाता है। अमृत का पान कर इस देह में रहते हुए भी, मैं दुखों से दूर रहता हूं। क्या यह कम उपलब्धि है ?

अमरता के लिए सभी तरसते हैं, किन्तु वे भूल जाते हैं कि सचमुच में व्यक्ति अमर ही है। अज्ञान ही उसे मृत्यु का बोध कराता है। शरीर तो आत्मा का साधन है। किन्तु अज्ञान शरीर को ही अपना रूप समझने का भ्रम उत्पन्न कर आत्म-तत्त्व को अन्धकार में डाल देता है।

परमपिता परमात्मा के आनन्दमय जगत् में आज का मानव परम अशान्त और दुःखी है। उसको आनन्द की अनुभूति कैसे हो? पर आज का मानव दुःखी व अशान्त क्यों है? यह एक प्रश्न है। इस प्रश्न के उत्तर में यही कहा जा सकता है कि वह रोगी है। रोग का कारण क्या है? इसके हटाने का साधन क्या है? इस रोग को योग की भाषा में, हेय कहते हैं। वहां हेयहेतु, हान और हानोपाय भी बताए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। 'हेयं दुःखमनागतम्' — भविष्य में आने वाले दुःख हेय हैं, जो त्याज्य हैं। 'द्रष्टृदृश्य-योः संयोगो हेयहेतुः।' आत्मा और प्रकृति का रागात्मक संयोग ही इस क्लेश का कारण है। यह है रोग का निदान। वह रागात्मक संयोग होता है अज्ञान से, "तस्य हेतुरविद्या"। तो फिर "तद् अभावात् संयोगाभावो हानम्, तद् दृशेः कैवल्यम्" यानि उस अज्ञान के नाश से आत्मा और प्रकृति के साथ रागात्मक मेल का नाश हो जाना हान कहलाता है। उस हान का उपाय है "विवेकख्यातिरविप्लवा हानोपायः" निर्मल विवेकख्याति —ऋतम्भरा प्रज्ञाबुद्धि के द्वारा आत्मा और प्रकृति का पृथक दर्शन करना।

हो गया आनन्द दुनिया को रिझा कर क्या करूं?
दिल प्रकाशित हो तो दीपक-राग गाकर क्या करूं?
जल गया अज्ञान का वह जाल अग्नि ज्ञान से।
खुद बुझी जाती है उसको अब बुझा कर क्या करु?

\+ \+ \+

मैं अपने दिल का मालिक हूं, मेरा दिल एक बस्ती है।
कभी बरबाद करता हूं कभी आबाद करता हूं॥

वास्तव में अज्ञान रूपी अन्धकार के परदे के कारण ही मानव अपने लक्ष्य को भूल जाता है। जब यह पर्दा हट जाता है, तब मेधा-शक्ति का उदय होता। मेधा शक्ति को प्राप्त कर लेने पर मानव दैवी संपदा का अधिकारी सुगमता से बन जाता हैं। साथ ही साथ मन की चंचलता भी दूर हो जाती है। तब मनुष्य का मन गुलाम नहीं रहता अपितु अपने मन का स्वामी बन कर जगत् के उपकारहित अपना निज सर्वस्व निछावर कर देता है।

मानव में शक्ति चाहिए, उसके लिए नीतविशारद महानुभावों का कहना है—

"बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निबुद्धेस्तु कुतो बलम्।"

यह कथन सर्वदा सत्य ही है। हम देखते हैं जगत् का मस्तिष्क शासन कर रहा है, और भविष्य में भी ज्ञान का साम्राज्य रहेगा। बुद्धि की विलक्षणता पशु-पक्षियों में भी झलकती है। पशुओं में अश्व, बन्दर, हस्ती आदि, एवं पक्षियों में तोता, मैना आदि विशेषरूप से सुबुद्धि गिने जाते हैं।

ज्ञानप्राप्ति के चारे साधन हैं। [१] श्रद्धा [२] तत्परता,[३] इन्द्रिय, संयम, [४] योग-संसिद्धि। जिससे मनुष्य ज्ञान प्राप्त कर सकता है, उस पर श्रद्धा में बड़ा बल है। जो ईश्वर पर अटल श्रद्धा रखता है, वह ईश्वर के साथ अपना सम्बन्ध अतिशीघ्र जोड़ता है और शीघ्र ही तत्परता प्राप्त करता है। गुरु के वचनों पर, शास्त्र की आज्ञाओं पर श्रद्धा रखने वाला मनुष्य अपने मन को इधर या उधर न भटकाता हुआ, एक ही बिन्दु में केन्द्रित करके अनुष्ठान करता है।

इन्द्रिय-संयम करने वाला मनुष्य अपने इन्द्रियों को वश में रख कर उनको विषयों में न फंसता हुआ ब्रह्मचर्यादि सुनियमों का पालन करके शान्ति से अपने मार्ग का अवलम्बन करता है, इसी तरह योग से सम्यक् सिद्धि प्राप्त करता है, अर्थात् समत्वबुद्धिरूप योग से सम्यक् सिद्धि प्राप्त करके अपने अन्दर पूर्वोक्त ज्ञान प्राप्त करता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ।"

[गी० ४,३९]

ज्ञान प्राप्त होते ही शीघ्र शान्ति प्राप्त होती है। यह ज्ञान अत्यन्त पवित्र है। यह ज्ञान जिसको प्राप्त होता है, उसकी सद्‌गति होती है, एवं सुख, शान्ति और आनन्द तीनों उसे प्राप्त हो जाते हैं।

मानव को अपना उद्धार स्वयं ही करना है। इस सम्बन्ध में गीताकार ने महत्वपूर्ण बात कही है—

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥

(भ० गी० ६,५)

मानव स्वयं ही अपना उद्धार करे और अपने आपको अधोगति में न पहुंचाए। जीवात्मा अपना मित्र और शत्रु स्वयं ही है। जिस जीवात्मा ने शरीर मन और इन्द्रियों पर विजय प्राप्त किया है, वह अपना मित्र है और जिसने इन्हें जीता है वह स्वयं ही अपना शत्रु है।

भारी संख्या में मंगाएं

१. हिन्दुओं को चेतावनी	:	मूल्य ४० पैसे
२. क्या ईसा खुदा का बेटा था ?	:	मूल्य ४० पैसे
३. चुनौती : इस्लामी साम्राज्यवाद की	:	मूल्य ६० पैसे
४. Bible in the Balance	:	मूल्य ६० पैसे
५. A Challenge to the Christian Faith	:	मूल्य २० पैसे
६. ईसाई-मत खंडन	:	मूल्य २० पैसे
७. पादरियों को चुनौती	:	मूल्य २० पैसे
९. पोप की सेना का भारत पर हमला	:	मूल्य ६० पैसे
१०. भारत के मुसलमानों का क्या जाए ?	:	मूल्य ४० पैसे

एक हजार ट्रैक्ट मंगाने पर ५० प्रतिशत की छूट

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब डॉ० राजेन्द्रप्रसाद ने बिगड़ी बात बनाई

ज्योतिर्मठ के शंकराचार्य पर मुकद्दमे की कहानी

—पुरुषोत्तम जोशी

एक सफल वकील के लिए केवल कानूनी ज्ञान ही काफी नहीं होता है। उसे व्यावहारिक ज्ञान के साथ ही साथ मानव-स्वभाव का भी ज्ञान होना आवश्यक । भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद जब वकालत करते थे, तब एक ऐसी ना हुई कि यदि मानव-स्वभाव सम्बन्धी ज्ञान का वह प्रयोग नहीं करते तो वह की ख्याति के विपरीत होती। किन्तु डा० प्रसाद ने उस स्थिति को टाल कर पनी कीर्ति में चार चांद लगा लिए।

यह घटना सन् १९२१ की है। ज्योतिर्मठ के शंकराचार्य के एक भाषण ने री सरकार को इतना विचलित कर दिया कि उसने उन्हें गिरफ्तार कर के मुंगेर डाल दिया। हिन्दू जगत शंकराचार्य जी में अगाध श्रद्धा रखता आया है। बिना कदमा चलाए उन्हें अधिक दिनों तक जेल में बन्द नहीं रखा जा सकता था, क्योंकि, ससे अशान्ति फैलने का भय था। तत्कालीन सरकार खुली अदालत में मुकदमा ाने का साहस भी नहीं कर सकी। अतएव जेल में ही उन के मामले की सुनवाई निश्चय किया गया। न्यायाधीश भी किसी अंग्रेज को नियुक्त किया गया। कराचार्य जी की प्रतिष्ठा की उसे जानकारी थी, किन्तु वह उन्हें जगतगुरु तो नता ही नहीं था अतएव सरकार निश्चिन्त थी। मुकदमे की तारीख भी निश्चित गई।

डा० राजेन्द्रप्रसाद जी के हृदय में भी शंकराचार्य जी के प्रति अगाध श्रद्धा थी। अवसर पर उन्होंने भी वहां जाने का निश्चय किया। वह मुंगेर पहुंचे और धिकारियों से जेल-कोर्ट में जाने की इजाजत प्राप्त की। उस दिन कोर्ट ठीक दस बैठ गया। गोरे न्यायाधीश ने आते ही मुलजिम को हाजिर करने की आज्ञा दी। र ने बाहर जाकर आवाज लगाई, किन्तु वह वहां हाजिर नहीं हुए। जांच करने ज्ञात हुआ कि शंकराचार्य अपनी कोठरी मे आसन लगाए ध्यानमग्न है। उधर देर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हो रही थी और न्यायाधीश का पारा चढ़ रहा था। ... कोठरी के
पर ही प्रतीक्षा कर रहा था। न्यायाधीश को यह विलम्ब असह्य हो रहा था।
ने दूसरे जेलर को भेजा, जिस ने पहले जेलर से जा कर कहा कि मुलजिम को
जल्दी चलो, मजिस्ट्रेट क्रोध में है। जब उसे बताया गया कि शंकराचार्य जी
पूजा पर ध्यानमग्न बैठे हुए हैं तब वह ठिठक कर वहीं रुक गया। उनकी पूजा
बाधा डालने का साहस किस में हो सकता था? कोई भी हिन्दू ऐसा नहीं करता

इस प्रकार आधे घंटे से भी अधिक समय गुजर गया, किन्तु शंकराचार्य जी
नहीं पहुंचे। न्यायाधीश की त्योरियां चढ़ गईं और क्रोध में लाल हो वह बार
मेज पर हाथ पटकने लगा। उस की इस स्थिति को देख कर वहां उपस्थित
व्यक्ति भयभीत-से नजर आ रहे थे। जिस महापुरुष पर समस्त हिन्दू-समाज
श्रद्धा रखता हो, उस का यदि इस गोरे ने अपमान कर दिया तो क्या हालत होगी

वहां बैठे राजेन्द्र बाबू के मन में भी ऐसे ही विचार उठ रहे थे और वह
चिन्तित नजर आ रहे थे। राजेन्द्र बाबू के सामने एक बड़ा धर्म-संकट उपस्थित
गया। वह बचाव का उपाय सोचने लगे।

मजिस्ट्रेट ने वहां के सुपरिन्टेंडेंट से झल्ला कर कहा—"आज मुकदमा चले
यह तुम जानते थे न? फिर मुलजिम को उपस्थित क्यों नहीं किया गया? क्या तुम
विरुद्ध रिपोर्ट लिख कर यहां से चला जाऊं?"

मजिस्ट्रेट के उन शब्दों को सुन कर वह घबरा गया और बोला—"मैं स्वयं
कर देखता हूं श्रीमान्।"

अब स्वयं सुपरिन्टेंडेंट ही उन्हें बुलाने के लिए गया। उनकी कोठरी के
पहुंच कर देखा तो दोनों जेलर वहां प्रतीक्षा में खड़े हुए थे। उस ने क्रोध में
क्या बात है, तुम लोग यहीं कैसे खड़े रह गए?"

पहले जेलर ने उत्तर दिया—"हुजूर वह ध्यानावस्थित हैं, ऐसी स्थिति में
कैसे उठाया जाए? वह ईश्वर के भक्त हैं। उन के साथ जबर्दस्ती भी तो नहीं की
सकती।

उस की बात पर विश्वास न कर उस ने स्वयं झांक कर देखा, उस की
समझ में नहीं आ रहा था. कि वह क्या करे? उदास चेहरे के साथ कुछ सोचता हुआ
फिर मजिस्ट्रेट की ओर गया। उसे शंकराचार्य की इतनी चिन्ता नहीं थी
कि अपनी नौकरी की। शंकराचार्य जी को वहां उपस्थित करने का उत्तरदा
मुख्यतः उसी पर था। उसे तभी एक उपाय सूझा। जाते ही उस ने सफाई देनी
की—'यदि ऐसे कैदी मिल जाएं तो बड़ी कठिनाई हो जाती है। उन की पूजा
एक समस्या ही होती है। वह उसके पूरे होने तक अपने स्थान से उठते ही
हैं। हम असहाय हो जाते हैं। अब श्रीमान् के लंच का समय हो गया है। अतः
तो लंच के बाद सुनवाई हो या फिर तारीख बढ़ा दी जाए। आप के इस का
लिए माफी चाहता हूं। फिर ऐसा कभी नहीं होगा।"

उस के विनम्र शब्द सुन कर मजिस्ट्रेट। कुछ ठंडा हुआ और बोला—'ठी
लंच ले कर मैं तीन बजे फिर आता हूं सुनवाई आज ही होगी।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्रोधित मुद्रा में उस के शब्दों को सुन कर राजेन्द्र बाबू सब से अधिक चिन्तित दिखाई दे रहे थे। कहीं वह शंकराचार्य जी का अपमान न करे। वह सोच रहे थे कि उनके देखते हुए ऐसा हुआ तो वह भी उस पाप का भागी बनेंगे।

ठीक तीन बजे मजिस्ट्रेट फिर वहां आ खड़ा हुआ। अधिकारियों की दौड़धूप आरम्भ हो गयी। सुबह की घटना के कारण सभी के चेहरे अपराधी की तरह लग रहे थे। कुर्सी पर बैठते ही हुक्म हुआ —मुलजिम को हाजिर करो।"

मजिस्ट्रेट को सलाम ठोंक कर जेलर शंकराचार्य जी की ओर चला। उन की कोठरी कुछ फासले पर थी। जाने-आने में कुछ समय लगना स्वाभाविक ही था। जेलर आधे घन्टे बाद उन्हें ले कर वहां पहुंचा। देरी के कारण मजिस्ट्रेट की मुद्रा और बदल गई थी। जगतगुरु के वहां जाने पर उस का क्रोध किस रूप में फूटेगा, कोई नहीं जानता था।

उन सब बातों को देख कर राजेन्द्र बाबू सर्वाधिक परेशान थे। लेकिन कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। इतने में शंकराचार्य जी कोर्ट के दरवाजे तक आ गए। राजेन्द्र बाबू का ध्यान टूटा। वह एकदम उठ खड़े हुए। क्षण भर तक रुक कर वह आगे बढ़े और उनके चरणों में लेट गए। उन्होंने यह सब इस नाटकीयता के साथ किया कि उपस्थित लोगों पर इसका भारी प्रभाव पड़ा। मजिस्ट्रेट भी इस से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। सारा वातावरण ही बदल गया। लोगों के मन में श्रद्धा और आदर-भाव हिलोरें लेने लगा। उस मजिस्ट्रेट का क्रोध भी उस वातावरण में डूब गया।

उस समय राजेन्द्र बाबू का समाज में काफी सम्मान था। वह वकालत में बहुत प्रसिद्ध पा चुके थे और देश में मान्य नेता भी थे। साथ ही देश के लिए वकालत का उन्होंने जो त्याग किया था; उसके कारण उनका यह सम्मान और भी बढ़ गया था। ऐसा व्यक्ति जिसे प्रणाम करे, उस व्यक्ति का कितना सम्मान होना चाहिए! सभी उपस्थित लोगों ने उन्हें उसी मुद्रा में प्रणाम किया। इतना ही नहीं, बल्कि उस गोरे मजिस्ट्रेट ने भी कुर्सी से खड़े हो कर उनका अभिवादन किया।

आगे भी मजिस्ट्रेट का सारा व्यवहार बदल चुका था। मुकदमे की सुनवाई के समय उस ने बड़ी सभ्यता का व्यवहार किया। राजेन्द्र बाबू की इस दूरदर्शिता के कारण एक दुर्घटना टल गई थी।

चारो वेदों का हिन्दी भाष्य
३१ जनवरी तक २११) में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू समाज पुरोहितों के कारण ही जीवित है

—भूदेव शास्त्री, सिद्धान्त शिरोमणि, एम.

अपने प्रचार भ्रमण में मुझे नित नये आर्यसमाजों के सन्दर्शन का सुअ मिलता है। विभिन्न समाजों में मैं प्रचार तो करता ही हूं, साथ ही समाज आन्तारिक दशा को भी सावधानी से देखता हूं और अपनी दृष्टि के आधार आर्यसमाज के भविष्य का भी आजकलन करता हूं। मुझे प्राय: सर्वत्र आर्यसमाजों यह स्थिति दिखाई दी है :

१. आर्यसमाजों का कार्य साप्ताहिक अधिवेशनों तथा वार्षिकोत्सवों सीमित हो गया है।

२. साप्ताहिक अधिवेशनों में प्राय: श्वेतकेशी व्यक्ति ही दिखाई देते युवकों तथा युवतियों की संख्या बहुत कम होती है।

३. उन श्वेतकेशी व्यक्तियों के भी पुत्र, पुत्रियां तथा पत्नियां आर्यसमाज नहीं आते हैं।

४. आर्यसमाज के सदस्यों के परिवार आर्यसमाज के प्रभाव से अ से हैं।

५. आर्यसमाज के सदस्य आर्यसमाज के सिद्धान्तों से अनभिज्ञ हैं।

६. सदस्यों को संध्या, हवन, प्रार्थना, स्वास्तिवाचन, शान्तिकरण के न केवल याद नहीं हैं अपितु वे पुस्तक लेकर भी उन्हें शुद्धता पूर्वक नहीं बोल सक

७. परिवारों में संस्कार प्राय: नहीं होते हैं।

८. सदस्य समाज को अपनी आय का उचित प्रतिशत नहीं देते, फलत: उ आर्थिक दशा शोचनीय है।

९. आर्यसमाज के सदस्यों तथा उनके परिवारों के साथ सम्पर्क करके सिद्धान्त-निष्ठा उत्पन्न करने की कोई व्यवस्था नहीं है।

१०. अनेक आर्यसमाजों में भवनों की स्वच्छता तथा आतिथ्य की व्यवस्था नहीं है। कुछ की तो मरम्मत वर्षों से नहीं हुई है।

११. आर्यसमाज से सम्बद्ध विद्यालय तो हैं, पर उनमें धार्मिक-नैतिक न होने से वे आर्यसमाज के लिए व्यर्थ हैं।

१२. अधिवेशनों तथा उत्सवों में आरती होना आदि त्रुटिपूर्ण विधि होते हैं और वेदपाठ ऐसे व्यक्ति भी करते हैं, जिनका वैदिक साहित्य से दूर का परिचय नहीं होता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
१३. आर्यसमाज के सदस्य सामाजिक रूप से परस्पर असफल से रहते हैं, यद्यपि उनमें बहुत से अपनी विरादरी संस्थाओं में बहुत सक्रिय होते हैं।

१४. नैतिक दृष्टि से अब आर्यसमाज के सदस्य समान्यजन से कुछ भी ऊंचे नहीं रहे हैं। कहीं-कहीं तो चरित्रहीन कब्जा जमाये बैठें हैं।

१५. अनेक स्तरों पर स्वार्थ सिद्धि के लिए आर्यत्व विरोधियों को भी आर्यसमाज में घुसा लिया गया है।

आर्यसमाज का प्रत्येक हितचिन्तक स्वीकार करेगा कि ये कामियां आर्यसमाज को तेजोहीन बना रही हैं और उसका भविष्य अन्धकारमय बनता जा रहा है। प्रश्न यह है कि इस परिस्थिति का उपाय क्या है। मेरे विचार से इस परिस्थिति का एक दृढ़ उपाय है, प्रत्येक समाज में पुरोहित की नियुक्ति।

योग्य पुरोहित अपने आर्यसमाज में सुनियोजित ढंग से निम्नलिखित कार्य करता रह सकता है।

१. स्वच्छता एवं आतिथ्य की सुव्यवस्था।

२. प्रतिदिन संध्या, अग्निहोत्र, प्रवचन एवं स्वाध्याय का आयोजन।

३. साप्ताहिक अधिवेशनों में पौरोहित्य तथा वेद प्रवचन [कथा] पाठ।

४. साप्ताहिक अधिवेशनों में न आने वाले सदस्यों के घरों पर जाकर उनको तथा उनके पारिवारिकजनों को उत्प्रेरणा प्रदान।

५. आर्यसमाज के सदस्यों के पुत्रों-पुत्रियों का अभिलेख रखना, समय पर संस्कार कराने की प्रेरणा देना तथा पौरोहित्य करना।

६. समाज मन्दिर। परिवारों में सिद्धान्त ज्ञान। मन्त्र पाठ की कथाएं। गोष्ठियां लगाना।

७. सदस्यों को स्वयं समाज मन्दिर में आकर समय पर एक प्रतिशत चन्दा देने की प्रेरणा देना।

८. आर्यसमाज के सदस्यों में सामाजिकता के भाव जगाना तथा समय पर एक दूसरे की सहायता व्यवस्था करना।

९. आर्यसमाज मन्दिर को केन्द्र बनाकर चलने वाली शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का पथ प्रदर्शन करना।

१०. बाल-किशोर-युवक-महिला कार्यक्रमों का आयोजन करना।

११. सदस्य संख्या बढ़ाना तथा सदस्यतेच्छुक व्यक्तियों के चरित्र का इतिवृत्त अधिकारियों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

आर्यसमाज के पुरोहित द्वारा करणीय कार्यों की सूची देखकर उन व्यक्तियों को निश्चय ही आश्चर्य होगा, जो यह समझते हैं कि पुरोहित का कार्य केवल यज्ञ एवं संस्कार कराना तथा प्रवचन करना होता है। जो लोग धर्म को मजहब का समानार्थी तथा आर्यसमाज को एक मजहबी संगठन समझते हैं, उन्हें पुरोहित द्वारा उपयुक्त कार्यों का सम्पादन निश्चय ही अटपटा लग सकता है, पर इसमें अटपटा कुछ भी नहीं है। धर्म की परिधि इतनी विशाल है कि उसमें व्यक्ति की शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक सभी प्रकार की गतिविधियां समा जाती हैं। आर्यसमाज एक धार्मिक संगठन है, मजहबी संगठन नहीं, अतः उसे मुख्य रूप से अपने सदस्यों तथा सामान्य रूप से सम्पूर्ण समाज के शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक अभ्युत्थान के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। साथ ही उसे ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि आर्य-समाज का संगठन दिन दूना रात चौगुना फूलता-फलता रहे। यह उद्देश्य तभी पूर्ण हो सकता है, जब आर्यसमाज का पुरोहित कर्म के व्यापक स्वरूप को दृष्टि में रखते हुए अपने कार्यक्रम का निर्धारण एवं संचालन करे।

यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक समाज वित्तीय दृष्टि से पुरोहित रखने की स्थिति में नहीं होता। तब प्रत्येक समाज पुरोहित कैसे रख सकता है? यह कठिनाई सुनने में सही लगती है पर वस्तुतः सारहीन है। बहुत से आर्यसमाज इतने समृद्ध हैं कि यदि वे चाहें तो एक ही नहीं चार पुरोहित रख सकते हैं। उनके विषय में वित्तीय कठिनाई की बात लागू ही नहीं होती। शेष समाजों की वित्तीय कठिनाई के मुख्य-तया निम्नलिखित तीन कारण हैं: [१] सदस्य अपनी आय एक प्रतिशत मासिक चन्दे के रूप में नहीं देते। [२] नियमित पारिवारिक सम्पर्क के अभाव में सदस्यों की संख्या घटती चली जा रही है। [३] आर्यसमाज ने अपने क्रिया कलाप अब साप्ताहिक अधिवेशन, वेदप्रचार सप्ताह, वार्षिकोत्सव तक ही सीमित कर दिये है। अतः विभिन्न दिशाओं से आर्यसमाज की ओर आने वाली वित्तीय सहायता रुक गई है। यदि प्रत्येक आर्यसमाज प्रथम कारण को स्वयं दूर करके अपने यहां योग्य पुरोहित को नियुक्त करले और उसे स्वतन्त्रतापूर्वक काम करने दे, तो वह थोड़े ही दिनों में अन्य दो कारणों को दूर करके आर्यसमाज को एक वित्त सम्पन्न तेजस्वी समाज के रूप में प्रतिष्ठित कर देगा।

पुरोहित रखकर उससे पूरा-पूरा लाभ उठाने के मार्ग में एक बड़ी बाधा है पदाधिकारियों की पुरोहित के प्रति वृत्ति। आर्यसमाज के पदाधिकारी प्रायः पुरोहित को स्वनियुक्त नौकर समझकर उतना सम्मान नहीं देते, जितना उसे मिलना चाहिए। फलतः वह समुचित उत्साह और अपनी सूझ-बूझ से काम नहीं कर पाता। आर्य समाज के पदाधिकारियों को पुरोहित के साथ अत्यन्त सम्मानपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। प्रथम मिलन पर वे स्वयं अभिवादन करें, वार्तालाप इस प्रकार करें, जैसे वे किसी अभ्यागत विद्वान् से करते हैं, आर्यसमाज की कार्ययोजना बनाते समय वे उसके परामर्श से कार्य करें, परिवार में पहुंचने पर वे उसका मान्य अतिथि के समान स्वागत करें और अपने पारिवारिक जनों से आदर कराएं, यदि किसी कार्य में कभी कोई त्रुटि दिखाई दे, तो एकान्त में शान्ति से चर्चा करें, और यदि उससे कोई काम कराना हो, तो आदेश न देकर अनुरोध करें। एक बात अधिकारियों को सदैव याद रखनी चाहिए कि पुरोहित आर्यसमाज से अन्नग्रहण करता हुआ भी उसका पथप्रदर्शक, संरक्षक एवं जीवनदाता है। यदि यह बात उनके ध्यान में रहेगी, तो आदर उनके व्यवहार से सदैव प्रसूत होता रहेगा और पुरोहित की पूरी शक्ति आर्यसमाज को तेजस्वी बनाने में लगी रहेगी।

मेरा यह विश्वास है कि आज हिन्दू समाज अच्छे या बुरे जिस रूप में भी जीवित है, उसका एक मात्र कारण उसका पुरोहित वर्ग है। अपनी समस्त अयोग्य-ताओं के बावजूद वह उन धार्मिक, सांस्कृतिक पराम्पराओं को जीवित रखे हुए है, जिनसे हिन्दूसमाज अन्य समाजों से भिन्न रूप, से अस्तित्ववान् है। यदि आर्यसमाज अपना चिर जीवन और सातत्य चाहता है, तो उसे एक निश्चित योजना के साथ अपने मन्दिरों में पुरोहित प्रणाली आरम्भ करनी चाहिए। पुरोहित प्रणाली से मेरा अभिप्राय सच्ची पुरोहित प्रणाली से है, कल्पित समाजों में आज प्रचलित नौकर प्रणाली से नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद मन्दिर व वेद प्रचार हेतु दान देने वालों की सूची

१. श्रीमती सत्यवती आहलूवालिया	दिल्ली	१७०००-००
२. श्रीमती विक्रमजीत आहलूवालिया	नई दिल्ली	१००१-००
३. श्रीमती शान्ती कुमारी अग्रवाल	बम्बई	५५१-००
४. श्री दुधेश्वर नाथ पाण्डेय	पूर्णिया	३५१-००
५. श्रीमती विद्यावती सब्बरवाल	नासिक	२०२-००
६. श्री जितेन्द्र सिंह	शाहदरा	१११-००
७. श्रीमती प्रेम अरोड़ा	कानपुर	५०१-००
८. श्री एस. पी. अग्रवाल	बम्बई	५०१-००
९. श्री दामोदर काशीनाथ सेठवाड़ी	जलगांव	१५१-००
१०. श्रीमती कौशल्या चड्ढ़ा	नई दिल्ली	१५१-००
११. श्री मायापति त्रिपाठी	लखनऊ	१५१-००
१२. श्री डा० आनन्द कुमार	पौड़ी गढ़वाल	३०१-००
१३. श्री योगेश्वरजी	राउरकेला	३०१-००
१४. श्री रघुवीर टैक्सटाइल्स	कोल्हापुर	३०१-००
१५. ,, मे० बालगोविन्द भगवती प्रसाद	कानपुर	२५१-००
१६. ,, डा० सुखदेव जी,	कानपुर	२५०-००
१७. ,, त्र्यंम्बकनाथ मिश्र	कानपुर	१५१-००
१८. ,, विकासकुमार,	कानपुर	१११-००
१९. ,, ओरियेंटल रबर इन्डस्ट्रीज लि०	बम्बई-७८	२००-००
२०. ,, सानन्द सत्यदेव	नेटाल	२०१-००
२१. ,, एस. पी. सुशीलकुमार	अमृतसर	१०१-००
२२. ,, शम्भु प्रसाद गुप्ता	बम्बई	१०१-००
२३. ,, मोहनलाल	बिलाड़ा	१०१-००
२४. ,, चन्द्रमल होगा	धनबाद	१०१-००
२५. ,, सेठ शंकर लाल रामलाल	बम्बई	१०१-००
२६. ,, नानजी भाई कानजी भाई	सांवरकांठा	४८-००
२७. ,, सूबेदार सुभाषशर्मा	99A.P.O.	४५-००
२८. ,, भीमसिंह	बिजनोर	४२-००
२९. ,, धनीराम	आदर्शनगर	४१-००
३०. ,, छोटेभाई फूलाभाई पटेल	वलसाड़	३५-००
३१. ,, किशनलाल भेरूजी	बम्बई	३१-२५
३२. ,, जे. के. खन्ना	दिल्ली	३०-००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३३. ,, एल. ए. गायकवाड़	बम्बई	१६-२५
३४. ,, मुंशीलाल रमेशचन्द बहल	बुलन्दशहर	७-००
३५. ,, घूमसिंह	अलीगढ़	४-७५
३६. ,, नारायण ओंकार गवली सरपंच	जलगांव	३-००
३७. ,, एल. आर. निषाद	रायगढ़	१-२५
३८. ,, डा० दयाशंकर वधवार,	कानपुर	७.००

१०१-रु० दान देने वालों की सूची

(१) डा० वीरेन्द्र कपिल, लाजपतनगर, (२) श्री एम० पी० मल्होत्रा, कानपुर (३) मंत्री आर्यसमाज, कानपुर (४) सूरी संस एंड कम्पनी द्वारा श्री रवि सूरी, कानपुर (५) श्री आर० गोपाल, एडवोकेट; कानपुर (६) फर्म गोपाल दास सरन-दयाल, कानपुर (७) मे० बख्शी ब्रदर्स, कानपुर।

१००-रु० दान देने वालों की सूची

(१) श्री राधेलाल अग्रवाल, बिजनौर (२) श्री बनवारी लाल जी, नई दिल्ली (३) श्री नन्दलाल कोटा, (रज०) (४) श्री सत्यपाल वासुदेव, लुधियाना (५) श्री बी० एल० त्रिवेदी, दुर्ग (६) श्री रामकिशोर सेठ, शाहजहांपुर।

(७) श्रीमती सरला चौधरी, कानपुर, (८) श्री हरगोविन्द बोहरा, दिल्ली (९) एच० एल० कुमार, मुरादाबाद।

५१-रु० दान देने वालों की सूची

(१) श्री रविभूषण मित्तल, कृष्णानगर (२) श्री पूरनमल राजेन्द्र प्रसाद, बम्बई (३) श्री अमृतपाल सरपाल नई दिल्ली (४) श्री वेदप्रकाश, वैहल नई दिल्ली (५) श्री गोविन्दराम गनेशानी, बम्बई (६) श्री रामलाल प्रेमप्रकाश, एटा (७) श्री खुशाल-दास, जोधपुर (८) श्री प्रेम ग्रोवर, बम्बई (९) श्री एस० पी० गोयल, नई दिल्ली (१०) श्री हरिनन्दन सिंह बिहार (११) श्री वी० पी० भल्ला कुल्लू (१२) श्री राजेन्द्र प्रसाद, यादव (१३) श्री द्वारिका प्रसाद शारदा आन्ध्र प्रदेश (१४) श्री मधुकर घोल रीवा (१५) श्री सीताराम नाथमल विड़ला मेड़तासिटी। (१६) श्री देवीदयाल जी, कानपुर (१७) श्री के० एन० त्रिपाठी, कानपुर (१८) श्री सुभाष किराना क० कानपुर (१९) श्री मदनपुरी, दिल्ली।

५०-रु० दान देने वालों की सूची

(१) श्रीमती राजमाता साहिबा, भदावर (१) श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता दिल्ली (३) श्री डा० रामकुमार, गुप्ता दिल्ली-३१ (४) श्री पी० के० केजरीवाल (बिहार) (५) श्री मंगलसिंह, होशयारपुर (६) श्री कमल रानी, बम्बई-६३।

३१-रु० दान देने वालों की सूची

१, M/s Continental Constsuefion-new Delhi (२) श्री दिनेश अखापुरिया धौलपुर (३) श्री गोविन्द भीमजी पटेली, बम्बई (४) श्री रामचन्द, कालड़ा, ग्वालियर (५) M/s कमल क्लाथ स्टोर, हैदराबाद (३) श्री के० वी० देशमुख, अहमदाबाद (७) श्री नन्द किशोर महेश्वरी, लखीमपुर (८) श्री हरिप्रसाद गुप्त, मधुबनी (९) श्री एस० वी० भास्कर, इटारसी (१०) श्री प्रमोद कुमार, गुप्ता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पलियां, कला (११) श्री ओम प्रकाश सिंह सन्धु पलियां कलां (१२) श्री टेक नारायण सिंह, भरतपुर (१३) श्री राधा कृष्ण राठी नागौर,। (१४) श्री जी० बी० बंसल, दिल्ली (१५) जगदीश प्रसाद, देवेन्द्र कुमार, बिजनौर (१६) श्री छाबड़ा स्टोर दिल्ली (१७) श्री लच्छीराम रामेश्वरदास शाहजहांपुर (१८) M/s गीता सामिल, नई दिल्ली (१९) श्री विजय इंडस्ट्रीज लुधियाना (२०) श्री लीलाधर रमेशचन्द्र गुप्ता, बुलन्दशहर (२१) श्री रामचन्द्र, गुप्ता बुलन्दशहर (२२) श्री दसाची यादव, बम्बई (२३) श्री ज्योति प्रसाद, गोयल-नई दिल्ली (२४) श्री नारायणदास कपूर, नई दिल्ली (२५) श्री भुरदिया अजन्सी, तमिलनाडू (२६) श्री R. P. त्यागी गाजियाबाद (२७) श्री चमनलाल C/o चमनलाल फरमचन्द मेजनि (२८) श्री प्रेमसागर जिन्दल, -दिल्ली-६ (२९) श्री ऋषिकुमार अरोड़ा, उदयपुर (राज०) (३०) श्री सोहन पाल शर्मा, पहासू (३१) श्री महेन्द्र कुमार, गुप्ता-कश्मीरी गेट दिल्ली-६ (३२) श्री महन्त रामकिशोर दास जी अकोला (३३) श्री उमाशंकर इंजीनियरिंग वर्क्स आगरा (३४) श्री रामचन्द्र महेन्द्र सीतापुर (३५) श्रीमती शकुन्तला, उन्नाव (३६) श्री जे० नारायण राव,—बंगलौर।
(३७) श्री कप्तान शेरसिंह, रोहतक (३८) श्री मुरली मनोहर, अजमेर (३९) M/s अग्रवाल गुडाखु फैक्टरी, बिलासपुर (४०) श्री शिवनाथ सिंह, (बिजनौर) (४१) श्री रामस्वरूप गुप्ता, बम्बई-२ (४२) श्री शिवराज सरन, बदायूं (४३) श्री नेत्रपाल सिंह, अलीगढ़ (४४) श्री ओमप्रकाश, N. K. बम्बई-६ (४५) श्री आर्य भूषण पिप्पल, फरीदकोट (४६) श्री लक्ष्मण दास, दिल्ली-३३ (४७) श्री शम्भुसिंह, गाजियाबाद (४८) श्री एस० एल० दुआ, दिल्ली (४९) श्री वासुदेव ललल् भाई डाल्टनगंज (५०) श्री जी० के० चावला, बम्बई-३ ५१) श्री दुर्गाप्रसाद वर्मा, कानपुर

(५२) श्रीमती बहिन उषा मल्होत्रा, कानपुर (५३) श्रीमती डा० सत्या गुप्ता, कानपुर (५४) श्री जोगेश्वर दयाल श्रीवास्तव होशगाबाद, (म० प्र०)

२५-रु० दान देने वालों की सूची

(१) श्री प्रेम चन्द, हनुमानगढ़ (२) श्री जनकप्रताप सोजन, बम्बई-२८ (३) श्री दयाल आर० पटेल, बम्बई (४) श्री सुखानन्द ब्राह्मण, सरदार शहर (५) श्री चमनलाल न्यूज पेपर एजेन्ट, लक्सर (६) श्री डा० डी पी० बडोजा, कोटद्वार (७) श्री हरिश्चन्द वर्मा, मलीपुर (८) श्री लाखन सिंह मैनपुरी।
(९) श्री सुन्दर लाल दोनवाल (महा०) (१०) जे० एन० सक्सेना, दिल्ली (११) मिसेज आहूजा, दिल्ली (१२) श्री भोलानाथ, नई दिल्ली (१३) श्री गिरीशचन्द्र, जोशी देवरिया (१४) श्री कन्हैयालाल शर्मा अहमदाबाद (१५) श्री देवीप्रसाद शुक्ल, चैम्बूर कम्प बम्बई (१६) श्री विश्वनाथ सरावगी, बंगलोर (१७) श्री समीर कुमार बदायूं (१८) श्री देवी प्रसाद शुक्ल-बम्बई-७४ (१९) श्री आर० एन० त्रिपाठी, बम्बई ८० (२०) श्री गोपी लाल खावरा बम्बई (२१) श्री अवन्ती लाल, मुजफ्फरपुर (२२) श्री नारायण रेड्डी, एडवोकेट महबूब नगर (२३) श्री पी० सी० गुह्य-बस्ती (२४) नत्थनसिंह मुरादाबाद। (२५) श्री चरणसिंह मिर्जापुर (२६) श्री ए० आर० शर्मा बम्बई-५७ (२७) श्री डा० जयनारायण मिश्र, कानपुर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२१ रु० देने वालों की सूची

(१) श्री जीवनदास, शिवदितामल हाथरस (२) श्री भरतलाल, मुंगेर (३) श्री शिवभगवान गोयनका, कलकत्ता (४) श्री बी० पी० एस० बमपाल, तिलवाड़ा (५) श्री ब्रह्मदेव हेमचन्द कोटद्वार, (६) श्री मायाराम भगवानदास, तीन-सुकेया (७) श्री राजेन्द्र प्रसाद, शिलचर (८) डा० विद्यावती, जालन्धर शहर (९) श्री वंशीलाल गुरचरणलाल, दिल्ली ३३ (१०) श्रीराजबहादुर एंड संस, अलीगंज (११) श्री येमुला भूमय्या, निजामाबाद (१२) श्री रामानुज चौधरी, चम्पारण। (१३) बैनीप्रसाद मोदमिल (अंबाला) (१३) M/s सूरजभान द्वारकादास, पंजाब (१४) हरीश गुप्ता दिल्ली (१५) श्री प्रेमचन्दजी दिल्ली (१६) श्री भागमल अम्बाला (१७) श्री धनेष कुमार अग्रवाल, गोंदिया (१८) श्री लेखराम धर्मप्रकाश आर्य मथुरा (१९) श्री विजय एल. भाटिया, बम्बई(२०) श्री मिनाराम नारायणदास, जलपाईगुडी (२१) श्री मनोहरलाल धौन, फिरोजपुर शहर (२२) श्री मनसुख लाल लालजी भाई. अहमदाबाद (२३) श्री अमरनाथ भास्कर संस फरीदाबाद, (२४)श्री मोतीलाल, करनाल (२५) श्री गायत्री बाबूलाल पोडार, बम्बई-२(२६) श्री काशीराम अग्रवाल, जालन्धर (२७) श्री विजयसिंह, देहरादून (२८) श्री ओमप्रकाश शर्मा, बरेली (२९) श्री के० एल० पोद्दार, बंगलौर (३०) श्री आर० सी० गुलाठी, जीन्द (३१) बगरू हैप्पी क्राफ्ट सेंटर, बगरू (३२) अंबालाल पालीवाल Chnglsout। (३३) श्री रामकमल, कोटा (३४) कान्तिचन्द बंसल, कासगंज (३५) शिव-नारायण, सोनी सागर (३६) जयप्रकाश जी, बंगलौर (३७) श्रीमती शशांक मंजरी, हजारी बाग (३८) श्री महावीरप्रसाद शाहजहाँपुर (३९) रूपनारायन, बरहानपुर (४०)श्री रामकुंवर मिश्र, लखीमपुर (४१) श्री डा० सुभाष मेहता नई दिल्ली (४२)श्री दीदारसिंह आर्य वेदायाचार्य कुरुक्षेत्र (४३) श्री शेरसिंह श्रीवास्तव देहरादून (४४) श्री हरीरामजी, कानपुर, (४५) श्रीमती शांतिनारायण चड्ढा, कानपुर, (४६) शिवप्रसादजी गुप्ता, कानपुर(४७)श्री रामेश्वरप्रसाद जी, कानपुर,(४८) ओम-प्रकाश पाण्डेय, कानपुर (४९) श्रीमती बहिन आशारानी गुप्ता, कानपुर (५०) श्री हजारीलाल शिवराजमल, कानपुर,(५१)श्री हंसराज सेठ, कानपुर(५२) श्री रामनरेश जी, कानपुर (५३) मे० रामसेवक रामसहाय गुप्ता, कानपुर (५४) श्री सत्यनारायण, कानपुर (५०) मे० नौहरीमल हीरालाल जी, कानपुर, (५१) श्री प्रकाशनारातण मिश्र, कानपुर (५२) श्रीमती बहिन कमला महाजन, कानपुर।

२० रु. दान देने वालों की सूची

(१) श्री चन्द्रदेवप्रसाद, हजारीबाग (२) श्री टी० एन० श्रीवास्तव, दिल्ली (३) श्री परस राम शर्मा, दिल्ली (४) श्री बद्रीप्रसाद अग्रवाल बल्लभगढ़ (५)श्री बेनीप्रसाद सत्यनारायण बिजनौर, (६) श्री अरविन्द दोशी दहीसर, [७] श्री कृष्णचन्द, जीन्द श्री कर्नल सतीशचन्द नन्दा बान्द्रा [८] श्री चौ० साधुशरण आर्य पूर्वीचम्पारण, श्री निरोपाल रेड्डी महबूबनगर।

१५ रु० दान देने वालों की सूची

[१]श्री ओमप्रकाश कुरुक्षेत्र[२]श्री इन्द्रसेन कुन्दू सोनीपत,[३]श्री आनन्दस्वरूप, रुड़की [४]सुश्री प्रेमा पोखरियाल पौडी, गढ़वाल [५]श्री चन्द्रिकाप्रसाद, देवरिया[६]श्रीआर०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
भट्टभरुच, [९] श्री पी० एन अग्रवाल दिल्ली ।

११ रु० दान देने वालों की सूची

(१) श्री शिवनारायण वर्मा, कानपुर-५ (२) श्रीमती सरस्वती आर्या, नई दिल्ली (३) M/S Swastik ladge Parlivajnath (४) श्री सुखदेव प्रसाद वर्मा उन्नाव (५) श्री शकुनचन्द गुप्त, लालगंज (६) श्री Hav Ram Dutt Yadav गुरदासपुर (७) श्री सुरेश कुमार मुज्जफरनगर (८) श्री राजेन्द्र प्रसाद अंबाला (९)श्री रामराम व मुन्शीराम आर्य, इन्द्री (१०) श्री बी०एस० मिश्रा, श्यामगंज (११) श्री बाला प्रसाद शर्मा, दिल्ली-६ (१२) श्री सेक्रेटरी आर्य, हीराकुंड (१३) श्री दीनदयाल खेमका, तीनसुकिया (१४) महिन्द्रा आयल मिल्स, गाजियाबाद (१५)श्री शान्ति कुमार अकोला (१६) श्री दत्तात्रय रघुनाथ सावंरकर, नासिक शहर (१७) श्री सुन्दर लाल गुप्ता, रायपुर (१८) श्री डा०स्वर्ण लाल, जालन्धर (१९) श्री रूकम चन्द जिन्दल आगरा (२०) श्री बिहारी लाल यादव हैदराबाद(२१)श्री मुरारीलाल भार्गव, जयपुर (२२)श्री श्याम सुन्दर बगडियाँ अहमदावाद[२३] श्री मोती सिंहदुर्ग [२४]श्री रूपचन्द त्यागी मेरठ[२५]श्री सूरज प्रसाद त्रिपाठी वम्बई[२६]श्री रूपचन्द यादव-पूना [२७] श्री धरराव गूणवंतराव देशमुख गोरडा [२८] श्री डा० स० सी पाटीदार खरमौन [२९] श्री मुलखराज गुप्ता, जम्मू तवी [३०] श्री प्रहलाद नारायण मेहरोजा, सीतापुर [३१] श्री U. P. Soni 'Shrce Krupa' Bilimara [३२] Sh. Grobindi Devi Hapur (३३) Dr. S.P.K. Shrma बुलन्दशहर [३५] श्री दानमल जमनादास बीकानेर (३६) श्री विश्वनाथ मेहता शिमला (३७) श्री के० एल० गोधा उदयपुर श्री हरियाणलाला लखमीपुर (३८) श्री गोपीचन्द गोयल भिवानी (३९) श्री त्रिभुनदास के० ठक्कर अहमदाबाद (४०) श्री मुरारीलाल अग्रवाल इलाहाबाद (४१) श्रीमती मिश्रीदेवी बम्बई। (४२) डा० आर० एल० आहूजा जालंधर शहर (४३) श्री रामबहादुर जी बदली (४४) श्री वी० पी० देशसुख अहमदाबाद (४५) श्री गोविन्दराम जोशी सहरसा (४६) श्री महावीरप्रसाद रामस्वरूप जी बहादुर गंज (४७) Sh. R. R. Sekhsria Tilk Marg (४८) बनवारीलाल शर्मा कलकत्ता (४९) श्री डा० स्वामीनाथ शर्मा बम्बई २ (५०) श्री लखमीचन्द्र वार्ष्णेय बजाज अलीगढ़ (५१) श्री अंबिकाप्रसाद मंडल मुंगेर (५२) श्री देवराजसिंह उदयपुर[५३]Sh.V.V. Vasani Adyar गोंदिया[५४]श्री पी०एस०पी० वासुदेव, लुधियाना (५५) ए० पी० पाण्डेय एड फ्रेन्डस, महाराष्ट्र (५६) यादराम सैनी फरीदाबाद (५७) शिवनन्दनप्रसाद, पटना (५८) श्री प्रेमसदान, दिल्ली (५९) श्री विजयदत्त हान्डा, नई दिल्ली (६०) श्री ब्रजमोहन, देहरादून (६१) श्रीमती शान्ता गुलाटी, बम्बई (६२) श्री गंगाराम भेन्दी, पूना (६३) श्री मदनमोहन गुप्ता, देहली (६४) श्री खरगसिंह चौधरी, मथुरा (६५) श्री जगदीशप्रसाद एडवोकेट, जगाधरी (६६) श्री मदनलाल, दिल्ली (६७) श्री रामदास शर्मा, टीकमगढ़ (६८) श्री मदनमोहन खुराना, पानीपत (६९) श्री ओमप्रकाश गुप्ता, गुड़गांव (७०) श्री आर० आर० जोशी, कोलल्हापुर (७१) श्री अशोककुमार संजयकुमार, बिहार (७२) श्री लापूराम ब्रजमोहनलाल रांची (७३) श्री कमला प्रसाद काजरिया कलकत्ता (७४) अशोकराय नई दिल्ली (७५) श्री बाबूराझझा, मैंनपुरी (७६) धीरसिंह, श्री गंगानगर (७७) आर. एन. सिह गोरखपुर (७८) रामझाऊ गरपप्पा नागपुर (७९) श्री अम्बिकाप्रसाद मंडल मुंगेर (८०) ओमप्रकाश चौरसिया सागर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(८१) बच्चीसिंह पवार, नैनीताल (८२) ... शर्मा, ... (८३) ... सिंह मेरठ (८४) सूरजमल जौहरी, अलीगढ़ (८५) विनोदकुमार जयसवाल, बंगलौर (८६) डा० आर० एन वाहूजा, जालन्धरसिटी (८७) शशिभूषण श्रेष्ठ, जनपद (देवरिया (८८) श्री० पी० डी० युधिष्ठर, मद्रास [८९] श्री वी० आर० गुप्ता आगरा [९०] श्री प्रमोदकुमार [९१] M/S लकी क्वालटी स्टोर, पलियाकलां [९२] श्री विनोदकुमार गुप्ता पलियाकलां [९३] श्री ब्रह्मसिंह मुजफ्फनगर [९४] श्री जगदीश सिंह आर्य, बिजनौर [९५] श्री ओमप्रकाश सोनी, आष्टा।

(९६) श्रीजगन्नाथ प्रसाद अग्रवाल, कानपुर, (९७) श्री रामजतन सिंह ठाकुर, (९८) गिरिजाशंकर जी, (९९) श्रीमती विद्यावती जी सक्सेना, कानपुर (१००) श्री ब्रह्म प्रसाद नागरथ, कानपुर(०१) श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य, कानपुर, (१०२) इंजीनियर ओमप्रकाश जी, (१०३) श्रीमती उर्मिला देवी जी, कानपुर, (१०४) श्रीमती बहिन ओमता गुप्ता कानपुर, (१०५) श्रीमती प्रेमा अग्रवाल, कानपुर, (१०६) श्री ओमप्रकाश भार्गव, कानपुर,

१० रु. दान देने वालों की सूचि

(१) बालाजी चिल्लय (महबूब नगर) (२) श्रीमती कृष्णा (बम्बई) (३) रमेशचन्द्र धीमार्यसभा दिल्ली (४) सुखवीर सिंह गुप्त मेरठ (५) श्री रवि-कुमार गुप्ता लाजपतनगर (६) श्री रामलाल शर्मा सरदारशहर (७) M/s पंजाबी चन्दूहलवाई बम्बई (८) श्री माधोसिंह दिल्ली-६ (९) श्री एम० एल० बुद्धिराजा नई दिल्ली (१०) श्री हरिशचन्द्र नई दिल्ली (११) श्री M/s गुप्ता इलेक्ट्रीकल्य सहारनपुर (१२) श्री कैलाश नाथ सिंह बिजनौर (१३) श्री हरप्रसाद सिंह बिजनौर (१४) श्री के० आर० त्रिपाठी बम्बई (१५) श्री रामकिशोर जे० खण्डेलवाल बम्बई (१६) श्री रामसेठ एटा (१७) श्री गणेश प्रसाद आर्य जालौन (१८) श्री सत्य स्वरूप महावीर प्रसाद बुलन्दशहर (१९) श्री सीताराम शर्मा गढ़वाल (२०) श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता (मुजफ्फरनगर) (२१) श्री रघुवीर प्रसाद जी आगरा (२२) श्री पोखरदास कपूर देहरादून। (२३) श्री रामकुमार मुजफ्फरनगर (२४) श्री एम.वी, पंत पूना (२५) श्री नंगाधर राव आर्य निजामाबाद (२६) श्री आर० गजानन्द पारधीक बैतूल (२७) श्री गरीबदास यादव भोपाल (२८) श्री छोटे लाल शाहकुमार (२९) Sh Arun N. Mandansnr Parbhan (३०) श्री शिवचरन दास शर्मा खेकड़ा (३१) श्री भगवती प्रसाद आर्य कानपुर-२६ (३२) श्री परमानन्द अग्रवाल. नई दिल्ली (३३) श्री चौ० रणधीर सिंह, रोहतक (३४) श्री नवल किशोर, दिल्ली-७ (३५) श्री हेमराज एडवोकेट, कांगड़ा (३६) श्री क्षेमानन्द पाण्डेय शास्त्री, रानीखेत (३७) श्री कालूराम माली, देहरादून (३८) श्री केशोदास, मुजफ्फरनगर (३९) श्री सखाराम गणपतराव वाघ, अकोला (४०) श्री जगदीश लाल गुप्त मढ़न (४१) सान्नीलाल वाघजी भाई धानेरा (४२) श्री हरीश चन्द्र पूरनपुर (४३) उमराव सिंह निओरिया (४४) श्री डा०अमरचन्द खंडेलवाल मथुरा (४५) श्री मंगल बिहारी सक्सेना, स्टेट कालोनी (४६) श्री नारायण आर्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विर्षमिस्त्री, जावला (४७) श्री गोविन्द सिंह झूण्डपुर (४८)श्री श्याम नारायण मीरा बाजार (४६) श्री साइंदास महाजन, दिल्ली (५०) श्री राम प्रताप सिंह भोपाल, (५१) श्री साईदास महाजन दिल्ली-३५ (५२) श्री मोहन लाल गुप्त, मेरठ (५३) सुबेदार रत्न चन्द भारद्वाज—६६A .P.O. (५४) श्री एस० पी० भसीन, चण्डीगढ़ -१६ (५५) श्री हरबंस लाल मौर्य, दिल्ली-५२ (५६)श्री चौकसी छगनलाल गंगाराम पटेल—मेहसाना (५७) श्री हरिदत्त शास्त्री, मुरादाबाद (५८) Sh.R.Velayadha Madras (५६) Dr- Tulsi Dass Amritser (६०) श्री चन्द्र शेखर, गढ़शंकर (६१) श्रीबुद्धेश्वरानन्द ओझा, रामगढ़वा (६२) श्री महेशचन्द आर्य फरुंखाबाद (६३) श्री गन्धर्व सिह गाडं बीना, (६४) योगेश्वर गंज, र उरकेला (६५) श्री कर्म चन्द वन्टा यमुनानगर, (६६) भगवती प्रसाद जी, बिरहाना रोड (६७) श्री शिवकुमार वर्मा, गोविन्द नगर

५ रुपये दान देने वालों की सूची

(१) सर्वश्री विजय बिहारी-पटना (२) एस. एम. उपाध्यायहरदा (३) श्री गोविन्द राम-जमशेदपुर (४) अरुणकुमार शैल्य सीहोर। (५) श्री निवास चारण गुलबर्गा (६) श्री सालिग्राम हजारी लाल घुमरी (७) सोहनलाल कालू पू० निभाड़ (८) श्री पदन कुमार प्रवीन कुमार हेलीमंडी (६) श्री स्नेही शुक्ला दिल्ली-३५(१०) श्री बनारसी दास, मवाना कलां (११) श्री मूलचन्द गुप्त नई दिल्ली-३ (१२) श्री महेश चन्द्र जेवर (१३) श्री एम० एस कादेकर बेलगाम (१४) श्री के० पी० भार्गव अजमेर (१५) श्री अरूण कुमार शैव आपर (M,P.) (१६) श्री सत्यप्रकाश आर्य, (A.P.) (१७) श्री भगवान चैतन्य, सुन्दर नगर (१८) श्री बजरंग लाल अग्रवाल कालाहांडी (१६) श्री डा० के० एन० रायजादा गगापुर शहर। (२०) शंकरदत्त भट्ट, नई दिल्ली (२१) उदयसिंह, सहारनपुर (२२) एम० डी देवराडी, दिल्ली (२३) बेनी प्रसाद सत्यनारायण, बिजनौर (२४) श्री एस० बी० लाहोटी, नई दिल्ली (२५) विनोद कुमार अग्रवाल (२६) श्री हरिचरण साहु, हजारीबाग (२७) श्री राधा बल्लभ देव प्रकाश, अलीगढ़ (२८) श्री लक्ष्मी चन्द विजय कुमार, सहारनपुर (२६) श्री बालकृष्ण गुप्ता, नई दिल्ली (३०) श्री पुरुषोत्तम स्वरूप भटनागर, बांरा (३१) श्री कैप्टन सोमपाल, बरेली (३२) श्री यशोदानन्दनगोयल, दिल्ली-६ (३३) श्री ज्ञानचन्द व्यास, ताण्डूर (३४) श्री द्वारकानाथ रामेश्वर पालकीवाला, रोगांव (३५) श्री कांति प्रकाश वर्मा, दिल्ली (३६) श्री उदयचन्द खुशीराम, बुलन्दशहर (३७) श्री मदनलाल पोद्दार, कूचामनसिटी (३८) श्री एस० पी० भोजा, बम्बई (३६) M/s राजीव कुमार सजीवकुमार, बुलन्दशहर (४०) श्री प्रतिपाल सिंह शास्त्री, मुजफ्फरनगर (४१) श्री भगवान दास गुप्त, कानपुर (४२) श्री वेद प्रकाश सिंह, बरेली (४३) श्री बाबू राम झा, शिकोहाबाद (४४) श्री गोविन्द राम, जमशेदपुर (४५) श्री विजय कुमार अग्रवाल, बंगलोर (४६) श्री दयाल सिंह विष्ट, पौडी गढ़वाल (४७) श्री राजेन्द्र सस, बरेली (४८) बद्री प्रसाद ओम्प्रकाश, (राज०) (४६) श्री सहदेव प्रसाद सिंह, बिहार [५०] श्री राम किशन कपाही मुगलसराय [५१] श्री ब्रजनन्दन शारदा, मुरादाबाद [५२] डा० सुखपाल, हजारी रोड़ [५३] श्री जीवनलाल, खैर [५४] सुरेशचन्द्र विश्नोई, नई दिल्ली [५५] श्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

[५६] श्री ... [५७] श्री
राम विलास, मुजफ्फरनगर [५८] श्री केदारनाथ द्विवेदी एडवोकेट, पलामू [५९] श्री सेवाराम आर्य, सहारनपुर [२८] श्री गंगाशरण शर्मा, लाडनू [६१] श्री रामबली कनौजिया. पिथाना [६२]]६०] श्री रामसिंह पंवार, दीधार [६३] श्री हरनारायण लाल आर्य, शोहरतगढ़ [६४] श्री घरनाम देव वासुतकर, सेड़म् [६५] श्री माना लाल भट्ट, मद्रास [६६] श्री बसगित सिंह कुश्वाहा, गाजीपुर [६७] श्री ब्रजबिहारी प्रसाद शर्मा, पं० चम्पारन [६८] श्री बलबीर सिंह यादव, पं० बिहार [६९] श्री भगवान स्वरूप शुक्ल, [७०] श्री गणेश अवस्थी, कानपुर, [७१] श्री सरदार जसवंत सिंह जी, कानपुर, [७२] श्री एन० एन० चढ्ठा, [७३] श्री एस० एन० त्रिपाटी, [७४] श्री जी० एल० निगम, [७५] श्री शिवनारायण जी मास्टर, [७६] श्री देवराजजी, कुली बाजार।

दो रुपया दान देने वालों की सूची

[१] श्री मुरलीधर गोवल, दिल्ली [२] श्री गंगाप्रसाददेवड़ा, बम्बई [३] श्री गंगाप्रसाद सुमन, कृष्णानगर दिल्लीं-५१ [४] श्री राम प्रसाद द्विवेदी-ढथौली [५] श्री बदन राम अग्रवाल, वाबांगीर [६] श्री लखन लाल वर्मा, रायपुर [७] श्री लुयान प्रसाद वर्मा, रामपुर।

माता सुदर्शन जी आर्य धनबाद

आपने वेदमन्दिर के लिए १०००) दान दिया है।

हार्दिक धन्यवाद—अध्यक्ष

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंडमान के बारे में !

अंडमान-निकोबार और उनसे सटे द्वीपसमूह का भारत के इतिहास में तो महत्त्व है ही; भविष्य के साथ भी इनका सम्बन्ध है, इसलिए इनका परिचय प्रत्येक भारतवासी के लिए आवश्यक है। अर्वाचीन काल में हिन्दू संस्कृति भारत के बाहर जिस नवीन भूभाग पर अपना आधिपत्य फैलाती रही है, उसमें अंडमान द्वीप समूह की गणना अनिवार्य है।

अंडमान कलकत्ता से लगभग ६०० मील दूर है। बीच-बीच में छोटे-छोटे द्वीप, थोड़ा सागर और फिर द्वीप – इस प्रकार यह द्वीपमाला फैली हुई है। इसका विस्तार हिन्दमहासागर में है। अंडमान इनमें सबसे बड़ा द्वीप है। इसे तीन भागों में बांटा जा सकता है। इन तीन भागों के लिए उत्तर, मध्य और दक्षिण—ये नाम प्रचलित हैं। इस द्वीप की मानचित्र को देखने से पता चलता है कि इसका नाम अंडमान क्यों पड़ा। हमें बताया गया कि यह शब्द हनुमान से निकला है। परन्तु हमें यह कथन अधिक ग्राह्य लगा कि इसका आकार अंडे जैसा होने से इसका नाम अंडमान पड़ा।

उत्तर अंडमान ५१ मील, मध्य ५६ मील और दक्षिण अंडमान ४९ मील है। रकंद्वीप ११ मील लम्बा है। इसे बड़ा अंडमान कहते हैं। इसके दक्षिण में छोटा अंडमान द्वीप है, जिसकी लम्बाई ३० मील और चौड़ाई १७ मील है। इस द्वीप पर उतनी बस्ती नहीं हैं। घने जंगल, हैं जिनमें सूर्य की किरणें भी मुश्किल से पहुंच पाती हैं। ऐसे जंगल चारों ओर बिखरे हुए हैं। इस द्वीप का सबसे ऊंचा पर्वत सैंडलमाउंट है। इसकी ऊंचाई तीन हजार फुट है। यहां कोई नदी नहीं है— नाले अवश्य बहते रहते हैं।

जंगल होने के कारण वहां वर्षा बहुत होती है। ग्रीष्म ऋतु में भी रिमझिम बारिश होती है। इसके बावजूद धूप निकलने पर गरमी हो जाती है। सर्दी नाम-मात्र को आती है। जनता मलेरिया से परेशान रहती है। यहां जंगली मक्खियों के अतिरिक्त जोंकें भी बहुतायत से होती हैं। गरमी में छिपी ये जो वर्षा ऋतु में बाहर आ जाती हैं। यहां कनखजूरों की भी कमी नहीं। वाइपर नामक विषैला सांप और अजगर भी कहीं कहीं दिखाई देते हैं। क्योंकि यहां के निवासी जंगल में नहीं जाते, इसलिए इन विषैले जीवों की संख्या बढ़ती ही जाती है। इस जंगल में बाघ, शेर, रीछ आदि नहीं मिलता। हां, रान सूअर अवश्य मिलते हैं। रोमपर अनेक समुद्री जीव-जन्तु विहार करते हैं।

अंडमान का अर्वाचीन सुसंस्कृत इतिहास सन् १७६६ ईस्वी से प्रारम्भ हुआ माना जा सकता है। इससे पहले सिंगापुर, पेनांग, मलक्का आदि द्वीपों और स्थलों से काले पानी की सजा पाने वाले लोगों को निर्वासित किया जाता था। इंजीनियर कोलब्रुक और कैप्टन ब्लेअर दोनों ने सन् १७६६ के ही लगभग अंडमान में उप-निवेश स्थापित करने का प्रयत्न किया था। इससे भी पहले कई बार अंग्रेजों की डोंगियां यहां आते-आते टूट गई थीं। आज भी उनके यात्रा-वर्णन उपलब्ध हैं। जब कैप्टन ब्लेअर ने सबसे पहले यहां बसने का प्रयत्न किया था, तब यहां का जलवायु शहरियों के लिए घातक था। पहले जो बन्दी वहां बसे, उनमें से कोई भी जीवित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बच न सका। इसी ब्लेअर के नाम पर यहां के प्रमुख बन्दरगाह का नाम पोर्ट ब्लेअर पड़ा है। सन् १८५७ के स्वाधीनता संग्राम में जिन हजारों भारतीय सैनिकों को निर्वासन की सजा मिली थी, वे सब यहीं लाये गये थे। तभी से यह उपनिवेश सही ढंग से बसने लगा।

जब बन्दियों का अंडमान भेजा जाना कम हो गया, तब अधिकारियों ने भूभाग (प्लाट) आम जनता को बेचने प्रारम्भ कर दिये और नारियल व सुपारी के हजारों वृक्षों को बेच डाला, जिससे उन पर व्यक्तियों का अधिकार हो गया; सरकार का न रहा। अधिकतर प्लाट यूरोपियनों और ऐंग्लो-इंडियनों के ही हाथ लगे, क्योंकि हिन्दू व्यापारियों की संख्या बहुत कम थी। जिन थोड़े से भारतीय व्यापारियों ने प्लाट खरीदने चाहे, उन्हें भी भारतवासी सहयोगियों से सहयोग न मिला; फलस्वरूप उन्हें भी इस स्वर्णावसर से हाथ धोना पड़ा। जंगल काटकर उपनिवेश बनाने के लिए सरकार ने भी बहुत-सी रियायतें दीं। एक-दो ईसाई संस्थाओं ने इस रियायत से लाभ उठाकर भारत की संथाल आदि जातियों के लोगों को ईसाइयत की दीक्षा देकर वहां ले जाकर और वहां का जंगल काटकर उनकी ईसाई बस्ती बसाने का उद्योग किया, लेकिन किसी सामान्य हिन्दू अथवा व्यापारी हिन्दू का ध्यान इस ओर न गया।

पहले अंडमान में कैदियों को रखा जाता था। तब वहां जाने और व्यापारादि करने में अड़चनें थीं। अब कोई अड़चन नहीं है। वहां आज हमारे देश, धर्म जाति के हजारों लोग रहते हैं, उन्होंने अपने परिश्रम से इन द्वीपों को उन्नत किया है। वे ऐरे-गैरे-नत्थूखैरे नहीं हैं। केवल आर्थिक दृष्टि से विचार करने पर भी हम देख सकते हैं कि वहां काफी सम्पत्ति है। और अधिक निर्मित की जा सकती है। वहां चाय के बाग, रबड़ का उत्पादन, गन्ना, नारियल, सुपारी आदि के बड़े बाग हैं। केवल पचास-साठ वर्ष ही हुए होंगे, जब यहां की भूमि को कृषि योग्य बनाया गया। (यह बात आज से ५०-६० वर्ष पूर्व लिखी गई थी)—इसी परिप्रेक्ष्य में यहां जंगल के उत्पादन को भी दुगुना किया जा सकता है। जो लोग वहां अकेले पड़े हैं, उनकी स्थिति के निरीक्षण के लिए कौंसिलरों को वहां अवश्य जाना चाहिए। वे बेचारे मूक हैं। उनके पास अपनी स्थिति सुधारने का कोई साधन नहीं। हमें उनका प्रवक्ता बनना होगा। आर्यसमाज के ऊंचे दर्जे के उपदेशक कभी वहां भेजे जा सकते हैं। यह कार्य आवश्यक है। वहां हिन्दू बहुसंख्यक हैं। फिर भी वहां हिन्दी की बजाय उर्दू सिखाने का प्रयत्न हो रहा है। इतना ही नहीं, शिक्षा का माध्यम भी मातृ भाषा की बजाय उर्दू ही है। ये और ऐसी अन्य अनेक बातें हैं, जिनकी ओर संगठन कर्ताओं का ध्यान जाना चाहिए। यदि संगठनकर्ता वहां जायेंगे, तो वहां वे ऐसी व्यवस्था करवा सकेंगे कि अधिकारियों का ध्यान इन बातों की ओर जाये।

० ० ० ० ० ० ० ०

"दंडित १९१० में, रिहाई १९६० में" इन शब्दों से अंकित तख्ती गले में लटकाये वीर सावरकर दोहरे आजीवन कारावास का दंड भोगने के लिए काले पानी (अंडमान) की कालकोठरी में प्रविष्ट हो रहे थे। भयानक भविष्य की कल्पना ने उनकी आंतरिक स्थिरता को तनिक भी डिगाया नहीं था। पास खड़े जेल-अधिकारी ने व्यंग्य किया—"घबराओ नहीं। ब्रिटिश सरकार पचास साल पूरे होते ही तुम्हें जरूर रिहा कर देगी।" सावरकर ने उत्तर दिया—"हां, जरूर! किंतु क्या स्वयं ब्रिटिश सरकार भारत में पचास साल टिकी रह सकेगी?"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तुम्हारा धर्म क्या है ?

— गंगाप्रसाद उपाध्याय, एम० ए०

हिन्दुओं में एक विचित्र बात है जो और जातियों में नहीं पाई जाती। यदि इनसे कोई पूछे 'तुम्हारा धर्म क्या है ?" तो इनकी समझ में नहीं आता कि इस प्रश्न ा क्या उत्तर दें। कोई मुसलमान जल्दी से कह देगा "मैं मुसलमान हूं" कोई साई झट उत्तर देगा, "मैं ईसाई हूं" परन्तु हिन्दू बिचारे को पता ही नहीं कि मैं या उत्तर दूं ?

इसका मुख्य कारण यह है कि हिन्दुओं को कोई बतलाता ही नहीं कि उनका र्म क्या है और उनकी धर्म पुस्तक क्या है ? शिक्षित हिन्दू तो धर्म से बेजार हैं। तो सीधा-सीधा यही उत्तर देने को तैयार हो जाता है कि मेरा धर्म कुछ नहीं; न्तु संसार उसको चैन लेने नहीं देता। लोग कहते हैं कि "क्या तुम्हारा कोई र्म नहीं ? कुछ तो अवश्य होगा।" तब वह मजबूर होकर कह उठता है कि "मैं न्दू हूं।" यदि उससे फिर पूछा जाय कि क्या हिन्दू किसी जाति का नाम है या का ? तो उस पर फिर विपत्ति सी-आ टूटती है। उत्तर क्या दे ? क्या भेद है ति में और धर्म में ? यदि किसी अंगरेज से पूछो कि "तुम्हारी जाति क्या है ? वह कहेगा "अंगरेज"। यदि उससे पूछो "तुम्हारा धर्म क्या है ?" तो वह कहेगा साई", यहाँ हिन्दू अपनी जाति को ही धर्म बता देता है क्योंकि उसको आरम्भ ल से ही अपने धर्म का पता नहीं बताया गया। यदि किसी हिन्दुस्तानी मुसलमान पूछो कि "तुम्हारा धर्म क्या है ?" तो वह कहेगा "मुसलमानी या इस्लाम", यदि से पूछो कि तुम्हारी जाति क्या है ?" तो इसका भी वह यही उत्तर देगा सलमान।" इसका कारण यह है कि मुसलमान को केवल उसका धर्म बताया है, जाति बताई ही नहीं गई। हिन्दू जाति जानता है, धर्म नहीं जानता। मुसल- धर्म जानता है जाति नहीं जानता। मुसलमान जाति के प्रश्न पर धर्म का नाम है; हिन्दू धर्म के प्रश्न पर जाति का नाम लेता है। हिन्दुस्तान के हिन्दू में के लिये" प्रेम नहीं। दूसरे देशों का हाल विपरीत है, वह धर्म और जाति में ान कर सकते हैं और धर्म तथा जाति के प्रश्नों पर अलग-अलग विचार कर हैं।

यदि कोई हिन्दू कहता है कि मेरा धर्म हिन्दू है और उससे आप हिन्दू का लक्षण बैठते हैं तो उसको बड़ी कठिनाई होती है। पचासों बार बड़े बड़े विद्वान और ात पुरुषों के समक्ष यह प्रश्न उपस्थित हुआ है कि "हिन्दू धर्म" के क्या लक्षण और पुष्कल वाद-विवाद के पश्चात भी आज तक कोई संतोषजनक उत्तर नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जा सका। यदि उससे पूछा जाय कि हिन्दू धर्म के मूल ग्रन्थ का नाम लो तो उसको कुछ भी पता नहीं लगेगा। कभी वह तुलसीकृत रामायण को धर्म पुस्तक बतायेगा, कभी गीता को, कभी तुकाराम की वाणी को, कभी किसी अन्य सन्त के वचनों को। यदि उससे पूछा जाय कि तुलसीदास किस ग्रन्थ को अपना धर्म ग्रन्थ मानते थे या तुकाराम का धर्म ग्रन्थ क्या था, या गीता के लिखने वाले व्यास जी अपने धर्म का मूलाधार क्या मानते थे? तो उसको चुप ही होना पड़ता है।

यदि उससे पूछा जाय कि तुम्हारे धर्म के अङ्ग क्या हैं? तब उनकी ओर आफत आती है। धर्म के अङ्ग क्या होते हैं जिसने जैसा चाहा उस प्रकार से पूजा कर ली, या न कर ली। किसी ने वृक्ष पूज लिया, किसी ने सूर्य की उपासना कर ली, किसी ने किसी देवता या मन्दिर में जाकर सिर झुका दिया। या किसी ने कुछ न किया। यदि किसी से कहो कि इन सबका समन्वय कर दो तो समन्वय भी नहीं हो सकता। इसका पारमार्थिक परिणाम क्या होगा यह तो ईश्वर जाने या वह सोचें जो पारमार्थिक चिन्तन में निमग्न रहते हैं परन्तु व्यावहारिक और सांसारिक परिणाम यह है कि जिस प्रकार एक राज्य के अभाव में अराजकता, शासन-शून्यता और शासन-भेद भाव के कारण कलह रहता है इसी प्रकार मतान्तरों की भिन्नता, कलह, उपद्रव, अशान्ति और अधार्मिकता के कारण लौकिक जीवन में भी शान्ति नहीं मिलती। और जब हिन्दुओं का अन्य धर्मावलम्बियों के साथ सामना पड़ता है तब तो इनकी नानी ही मर जाती है और हिन्दुओं के नेताओं को यह नहीं सूझता कि किस प्रकार जाति को सुसंगठित करके विधर्मियों के आक्रमण से रक्षा की जाय। पिछले कुछ दिनों में हिन्दुओं के सभी नेता मिल कर अलग-अलग इस बात की कोशिश करते रहे हैं कि मुसलमानों के धार्मिक तथा नैतिक आक्रमणों से हिन्दुओं की कैसे रक्षा करें? परन्तु अभी तक किंचित् सफलता भी प्राप्त नहीं हुई। एक नेता से एक बार पूछा गया कि हिन्दू कौन है? उसने बहुत सोच विचार कर यह उत्तर दिया कि हिन्दुस्तान का रहने वाला हिन्दू है। यह केवल भौगोलिक उत्तर था जो दो कौड़ी का भी मूल्य नहीं रखता। इस उत्तर से न तो धार्मिक उलझनें ठीक होती हैं, न सामाजिक और न राजनैतिक ही। इस आधार पर हिन्दुस्तान की प्रत्येक नदी में रहने वाली मछली वा प्रत्येक तालाब का मेंढक भी हिन्दू है। जिस शब्द से आचार-विचार या जीवनोद्देश्य या जाति कर्त्तव्य का पता ही न लगता उससे लाभ ही क्या? यह उत्तर लोगों को भूल भुलैय्यों में तो डाल सकते परन्तु कठिन ग्रन्थियों को सुलझा नहीं सकते।

फिर आप पूछेंगे कि तुम क्या उत्तर देते हो? सुनिये! ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में इसका बहुत अच्छा उत्तर दिया है। यदि कोई पूछे कि तुम कौन हो? कहना चाहिए "मैं आर्य्य हूं।" और यदि कोई पूछे कि तुम्हारा धर्म क्या है? कहना चाहिये कि "मेरा धर्म वैदिक है क्योंकि मेरे धर्म का मूलाधार वेद है।"

कुछ लोग पूछेंगे कि ऐसा उत्तर क्यों देते हो? हिन्दू लोग तो वेदों को जानते नहीं। इस विषय में हमको यह कहना है कि लोग वेदों को इसलिए नहीं जानते कि उन्हें यह बताया नहीं गया। यदि लोगों से कहा जाता कि तुम्हारे धर्म ग्रन्थ वेद हैं तो अवश्य ही वेदों को देखना, पढ़ना या उनकी कथा सुनना चाहते। जब से ऋषि दयानन्द ने लोगों को बताया है कि तुम्हारा धर्म वेद है उसी दिन से वेदों के विषय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गहरी चर्चा चल पड़ी है। वेदों का प्रकाशन होने लगा है। वेदों से निकाल निकाल कर छोटे छोटे वेदों के गुटके या वेद मन्त्रों की व्याख्यायें लोगों के सामने आने लगी हैं। कम से कम आर्य्य समाज के सभासद जो अपने को स्वमी दयानन्द का अनुयायी समझते हैं। वेदों से बहुत कुछ परिचित हैं। ग्रामों के अशिक्षित आर्य्य सभासद भी वेदों के नाम और दस पांच मन्त्र जानते हैं। इसका मोटा सा परिणाम यह है कि जब कभी धार्मिक प्रश्न उपस्थित होता है तो सब आर्य एक हो जाते हैं। जितना संगठन आर्य्य-सामाजिकों में है उतना अन्यत्र कहीं नहीं। यदि हिन्दू लोग अपना लौकिक या पार-लौकिक कल्याण चाहें तो आर्य्य का अनुकरण करें।

कुछ लोग कहेंगे कि हम वेदों को मानते ही नहीं तो अपना धर्म वैदिक क्यों बतावें ? मैं उनसे कहता हूं कि यह आपकी भूल है। आप जिस ग्रन्थ को अपना धर्म ग्रन्थ मानते हैं उन्होंने भी वेदों को ही धर्म का मूलाधार माना है। जिनको आप धर्म ग्रन्थ मान रहे हैं वह तो वेदों की व्याख्या रूप हैं। इनको धार्मिक पुस्तक माना जाता है क्योंकि वे वेदों के अनुकूल हैं। कालिदास ने कहा है कि—

श्रुतेरिवार्थ स्मृतिन्वगच्छत, (रघुवंश सर्ग २)अर्थात् स्मृति सदा श्रुति के पीछे चलती है। धार्मिक ग्रन्थ दो प्रकार के होते हैं एक तो मूल अर्थात स्वतः प्रमाण, दूसरे व्याख्या रूप या स्मृति रूप जो परतः प्रमाण हैं। मूल ग्रंथों के अनुकूल होने से उनका प्रमाण है। उदाहरण के लिये इस्लाम धर्म का मूल ग्रन्थ "कुरान" ही हैं। अन्य बहुत से धार्मिक ग्रन्थ मुसलमान विद्वानों ने लिखे हैं। वे धर्म के मूल ग्रन्थ नहीं कहे जाते। मूलग्रन्थ 'कुरान' ही है ! इसी प्रकार ईसाईयों का मूल-ग्रन्थ "बाईविल" है। परन्तु अन्य ईसाई संतों ने बहुत से ग्रन्थ लिखे हैं जो व्याख्या या स्मृति रूप समझ जाते हैं। इसी प्रकार 'वेद' धर्म का मूलग्रन्थ है। हम यहां कुछ प्रमाण देते है :—

(१) वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद् विदाम्॥

(मनु० २।१।६)

धर्मजिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः॥

(मनु०२ ।१३)

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः॥

(मनु० २। १६८)

मनुस्मृति में लिखा है कि वेद ही धर्म का मूल है और जो वेद के जानने वाले हैं उनकी स्मृति और शील भी धर्म है। अर्थात वेद तो मूल ग्रन्थ हैं और अन्य पुस्तकें शाखा मात्र।(मनु० २।६)

जो धर्म के मर्म को जानना चाहते हैं उनके लिये वेद ही प्रमाण है। (मनु० २। १३)

जो ब्राह्मण वेद को न पढ़ कर अन्यत्र परिश्रम करता है वह जीते हुये ही अपने कुल सहित शूद्र हो जाता है।

(मनु० २। १६८)

(२) वेद प्रणिहितो धर्मो ह्यधर्मस्तद्विपर्ययः॥

(श्रीमद्भागवत स्कन्द ६, अ० १ श्लो० ४०)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नास्ति वेदात् परं शास्त्रं नास्ति मातः परोगुरः ॥
(अत्रिस्मृति १।१४८

अत्रिस्मृति का वचन है कि वेद से बड़ा शास्त्र कोई नहीं और माता से बड़ा कोई गुरु नहीं।

(४) वेदमनूच्याचार्योऽन्ते वासिन मनूशास्ति ॥
(तैत्तिरीयोपनिषन् ७। ११

आचार्य वेद को पढ़कर शिष्य को शिक्षा देता है। यह तैत्तिरीय उपनिषद् का वचन है।

(५) वेद दूषयिता यश्च वेद विक्रयकश्च यः।
आगम्य गामीयश्च स्यात ते यान्तिं सवनं द्विजः॥

जो वेद को अपमान करते और वेद की बिक्री करते हैं तथा जो बदचलन हैं नरक को पहुंचते हैं।

(६) धर्म नाशे विनष्टः स्याद् वर्णाचारोऽति वर्तितः।
अतो वेद प्रदिष्टेन मार्गेणं गच्छतां शुभम् ।

देवी भागवत का कथन है धर्म के नाश होने से वर्ण धर्म नष्ट हो जाता है इसलिये वेद के बताये मार्ग पर चलना शुभ है (देवी भागवत १।१८।४

(७) श्रुति स्मृत्युदितं धर्ममुपतिष्ठेत् प्रयत्नतः॥

श्रुति (वेद) और स्मृति में कहे हुये धर्म का यत्न पूर्वक पालन करे। (मत्स्य पुराण ५ २। १२)

(८) ते मोह मत्यवः सर्वे तथा वेदविनिन्दकाः॥
(मार्कण्डेय पुराण १०।५८

मार्कण्डेय पुराण कहता है कि वेद के निन्दक मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

(९) स साधुभिर्वहिष्कार्यो नास्तियो वेदनिन्दकः।
(भविष्यत पुराण १०।५८

जो वेद का निन्दक है वह नास्तिक है और भले पुरुष उसको अपने में न मिलावे। (भविष्य पुराण)

(१०)वेद निन्दा प्रकुर्वन्ति ब्रह्मा चारस्य कुत्सनम्।
महापातक मेवा दि ज्ञातव्य ज्ञान पंडितैः॥
(पद्म पुराण द्वितीय भूमि खण्ड ६७।४

जो वेदों की निन्दा करते हैं वे बड़े पापी हैं। (पद्मपुराण)

(११) यस्य यद् विहितं कर्म्मं वेदे शास्त्र च वैदिकैः।
तस्य तेन समाचारः सदाचारो न चेतरः॥
(वायु संहिता उत्तरार्द्ध अ० १२।१५७

वायु पुराण में लिखा है कि वेद में जिसका जो कर्तव्य बताया है वही सदाचार है अन्य नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

[illegible] वर्तते काम कारतः ।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परांगतिम् ।
तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ ।
ज्ञात्वा शास्त्र विधानोक्तं कर्म कर्तुं मिहार्हसि ।।

(गीता १६-२३,२४)

गीता में लिखा है कि जो मनुष्य वेद की विधि को छोड़, काम के वशीभूत होकर कार्य करता है उसको न सुख मिलता है न परलोक में सद्‌गति होती है। इसलिये हे अर्जुन! तेरे कर्त्तव्य, अकर्त्तव्य के निर्णय के लिये वेद ही प्रमाण है इसलिये तू वेदानुकूल कार्य कर।

नोट — यहां शास्त्र का अर्थ वेद है। अन्य कुछ नहीं। गीता भी वेदों को ही प्रमाण मानती है। हमने यहां इतने उद्धारण देकर दिखा दिया कि वेदों का बहुत बड़ा महत्व है। फिर भी यह प्रश्न हो सकता है। कि वेदों में ऐसी क्या बात है कि उनको अपना धर्म ग्रन्थ माना जाय।

सब से पहली बात यह है कि वेद में एक ईश्वर का प्रतिपादन किया है। वेद को हिन्दू (आर्य) लोग ईश्वरीय ज्ञान मानते आये हैं। परन्तु जो ऐसा नहीं मानते वह भी इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि वेद संसार में सबसे प्राचीन ग्रन्थ हैं। उस ग्रन्थ में एक ईश्वर-वाद का प्रतिपादन बताता है कि धार्मिक विषय में अब तक वद से उन्नतशील भाव कोई बताया नहीं गया। इसी प्रकार जीवन की अन्य घटनाओं जैसे एक पति भाव, एक पत्नी भाव, सामाजिक संगठन तथा अन्य उपयोगी बातों में जो उपदेश वेद का है उससे अच्छा किसी देश या किसी जाति के सुधारक ने अब तक नहीं दिया। इसीलिये ऋषि लोग वेद को सूर्य के समान प्राचीन, सूर्य के समान प्रकाशक और सूर्य के समान नित्य उपयोगी समझते रहे। ईश्वर क्या है? ईश्वरीय ज्ञान क्या है? ईश्वर अपना ज्ञान मनुष्य को कैसे देता है? यह सब ऐसे जटिल प्रश्न हैं कि इन पर मत-भेद हो सकता है। और इनका समाधान यहां नहीं किया जा सकता। परन्तु यदि इन प्रश्नों को अनुपयोगी या अनावश्यक समझ कर छोड़ भी दिया जाय तो भी आपको वेद में उन उलझनों का समाधान मिलेगा जिनको आप सांसारिक दृष्टि से लाभ का समझते हैं। यह लोगों की भूल है कि वेद केवल हवन में आहुति डालने या मन्त्र जपने की पुस्तक है। इस धारणा के कारण बहुत से बुद्धिमान और तर्क-प्रिय लोग वेदों को पण्डों, मुल्लाओं या पादरियों की पुस्तक कह कर त्याग देते हैं। उनको मालूम नहीं कि वेद के भीतर क्या कोष भरा पड़ा है।

वेद में एक विशेषता यह है कि साम्प्रदायिक झगड़ों से पाक है। उनमें किसी मनुष्य विशेष की पूजा नहीं बताई गई। आज कल जितने मत मतान्तर के झगड़े होते हैं उसका कारण इतना मौलिक सिद्धांत नहीं हैं जितना मनुष्य पूजा है। हर एक ईश्वर का प्रतिनिधि अथवा एजेन्ट बनना चाहता है। और हर एक मत के अनुयायी उसी मनुष्य को आगे रखकर चलते हैं। इसलिये झगड़े होते हैं। ईश्वर के नाम पर उतनी लड़ाईयां नहीं हुईं जितनी मुहम्मद साहब या ईसा मसीह के नाम पर हुईं। ईश्वर प्रार्थना के विषय में इतना कलह नहीं हुआ जितना मुहम्मद साहेब या ईसामसीह की कबरों को अपनाने के लिये हुआ। महात्मा बुद्ध के मौलिक सिद्धान्तों, सत्य, अहिंसा आदि के विषय में इतने मत-भेद नहीं जितना महात्मा बुद्ध की लाश को लेने या उनके दांत, या अन्य स्मरणीय अङ्ग की पूजा के विषय में हुआ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गायत्री मंत्र के ऊपर भारत वर्ष में इतना झगड़ा नहीं जितने 'ओ३म् शिवाय नमः' या 'ओ३म विष्णवे नमः' पर शैवों और वैष्णवों या कृष्ण पूजक ओर राम पूजकों में हुआ। इसका केवल एक कारण था अर्थात् मनुष्य पूजा, या मनुष्य-पूजा के झगड़े केवल एक ईश्वर पूजा से दूर हो सकते है। ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज को उपदेश दिया है कि मनुष्य को मत पूजो, ईश्वर को पूजो। यदि वह चाहते तो "ओ३म दयानन्दाय नमः" का मन्त्र चला देते। परन्तु ऐसा करना वह महापाप समझते थे। उन्होंने अपनी समाधि तक बनाने की आज्ञा नहीं दी कि कही ईश्वर के स्थान में मेरी पूजा आरम्भ न हो जाय. हिन्दुओं के परस्पर झगड़े जो पुराणों की विभिन्नता उत्पन्न करने वाली शिक्षा से उत्पन्न हुये हैं केवल वैदिक धर्म से ही दूर हो सकते हैं।

वेद ने ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्रों के चातुर्वण्य धर्म को जन्म-परक न मान कर केवल गुणाकर्मानुसार बताया है। इसके कारण आपस के जाति सम्बन्धी झगड़े और भी दूर हो जाते हैं। यह आवश्यक नहीं कि ब्राह्मण का लड़का ब्राह्मण ही हो। और न यह आवश्यक है कि चमार का लड़का चमार हो। ईश्वर की दृष्टि में सब मनुष्य बराबर हैं और समाज की दृष्टि में उन सब का एक-सा अधिकार होना चाहिये। तथा सब को उन्नत होने के लिये समान सुविधायें मिलनी चाहिये। यह उपदेश वेद ने दिया है। यों तो संसार के सभी झगड़े मिटाने और सर्वत्र भ्रातृ भाव फैलाने के लिये वेद से बढ़ कर कोई और पुस्तक नहीं परन्तु संसार भर को समझाने में देर लगेगी। हिन्दुओं का तो वेदों के साथ घनिष्ट सम्बन्ध है इसलिये हिन्दुओं को तो वैदिक धर्म को अपना लेना चाहिये। यही एक उपाय है हिन्दुओं की तङ्ग साम्प्रदायिकता दूर करने और उनको सुसंगठित करने का। जब हिन्दू जाति एक हो जायगी और एक स्वर से वैदिक धर्म का प्रचार करेगी तो मनुष्य मात्र में भ्रातृत्व उत्पन्न हो सकेगा और परस्पर के वैर छूट जायेंगे।

कुछ स्वार्थी हिन्दुओं ने उड़ा रक्खा है कि वेद अवश्य माननीय ग्रन्थ थे परन्तु केवल सतयुग के लिये। आज कल कलियुग है। कलियुग में वेदों आवश्यकता नहीं। यह बात नितान्त मिथ्या है। वेदों में कहीं नहीं लिखा कि वेद कलियुग के लिये नहीं सतयुग, त्रेता, द्वापर कलियुग तो एक दूसरे के पश्चात् आते ही रहते हैं। परन्तु इनके कारण धर्म वा धर्म पुस्तक नहीं बदल जाते। सत्य सनातन वैदिक धर्म का अर्थ ही यह है कि वेद सनातन हैं अर्थात् वे सब युगों और सब देशों के लिये उपयोगी तथा आवश्यक हैं। जिस प्रकार सूर्य प्रत्येक युग में बदलता नहीं किन्तु सृष्टि की से चला आता है। इसी प्रकार वेद बदलते नहीं, न धर्म बदलता है ईश्वर सनातन है। उसका ज्ञान भी सनातन हैं और उस ज्ञान का प्रतिपादक वेद भी सनातन है। वेद में स्वयं कहा है :—

सनातन नमेनमाहुरुताद्यस्यात् पुनर्णवः ॥
अहो रात्रे प्रजायेते अन्यो अन्यन्य रूपयोः ॥

[अथर्व १० । ८ । २३]

अर्थात सनातन धर्म वह है जो आज भी ताजा रहता है जैसे दिन और रात एक दूसरे के में नित्य आते रहते है। दिन और रात प्रवाह से अनादि हैं स्वरूप से आदि हैं। इसी प्रकार यद्यपि मनुष्य नित्य बदलता रहता है तथापि उसका धर्म एक ही रहता है। कौन कह सकता है कि सतयुग में दो और दो चार होते हैं, कलियुग

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में उन्नति करते करते पांच हो गये या अवनति करते, करते तीन रह गये। झूठ बोलना, चोरी करना, हिंसा करना सतयुग में भी गर्हित कर्म थे और आज कलियुग में भी वैसे ही हैं। ईश्वर की उपासना, सत्य, अहिंसा आदि सतयुग में धर्म समझे

जाते और कलियुग में भी उसी प्रकार धर्म समझेजाने चाहियें। इसलिये जो लोग वेदों को केवल सतयुग का धर्म मानते हैं कलियुग का नहीं, यह उनकी भूल है। कुछ लोग समझते हैं कि, एक ईश्वर-वाद सतयुग के लिये या कलियुग के लिये नहीं। कलियुग में तो अनेक ईश्वरवाद का विधान है। परन्तु वह भी ठीक नहीं। ईश्वर अखण्ड एक रस और नित्य है। वह सदा एक ही रहेगा। और उसी की पूजा करना धर्म हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि वेद में गो-वध का विधान है। वह केवल सतयुग के लिये है। कलियुग में यज्ञों में गौओं का वध करके आहुति देना वर्जित है। यह भ्रम भी वेदों का अर्थ न समझने के कारण हैं। वेदों में गो-बध या अज-वध या अविबध का विधान ही नहीं वहां तो यज्ञ को "अध्वर" कहा हैं अर्थात् यज्ञ में कभी हिंसा करनी ही नहीं चाहिये। धर्म के पथ से हट कर जब लोग वाम मार्गी हो गये और यज्ञों में पशुओं को मार मार कर डालने लगे उस समय लोगों ने कुछ पुस्तकों में मिलावट कर दी। परन्तु यह मत वेदों का न था। वेदों ने हिंसा की सदा निन्दा की है चाहे वह यज्ञ में हो या यज्ञ के बाहर। वेदों की शिक्षा के दो मूल मन्त्र यह है :—

(१) मित्रस्य या चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।

(यजु० ३०-१८)

अर्थात सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखना चाहिये।

(२)अन्यो अन्यं अभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या ॥

[अथ० ३३-७१[

अर्थात् एक दूसरे के साथ इस प्रकार बर्ताव करना चाहिये जैसे गाय अपने नवजात बछड़े के साथ किया करती है। अर्थात उन सबको अत्यन्त प्रेम और स्नेह के साथ रहना चाहिये। वेदों के विषय में बहुत से लोगों ने भिन्न-भिन्न प्रकार की कल्पनायें कर रक्खी हैं। इसका कारण यह है कि वेद का पढ़ना-पढ़ाना छोड़ दिया और लोग उनकी शिक्षा को भूल गये ;

कुछ ब्राह्मण लोग यह समझते हैं कि वेद केवल ब्राह्मणों के लिये हैं। शूद्र उनको पढ़ेंगे या सुनेंगे तो वेद अपवित्र हो जायंगे। ऐसे पंडितों की बुद्धि पर हंसी आती हैं। विद्या मूर्खों की मूर्खता, और अशुद्धों की अशुद्धता दूर करने के लिये है न कि विद्या स्वयं अपवित्र हो सके। सूर्य का प्रकाश गंदे स्थलों को साफ तो करता है परन्तु स्वयं अपवित्र नहीं हो जाता। इसी प्रकार वेद और गायत्री मन्त्र अपवित्र नहीं हो जाते। वेदों में लिखा है:—

यथेमां वाचं कल्याणी, मा वदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यताँ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च ॥

[यजुर्वेद २६।२]

ईश्वर कहता है कि जैसे मैं तुमको अपनी कल्याणकारक वेद वाणी को देता हूं उसी प्रकार तुम भी ब्रह्मणों, क्षत्रियों, वैश्यों, शूद्रों तथा नीच से नीच मनुष्य में वेद का प्रचार करो जिससे सभी का कल्याण हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitized by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आजकल दुनियां के लोग वेदों से इसलिये उदासीन हैं कि वे समझते हैं कि वेद हिन्दुओं के हैं और हिन्दू हैं दास, परतन्त्र और साम्प्रदायिक। इसलिये वेद की भी यही शिक्षा रही होगा लोग भी क्या करें ? हिन्दुओं की वर्तमान अवस्था और परस्पर कलह ने उनके प्राचीन गौरव, अति प्राचीन सत्य सनातन धर्म तथा वेदों के विषय में भी लोगों में घृणा उत्पन्न कर दी इसमें हिन्दुओं का ही दोष है। इसका प्रायश्चित्त हर एक हिन्दू को करना है। वैदिक धर्म का अवलम्बन ही यह प्रायश्चित है। ऋषि दयानन्द ने वैदिक धर्म का निचोड़ इन सूत्रों में किया है। [१]एक ईश्वर को माना [२] वेद को ही धर्म का मूल पुस्तक मानों [३] जाति पांति देश, रंग आदि की तंग सीमाओं को तोड़ कर संसार भर में भ्रातृ-भाव उत्पन्न करो [४]लोक और परलोक के बीच दीवार खड़ी मत करो। लेकिन उन्नति की अवहेलना करने से परलोक नहीं मिल सकता और न परलोक भूल कर लोक में शान्ति उत्पन्न हो सकती है यह है सच्चा स्वरूप वैदिक धर्म का। और यही धर्म मनुष्य मात्र का धर्म हो सकता है।

आप भी—आज ही

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

अपने परिवार में लाएं

कागज की भीषण महंगायी होने
पर भी हम केवल २०१) में
वेद भाष्य दे रहे हैं।

आज ही मगाएं

वेद भाष्य में ५०१) देने पर नाम
व १००१) देने पर चित्र छापा जाएगा

अध्यक्ष दयानन्द संस्थान, वेद मंदिर
पो० अलीपुर दिल्ली-३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुशीला दीदी

● बनारसीदास चतुर्वेदी

एक दिन फोन की घंटी बजी। फोन उठाते ही एक सज्जन ने कहा— "देखिए, आप क्रांतिकारियों की बातें बहुत किया करते हैं। आज आप को एक क्रांतिकारी का हाल सुनवाना है। शाम की चाय हमारे यहां रही।" फोन किया था भाई कृष्णकांत ने। कृष्णकान्त के पिता श्री लाला अचिन्तराम, संसद्-सदस्य देश के इने-गिने कार्यकर्ताओं में थे। वे लाला लाजपतराय जी के विश्वासपात्र थे और श्रद्धेय टंडन जी के खास कृपापात्र और उन्हीं के साथ एक ही कोठी में रहते भी थे। लोक सेवक समाज के सब से प्रथम सदस्य वही थे।

ठीक वक्त पर मैं पूज्य टंडन जी के निवास-स्थान पहुंचा और वहां ही मुझे सुशीला दीदी के दर्शन हुए।

सुशीला जी कृष्णकान्त की माता जी की सहेली थीं। दोनों ने साथ-साथ जालंधर कन्या महाविद्यालय में शिक्षा पाई थी।

चाय-पान के बाद बैठक जमी और दो-ढाई घण्टे तक अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद तथा शहीदे आजम भगतसिंह का गुणगान होता रहा।

सुशीला जी ने लाहौर की एक घटना सुनाई—"लाला अचिन्तराम जी की गैर-हाजिरी में मैं कृष्णकान्त की माता जी के पास पहुंची और बोली—'मेरी एक प्रार्थना है कि आप एक क्रांतिकारी युवक को अपने घर पर शरण दें।' कृष्णकान्त की माता जी ने कहा—'बिना उनसे (पतिदेव से) पूछे मैं क्या कहूं? वैसे मुझे तो कोई आपत्ति नहीं।' जब लाला जी से पूछा गया, तब उन्होंने तुरन्त ही कहा—'जब तुम्हारी सहेली ने तुम से कोई मांग की है, तब भला मैं ऐतराज करने वाला कौन होता हूं? जरूर-जरूर उस क्रांतिकारी को शरण दे दो।' इस प्रकार भैया आजाद को लाला जी के घर पर शरण मिली।"

सुशीला जी ने आजाद के कितने ही संस्मरण सुनाए। उन्होंने कहा—

"श्री रामरखसिंह सहगल ने एक मातृसेवा सदन खोल रखा था और उसमें मैं एक बहन (शायद दुर्गा देवी) के साथ रह रही थी। आजाद वहां रात के दस साढ़े दस बजे आ जाते थे, पर एक दिन उन्हें काफी देर हो गई। मैंने सहगल जी को फोन किया तो उन्होंने उत्तर दिया कि यहां से तो कभी के जा चुके हैं। उस वक्त पानी रिमझिम बरस रहा था। हम दोनों बहनें मकान की छत पर चढ़ गईं और भैया की साइकिल की प्रतीक्षा करने लगीं। साइकिलें आती थीं। पर दूसरी तरफ मुड़

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जातीथीं आ । खिर एक साइकिल हमारी कोठी की ओर मुड़ी तो हम दोनों ने जल्दी से उतर कर किवाड़ खोल दिए। भैया यह देख कर बड़े नाराज हुए और बोले—'यह नियम बन चुका है कि जब मैं साइकिल की घंटी बजाऊं, तब तुम किवाड़ खोलोगी, तो फिर तुम ने इस नियम को क्यों तोड़ा ?' भैया बड़े ही अनुशासनप्रिय थे। हम दोनों सकपका गई। कोई जवाब देते न बना। फिर भैया बोले—'और तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ कि मैं ही आया हूं ?' तब मैंने सारी कथा सुना दी। पानी बरसने के कारण हमारे सिर भीगे हुए थे। भैया ने हम दोनों के सिर पर हाथ रखा और आंखों में आंसू भर कर कहा—'अरे ! मेरी वजह से तुम दोनों को पानी में खड़-खड़े भीगना पड़ा।' भैया वैसे तो बड़े कठोर थे पर स्त्रियों के प्रति उनकी भावनाएं बहुत कोमल थीं। चरित्र के मामले में वे बड़े सावधान थे और पार्टी के लिए उनका आदेश था कि अगर कोई भी सदस्य स्त्री को बुरी नजर से देखेगा तो वह आजाद की पहली गोली का शिकार बनेगा।"

फिर सुशीला जी ने अपने निजी अनुभव की एक घटना सुनाई—

"आजाद भैया ने मुझे एक व्यक्ति के पास शरण दिला दी थी। मैंने भैया से कहा था कि यों जगह-जगह मुझे मत घुमाओ, क्योंकि मैं युवती हूं, पर उन्होने न माना। एक दिन उस आदमी ने, जिस के यहां मैं रह रही थी, एक गन्दी तसवीर मेरी किताब के बीच में रख दी। ज्यों ही मैंने किताब खोली तो वह तसवीर दीख पड़ी। मैंने तुरन्त ही किताब बन्द कर दी। हजरत वहां खड़े थे, बोले—'आपने किताब बन्द क्यों कर दी ?' मैं उस समय चुप रह गई। पर जब भैया शाम को मिलने आए, मैंने सारा क़िस्सा उन्हें सुना दिया। उसे सुनते ही भैया आगबबूला हो गए और गाली देते हुए बोले—'वह बदमाश है कहां ? अभी उसे खत्म करता हूं।' भैया का हाथ तमंचे पर था। मैं डर गई। खैरियत यह हुई कि उस वक्त वह आदमी बाहर गया हुआ था। मैंने भैया को समझाया कि इस वक्त गोली चलाने से तो सारा काम बिगड़ जाएगा। क्रोध के कुछ शान्त होने पर भैया बोले—'दीदी, बीस मिनट के अन्दर सारा सामान ले कर इस घर से निकलो।' सामान तो ज्यादा कुछ था भी नहीं और मैं तुरन्त ही तैयार हो गई। भैया मुझे सुरेन्द्र शर्मा के यहाँ ले गए।"

मैंने पूछा—"कौन सुरेन्द्र शर्मा ? वही प्रताप वाले ?" सुशीला दीदी ने बताया—"हां वही, वही।"

जब भाई सुरेन्द्र शर्मा नई दिल्ली पधारे, तब मैंने उन्हें यह किस्सा सुनाया। वे बोले—"यह घटना सोलह आने सत्य है।" मैंने तुरन्त ही सुशीला जी को फोन पर बुला कर कहा—"लीजिए, एक पुराने परिचित महाशय से बात कर लीजिए।"

आजाद ने अपनी शहादत से पहले सुशीला दीदी को एक दुशाला भेंट किया था, जो उनके पास सुरक्षित था और जिसे उन्होंने बड़े गौरव के साथ क्रान्तिकारियों की कान्फ़रैंस में शामिल होने वाले प्रतिनिधियों को दिखलाया था और उसके साथ ही उन्होंने शहीद भगतसिंह की एक फटी-पुरानी कमीज के भी दर्शन हम लोगों को कराए थे। उस कमीज का किस्सा दीदी के शब्दों में सुन लीजिए—

"जब भगतसिंह कलकत्ते गए थे तब मैं हावड़ा स्टेशन पर उन्हें लेने के लिए पहुंची। फर्स्ट क्लास में से उन्हें बिलकुल यूरोपियन पोशाक में उतरते हुए देख कर मैं उन्हें पहचान भी नहीं सकी। मैं कुछ पूछने ही वाली थी कि उन्होंने तुरन्त ही इशारे से मना कर दिया। उन्हें ले कर मैं होटल में गई और वहाँ ठहरा दिया। उन्हीं दिनों कांग्रेस का अधिवेशन होने वाला था। थोड़ी देर में क्या देखती हूं कि होटल को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुलिस ने चारों ओर से घेर लिया है। जब भगतसिंह को इसकी सूचना मिली, तब उन्हें इससे कुछ भी भय या चिंता न हुई। वे सिर्फ इतना बोले– 'मैं तो समझता था कि अभी कुछ दिन काम करने को और भी मिलेंगे, पर शायद आज आखिरी दिन है। जब जाना ही है तब पांच-सात को ले कर ही जाऊंगा।' ऐसा कह कर वे जीने के पास खड़े हो गए और पुलिस का इन्तजार करने लगे। शेर की तरह वे खड़े थे, तमंचा हाथ में था। पर मामला कुछ दूसरा ही था। पुलिस बिहार के स्वामी भवानीदयाल जी संन्यासी की तलाश में आई थी, जिन्होंने हाल में कोई राजद्रोही भाषण दिया था। तलाश करके पुलिस लौट गई। दुर्घटना होते-होते बची।"

फिर सुशीला बहन ने आगे बताया—"एक दिन भगतसिंह बाथरूम में गए। बाहर एक फटी-पुरानी कमीज टंगी हुई थी। मैंने समझा कि यह नौकर की हिमाकत है कि उसने अपना कपड़ा यहां टांग दिया है। इस लिए मैंने एक लकड़ी से उसे उतार कर दूर किसी कोने में पटक दिया। जब भगतसिंह स्नान कर के लौटे, तब बोले 'मेरी शर्ट कहां गई?' मैंने पूछा – 'कौन-सी शर्ट!' उन्होंने कहा—'वही, जो यहां—इस जगह—टंगी थी।' मैंने बनावटी क्रोध से कहा—'जनाब! वह शर्ट आपकी थी? वह तो जब्त हो गई।' भगतसिंह कुछ झुंझलाए तो मैंने कहा—'वह आपको हर्गिज नहीं मिलने की।' फिर मैं उस शर्ट को ले कर बाजार गई और उसी के नाप की कई शर्टों का आर्डर दे आई और उस फटी-पुरानी शर्ट को अपने सन्दूक में बन्द कर दिया।"

भगतसिंह के पत्रों की चर्चा करते हुए सुशीला दीदी ने बताया—"मेरे पास भगतसिंह के बहुत-से पत्र सुरक्षित थे पर एक कार्यकर्त्ता महोदय उन्हें मुझ से मांग ले गए और फिर उन्हें लौटाया ही नहीं। मुझे उन पत्रों के चले जाने का बहुत दुःख है।"

इस प्रकार शहीदों के बारे में बातचीत का सिलसिला जारी था—"कितने ही व्यक्ति स्वाधीनता-संग्राम में बलिदान हो गए, पर उनका कोई आज नामलेवा भी नहीं। एक गरीब विधवा के एकमात्र लाड़ले को पुलिस ने गोली का निशाना बना दिया, पर वह विधवा गर्वपूर्वक कह रही थी 'आज मैं अपने को सौभाग्यशाली मानती हूं कि मेरा बच्चा देश की स्वाधीनता के लिए कुर्बान हो गया।' उस वीर बालक के नाम का भी किसी को पता नहीं। और तो और आज के विद्यालयों के विद्यार्थियों को शहीदों के बारे में कुछ भी ज्ञान नहीं! हां, एकाध ने भगतसिंह का नाम सुन रखा है और किसी-किसी ने आजाद का भी। यह दशा है दिल्ली के विद्यार्थियों की।" बहन जी का कथन सर्वथा सत्य था। आल इन्डिया रेडियो में काम करने वाली एम० ए० पास एक लड़की को चन्द्रशेखर आजाद का नाम भी नहीं मालूम था। हां, बातचीत में हैराल्ड लास्की का नाम उन्होंने जरूर लिया। उन्होंने पालिटिक्स में एम. ए. किया था।

बहन जी बड़ी सहृदय थीं। एक बार मुझे ज्वर आ गया तो ६ मील दूर से वह मुझे देखने के लिए आईं। शहीद भाइयों की जो अत्यल्प सेवा—उनकी कीर्ति रक्षा के यज्ञ में—मुझ से बन पड़ी थी, उसकी वह कद्र करती थीं।

जिस दिन मैंने आजाद का दुशाला और भगत सिंह की कमीज देखी थी, मेरे मन में यही विचार आया था कि किसी भी स्वाधीनताप्रेमी देश में ये दोनों चीजें राष्ट्रीय संग्रहालय का गौरव बढ़ातीं, पर हमारे देश में इनका कोई महत्त्व ही नहीं समझता।

एक दिन अकस्मात् पढ़ा कि सुशीला दीदी चल बसीं। उनके अनुभवों को लिपिबद्ध करने की बात मैं सोचता ही रह गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitized by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चुटकुलों का पिटारा

एक सज्जन कुछ दिन के लिए बाहर गये तो अपने लड़के से कह गये कि मेरे पीछे जब भी कोई पत्र आये तो उस पर लिख रखना कि कब आया। लड़के ने कहा, बहुत अच्छा।

कुछ दिन बाद वे सज्जन वापस लौटे तो लड़के ने उनके पीछे आये सारे पत्र उनके सामने रख दिये। उन्होंने उन पत्रों को देखा तो हैरान रह गये। सभी पत्रों पर 'आज आया' लिखा था, लेकिन उनके नीचे कोई तारीख नहीं थी।

× × ×

"तुम अकेले वहाँ आंगन में क्या कर रहे हो?" पिता ने बच्चे से पूछा।

"गेंद खेल रहा हूं।"

"किसके साथ?"

"ईश्वर के साथ।"

"ईश्वर कौन?" पिता ने अबकी बार हैरान होकर पूछा, क्योंकि इस नाम का तो आसपास में कोई बच्चा रहता नहीं था।

"वही ईश्वर, जिसे भगवान् कहते हैं और जो ऊपर रेहता है।" बच्चे ने बताया।

"लेकिन वह तुम्हारे साथ गेंद कैसे खेल सकता है?" पिता जी ने और भी हैरान होकर पूछा।

"यह कोई मुश्किल नहीं पिता जी, मैं गेंद नीचे से ऊपर फेंक देता हूं और वह ऊपर से नीचे!" बच्चे ने वहीं से गेंद फेंकते हुए बताया।

× × ×

"कल शाम, मालूम है, तुम्हारे पिताजी ने मुझे कितनी गालियाँ दीं! मोहन ने सोहन को उलाहना देते हुए कहा।

"तो भाई, तुम बड़े भाग्यवान् हो!"

"वह कैसे?" हैरान होकर मोहन ने पूछा।

"क्योंकि मेरे पिता जी बड़े कंजूस हैं और देने के नाम पर कभी किसी को कुछ नहीं देते!" सोहन ने समझाया।

× × ×

एक लम्बे साहब बाजार से गुजर रहे थे। पटरी पर बैठा एक फल वाला सेब बेच रहा था। उन्होंने देखा कि सेब बड़े लाल-लाल और चमकीले हैं। चुनांचे ठहरकर फलवाले से बोले कि भाई सेब कैसे दिये हैं।

"पचास-पचास पैसे।" फलवाले ने भाव बतलाया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"पचास पैसे और इतने छोटे सेब के।" साहब ने मुंह बिचकाकर कहा।

"बाबू जी जरा बैठकर देखिये, कुतुबमीनार से तो हाथी भी बिल्ली जितना ही नजर आता है!" फलवाले ने जवाब दिया।

\+ \+ \+

एक महिला के आठ-नौ बच्चे थे। एक दिन वह उनके शोर-गुल से तंग आ गयी तो चिल्ला कर बोली—"तुम सब एक लाइन में बैठ जाओ।"

बच्चे सहमकर एक लाइन में बैठ गये, लेकिन धीरे-धीरे आपस में कानाफूसी करने लगे। इस पर महिला चिढ़ कर बोली—"इस तरह खामोश होकर बैठो कि सुई के गिरने की आवाज साफ सुनायी पड़े।"

यह सुनकर वे कुछ देर बिल्कुल चुपचाप बैठे रहे, फिर उनमें से एक बोला—"माँ, अब सुई तो गिराओ!"

\+ \+ \+

राकेश रोता-रोता माँ के पास आया और बोला—"माँ, मुझे अशोक ने मारा।"

यह सुनकर माँ गुस्से में आ गयी। बोली—"कहाँ है अशोक, चल देखती हूं उसे!"

"लेकिन वह तो अपनी माँ के साथ अस्पताल गया है। मैंने उसकी अच्छी तरह ठुकाई कर दी थी न!" राकेश ने सुबकते हुए बताया।

\+ \+ \+

एक भाषण प्रतियोगिता में बहुत से विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। विषय था 'भारत एक है।' जब कई विद्यार्थी बोल चुके तो मोटे मस्तराम का नंबर आया। वह स्टेज पर बड़े इत्मीनान से गया और माइक को अपनी तरफ करके बोला—"दोस्तो, कई साल पहले मैं पंजाब गया। वहाँ जहाँ-जहां पहुंचा तो पाया कि लोग मुझे देख-देख कर हंस रहे हैं। उसके बाद बंगाल गया, तो वहां भी यह हाल पाया। तमिलनाडु में भी यह नजारा देखा। महाराष्ट्र में भी लोग मुझे देखकर हंसने लगे। गुजरातियों को भी मेरे मोटापे पर बड़ी हंसी आयी और केरलवालों ने भी हंसकर स्वागत किया। गर्ज़ भारत के जिस हिस्से में भी मैं गया, मुझे देखकर लोग हंसी से लोटपोट हो गये। इससे यही सिद्ध होता है कि भारत एक है।"

\+ \+ \+

मालिक ने नौकर को डांटकर कहा—"जो आदमी अपनी बात दूसरों को न समझा सके उसे गधा समझो। समझे?"

"जी नहीं, सरकार!" नौकर ने जवाब दिया। □ लक्ष्मीचंद्र गुप्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिन्होंने महर्षि दयानन्द की इच्छा को पूर्ण किया

स्वर्गीय स्वामी व्रतानन्द जी

—जगदीश प्रसाद

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की इच्छा थी कि वीर-भूमि चित्तौड़ गढ़ में एक आदर्श गुरुकुल की स्थापना होनी चाहिये। एक छोटे-से बालक ने प्रो० ताराचन्द गाजरा द्वारा लिखित 'लाइफ ऑफ स्वामी दयानन्द' नामक पुस्तक में इस विचार को पढ़ा तथा आजन्म ब्रह्मचारी रहकर महर्षि की इस इच्छा को पूर्ण करने का प्रण कर लिया।

ये बालक थे स्वामी व्रतानन्द जी महाराज, जिनका बचपन का नाम ब्रह्मचारी युधिष्ठिर था। आपका जन्म ३० नवम्बर १८९२ को पंजाब के लुधियाना जिले के किला रायपुर ग्राम में लाला केदारनाथ जी थापर के यहाँ हुआ था। लाला जी एक प्रसिद्ध आर्यसमाजी व आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा गुरुकुल कांगड़ी के मन्त्री थे। आप की माता श्रीमती कृपादेवी भी एक आर्य परिवार की भारतीय संस्कृति में गहरी निष्ठा रखने वाली विदुषी महिला थीं। आपने बचपन से ही युधिष्ठिर जी में अच्छे संस्कार डाले।

ब्रह्मचारी युधिष्ठिर जी ने ६ वर्ष की छोटी उम्र में ही अष्टाध्यायी, संस्कृत वाक्य प्रबोध एवं कई वेद मन्त्र कण्ठस्थ कर लिए थे। माता पिता ने बालक को होन-हार जान गुरुकुल कांगड़ी में प्रविष्ट करा दिया।

अपने अध्ययन काल में आप आर्यसमाज की विशुद्ध शैक्षणिक प्रणाली, सामाजिक व्यवस्था और राष्ट्रीयता से ओतप्रोत विचारधारा से बड़े प्रभावित हुए तथा उसी समय ब्रह्मचर्याश्रम से सीधे संन्यास ग्रहण कर गुरुकुल स्थापित करने का विचार बना लिया।

दीक्षान्त समारोह के समय जब आपको एक प्रतिष्ठित स्नातक के रूप में विद्यालंकार की पदवी से विभूषित किया गया तो आपने गुरुदक्षिणा के रूप में अपने संकल्प को सब के सामने दृढ़ रूप से प्रकट कर दिया। आज ३० एकड़ भूमि में जो आर्य गुरुकुल इस वीर भूमि में बना हुआ है, वह इस दृढ़ संकल्प का मूर्तरूप है।

कुछ समय पश्चात् आपने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिध सभा के प्रधान स्व० महात्मा नारायण स्वामी जी सरस्वती के चरणों में बैठ कर संन्यास की दीक्षा ली। आपने शुद्धि सभा का भी कार्य किया। गुरुकुल भैंसवाल के आचार्य व मुख्य अधि-ष्ठाता पद पर सुचारू रूप से कार्य किया।

आपने अपने पुरुषार्थ के बल पर व ईश्वर के विश्वास पर माघ पूर्णिमा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१९८६ को चित्तौड़ गढ़ की पवित्र धरती पर गम्भीरी नदी के तट पर आर्य गुरुकुल की स्थापना कर दी।

आज वही गुरुकुल सम्पूर्ण भारत में प्रकाश स्तम्भ का कार्य कर रहा है तथा देश के कोने-कोने से ब्रह्मचारी आकर विद्या ग्रहण करके विभिन्न भागों में पहुंच रहे हैं।

स्वामी जी महाराज महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बतलाई शिक्षा पद्धति को मानते थे। वे सह-शिक्षा व आंग्ल भाषा के माध्यम के विरोधी थे।

विगत ५० वर्षों तक स्वामी जी गुरुकुल की प्रगति के लिए प्राणपण से जुटे रहे। लेखक को पूज्य स्वामी जी महाराज के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महासम्मेलन में मारिशस जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आप विदेशों में भी गुरुकुल खोलने का विचार रखते थे। गुरुकुल एटा के संस्थापक दण्डी स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज व आपने इस विषय में प्रारम्भिक प्रयास भी किया। यही नहीं, दाधिया (अलवर) तथा नरेला (दिल्ली) में आर्ष कन्या गुरुकुल की स्थापना कर स्त्रीशिक्षा का भी प्रबन्ध करवाया।

इस प्रकार स्वामी जी जीवन भर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की उन्नति व वैदिक धर्म प्रचार में लगे रहे। स्वामी जी की आयु इस समय लगभग ९० वर्ष की थी, किन्तु आपका मुख-मण्डल प्रातःकालीन सूर्य के समान देदीप्यमान था। लगभग २० दिन तक रोग शय्या पर रहने के पश्चात् यह महान् आत्मा १२ अक्तूबर १९८० रविवार को प्रातः ३-२५ पर अनन्त में विलीन हो गई।

हम सब का परम कर्त्तव्य है कि हम पूज्य स्वामी जी द्वारा चलाये गये कार्य को आगे बढ़ायें। हम गुरुकुल की गरिमा को उनके विचारों के अनुकूल ही बना रहने दें व उनके छोड़े हुए अधूरे कार्यों को पूर्ण करें। ●

सफलता का रहस्य

एक बार जर्मनी के एक प्रसिद्ध दार्शनिक ने स्वामी दयानन्द से कहा, "स्वामीजी, आपका बलिष्ठ शरीर और तेजस्वी मुख-मण्डल देख कर मैं बहुत प्रभावित हुआ हूं। क्या मुझे भी आप जैसा सशक्त शरीर और तेजयुक्त मुख-मण्डल प्राप्त हो सकता है?"

"क्यों नहीं! जो व्यक्ति अपने को जैसा भी बनाना चाहे, वैसा बना सकता है। हर मनुष्य अपनी कल्पना के अनुसार ही बनता-बिगड़ता है। तुम्हें सबसे पहले अपना एक लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। फिर उसको पूरा करने के लिए संकल्प और दृढ़ निश्चय करके प्रयत्न करना चाहिए।

"एकाग्र मन से किए गए कार्य एक-न-एक दिन अवश्य ही सफलता की मंजिल पर पहुंचा देते हैं। कोई भी कार्य करो, पूरे मन और एकाग्रता से करो। सफलता अवश्य ही हाथ आएगी।

—ऋषि मोहन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अफगानिस्तान राष्ट्रवाद रूस को चुनौती

—पी० के० हरिवंश

लगभग आठ महीनों से सोवियत रूस अफगानिस्तान पर काबिज है। मगर तोपों, टैंकों और जहरीली गैस से किसी देश की राष्ट्रभावना को कुचला नहीं जा सकता। इस समय अनुमानतः एक लाख रूसी सेना अफगानिस्तान में है। विद्रोही अफगान बराबर उससे लोहा ले रहे हैं। अफगानिस्तान छोटा-सा देश है, फिर भी रूस उस पर काबू नहीं पा सका है। विद्रोहियों की शक्ति बराबर बढ़ रही है। अफगान सेना आधी से भी कम रह गयी। काफी सेना या तो मारी जा चुकी है या विद्रोहियों के साथ आमिली है। भारत सहित बहुत से देशों की मांग थी कि रूस को शीघ्र ही वहां से अपनी सेनाएं हटा लेनी चाहिएं। मगर लगता यह है कि उसका ऐसा करने का इरादा नहीं है। ऐसा कूटनीतिक क्षेत्रों का कहना है।

अफगानिस्तान रूस का वियतनाम बनता जा रहा है। यह बात तो समय ही सिद्ध करेगा, परन्तु यह निश्चित-सा लगता है कि आन्तरिक और बाह्य, दोनों ही प्रकार के दबावों का उस पर कोई प्रभाव नहीं, और वह वहां डटा रहना चाहता है, हालांकि सैनिक और राजनीतिक, दोनों मोर्चों पर ही, उसे इस अभियान में धक्का लगा है। कुछ तत्वों का कहना है कि अफगानिस्तान में घुसते समय उसने अफगान चरित्र की नितान्त उपेक्षा की, यद्यपि वे जानते थे कि गत पूरी एक शताब्दी से ये लोग अपने शत्रुओं से लोहा लेते रहे हैं।

सेना की वापसी की मांग

अमरीका की तरफ से कहा गया है कि यदि रूस समझौते का इच्छुक है तो उसे अफगानिस्तान से अपनी सेनाएं बिना शर्त वापिस बुला लेनी चाहिएं। ऐसा होने पर अन्य देशों के साथ मिल कर अफगानिस्तान को तटस्थता की गारन्टी दी जा सकती है। यूरोप के देश भी इस प्रस्ताव से सहमत हैं। रूस की धारणा थी कि पश्चिमी यूरोप के देश अफगानिस्तान के प्रश्न पर पूरी तरह से अमरीका के साथ नहीं जायेंगे। ये देश अफगानिस्तान के मामले में रूस के कुछ अधिकारों को भी स्वीकृति देना चाहते थे। उनका कहना था कि यदि अफगानिस्तान में १९७९ से पूर्व की स्थिति कायम कर दी जाए, तो उसे 'तटस्थता' की गारण्टी दी जा सकती है। रूस का कहना था कि अफगानिस्तान में असुरक्षा का खतरा बढ़ रहा था, अतः उसे हस्तक्षेप करना पड़ा।

भारत ने इस मामले में न रूस के विरुद्ध और न पक्ष में कोई रुख लिया था। परन्तु हाल ही में भारत के विदेशमंत्री श्री नरसिंह राव ने मास्को से वापसी पर संसद में जो बयान दिया उसमें कहा है कि रूस ने घोषणा की थी कि रूसी सेना का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रवेश एक सीमित अवधि, सीमित उद्देश्य और सीमित स्तर पर है । इससे एशियाई क्षेत्र की स्थिरता और संरक्षण को कोई खतरा नहीं होगा। परन्तु पिछले कुछ महीनों से अफगानिस्तान से जो खबरें आ रही हैं, उनसे यही धारणा बनती है कि यह बात गलत थी और इस समस्या का कोई असैनिक हल निकाला जाना चाहिए।

जनमत रूस के विरुद्ध

संसार का जनमत रूस के विरुद्ध जा रहा है। ज्यों-ज्यों उसका ध्यान अफगानिस्तान की ओर बढ़ेगा उसके चीन और यूरोप के मोर्चे पर दुर्बलता आएगी। इसका लाभ रूस के विरोधी उठाएंगे। अतः उसने ठीक उस समय, जिस समय वैनिस में पश्चिमी देशों का शिखर सम्मेलन हो रहा था, अफगानिस्तान में अपनी सेनाओं में कुछ कमी करने की घोषणा कर दी और इस तरह यह संकेत देने का प्रयास किया कि वह अब इस समस्या पर बात-चीत के लिए तैयार है। कुछ सेनाएं अफगानिस्तान से हटा भी ली गईं। पता चला कि लगभग ११८ टैंक और दस हजार के लगभग जवानों को वापस भेज दिया गया है। रूस की इस कार्यवाही पर विश्व भर में अपने-अपने ढंग से प्रतिक्रियाएं हुई हैं। जो लोग अफगानिस्तान को स्वतंत्र देश के रूप में देखना चाहते हैं उनका यह कहना है कि प्रथम तो रूस ने अपनी सेनाएं हटाई ही नहीं और यदि हटाई है, तो यह सेना वह हैं जिसको वहां रखने से लाभ नहीं था। इसकी संख्या सात-आठ हजार से अधिक नहीं है। इस रूसी घोषणा का स्वागत केवल कुछ सोवियत समर्थक देशों ने किया। फ्रांस, युगोस्लाव, रोमानियन और भारतीयों ने इसे बड़ी सतर्कता से प्रोत्साहन दिया। वेनिस में इकट्ठे हुए राज्यों ने इसकी उपेक्षा ही की है।

रूस ने अमरीकी प्रस्ताव को रद्द करके कह दिया है कि जब तक अफगानिस्तान पर हो रहा हमला समाप्त नहीं होता, और अफगानिस्तान की सीमा के पार हो रही कार्यवाही बंद नहीं होती, तब तक रूस वहां पर डटा रहेगा। यह बात रूस उस हालत में कह रहा है जबकि अफगानिस्तान में उसकी सेना रहते हुए भी स्थिति उसके अनुकूल नहीं है। रूसी सेना को काफी प्रतिरोध और कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। अफगान सेनाओं का मनोबल गिर रहा है। प्रधानमंत्री करमाल का विरोध हो रहा है और खालिक और परचम, दोनों साम्यवादी दलों में भी गम्भीर मतभेद उभर रहे है। इतने प्रदर्शन, हड़तालें और बहिष्कार हो रहे हैं कि रूसियों ने कभी सोचा भी नहीं था।

सोवियत विफलता

अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर इस्लामो और गुटनिरपेक्ष देश रूस का घोर विरोध कर रहे हैं। इस सबके परिणाम स्वरूप रूस भारी दुविधा में है। उनकी यह आशा क्षीण होती जा रही है कि वे अपने प्रतिरोध को दबाने में सफल हो जायेंगे। उनका सशस्त्र निशस्त्र दोनों प्रकार का प्रति-रोध हो रहा है। लगभग वही हो रहा है जो वियतनाम में अमरीका के साथ हुआ था। गत सात महीनों के सेनारोहण के बावजूद रूसी अफगानिस्तान में सामान्य स्थितियां उत्पन्न करने में असफल रहे हैं।

रूस के सरकारी अखबार ,इजवेस्तिया' के सबसे बड़े टिप्पणीकार एलैकजेंडर यूवेन ने अपनी एक हाल ही की रिपोर्ट में यह स्वीकार किया है कि अफगानिस्तान में रूस की सहायता से स्थापित सरकार को अफगानिस्तान के लोगों का समर्थन प्राप्त नहीं है। उसने यह भी माना है कि अफगानिस्तान के विद्रोही किसी अन्य देश के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
नागरिक नहीं हैं। उन्हें अफगान किसानों का समर्थन प्राप्त है। बाबरक करमाल सरकार अपनी सत्ता को कायम रखने के लिए हजारों की संख्या में लोगों को जेल में डाल रही है। काबुल की एक अन्य रिपोर्ट में कहा गया है कि अफगान सैनिक विद्रोहियों को रूसी सेना और अपनी सरकार की गतिविधियों की भी सूचना देते रहते हैं। हाल ही में रूस ने बहुत-सा खाद्यान्न और कपड़ा आदि मंगवाकर उसे अफगानिस्तान के देहात में वितरित करने की योजना बनाई। परन्तु बाद में पता चला कि उसमें से बहुत सा कपड़ा और खाद्यान्न विद्रोहियों के हाथ लग गये। करमाल सरकार को अफगानिस्तानी कितनी घृणा से देखते हैं, इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि काबुल शहर में दिन दहाड़े सरकार के विरुद्ध साहित्य छाप कर वितरित किया जाता है।

अफगानिस्तान में अपनी सेनाओं में कमी की घोषणा का अर्थ यह तो नहीं किया जा सकता कि रूस अफगानिस्तान को छोड़कर जाने की तैयारी कर रहा है। बल्कि इससे यह संकेत अवश्य मिलता है कि पहले रूस इस समस्या पर किसी अन्य देश से कोई बात भी करने के लिये तैयार नहीं था। अब वह इस प्रश्न पर बातचीत की मेज पर बैठने के लिए राजी नजर आता है। नवीनतम संकेत इस अनुमान की पुष्टि नहीं करते। पश्चिमी जर्मनी के प्रधानमंत्री अपनी मास्को यात्रा में सोवियत नेताओं से इस बारे में कोई आश्वासन प्राप्त न कर सके। सोवियत नेताओं ने इस बारे में प्राय चर्चा करने से ही इन्कार कर दिया। वह अफगान समस्या पर अपनी नाराजगी प्रकट करके ही वापस लौट आये।

कुछ राजनीतिक विचारकों का कहना है कि रूस बिना अपने हितों की सुरक्षा का आश्वासन प्राप्त किये अफगानिस्तान से अपनी सेना वापस नहीं बुलायेगा। वह संसार की एक महानशक्ति है; अतः उसे अपनी प्रतिष्ठा का विचार करना ही होगा। वारसा संधि के देश भी इससे प्रभावित होंगे, और संसार के साम्यवादी दलों पर ही इसका असर हुए बिना नहीं रहेगा। अमरीका इस बात को स्वीकार करता है कि अफगानिस्तान में रूस के कुछ समुचित हित हैं। अतः उसके लिए उसे कुछ संरक्षण दिया ही जाना चाहिए।

काबुल में साम्यवादी सरकार कायम हो गयी। अब वह कितनी भी कमजोर और अलोकप्रिय हो, रूस उसे हटने नहीं देगा। रूस की यह भूल थी कि उसने अफगानी समाज में उथल पुथल पैदा करने में तनिक शीघ्रता से काम लिया। रूस इस समस्या को सुलझाने के लिए राजी हो इसके लिए दो बातें करनी होंगी। ऐसी परिस्थितियां निर्मित करनी होंगी कि वह महसूस करे कि संसार पर यह जाहिर नहीं हो रहा कि वह अफगानिस्तान से पिट कर निकल रहा है। इसका प्रभाव अनिवार्यतः उसके पूर्वी यूरोप के साम्राज्य पर पड़ेगा। वारसा संधि के देश कुछ नहीं करते, इस लिए कि वे समझते हैं कि रूस को हिलाना उनके बस का नहीं। दूसरे यह कि उसे यह गारण्टी देनी होगी कि अफ़गानिस्तान उसके प्रभाव क्षेत्र में रहेगा, चाहे वहां कैसी भी सरकार बन जाये। वह भले ही औपचारिक रूप से रूस समर्थक न हो। पश्चिमी देशों को केवल इतना ही सन्तोष होगा कि अफगानिस्तान वारसा पैक्ट के देशों की तरह सोवियत ब्लाक में नहीं होगा। अनुमान है कि अफगानिस्तान में चाहे रूस समर्थक सरकार दृढ़ बन जाए, पर एक दिन अफगान राष्ट्रवाद का अवश्य अभ्युदय होगा, जिसके परिणाम स्वरूप वह पुनः गुटनिरपेक्ष देश बन जायेगा। अतः इस तरह का कोई व्यावहारिक पग उठाये बिना अफगान समस्या हल न होगी। ●●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विदेशी मिशनरियों का खतरा

—योगेशचन्द्र शर्मा

हाल ही में पश्चिमी बंगाल की सरकार ने यह निर्णय लिया है कि वह अपने आदिवासी क्षेत्रों में काम करने वाले विदेशी संगठनों पर प्रतिबन्ध लगाएगी। स्पष्ट उल्लेख न होने के बावजूद इन विदेशी संगठनों में विशेष स्थान विदेशी ईसाई मिशनरियों का है, जो केवल बंगाल में ही नहीं, अपितु देश के अन्य अनेक आदिवासी क्षेत्रों में घुसकर, उन भोले भाले लोगों को अपने मोहजाल में फंसा कर उनमें राष्ट्रविरोधी भावनाएं डालने का प्रयत्न कर रही हैं। यह वास्तविकता है कि आज हमारे देश के पूर्वांचल में जो अशांति का वातावरण बना हुआ है और वहां के लोगों में राष्ट्रीयता के स्थान पर राष्ट्रविरोधी और स्वतन्त्र क्षेत्रीयता की जो भावना पनप रही है, उसका मुख्य उत्तरदायित्व इन विदेशी ईसाई मिशनरियों पर ही है।

अनेक जांच आयोग और समितियों ने भी अपने प्रतिवेदनों में इस तथ्य को स्वीकारा है। असम सरकार ने भी अनेक बार इन विदेशी मिशनरियों की गतिविधियों को आपत्तिजनक माना है और उस बारे में अपना विरोध व्यक्त किया है। राष्ट्र-विरोधी हरकतों के कारण ही विभिन्न राज्यों ने अनेक विदेशी पादरियों को अतीत में अपने यहां से निष्कासित किया है, जो स्थिति की गम्भीरता का परिचायक है।

इस शताब्दी के प्रारम्भ में यह सामान्य मान्यता थी कि अंग्रेजी साम्राज्य को जहां भी अपना प्रसार करना होता है, वहां पर वह पहले अपने मिशनरियों और धर्म प्रचारकों को भेजता है, जो साम्राज्य प्रसार के लिए आधार भूमि तैयार करते हैं। इसमें समय कुछ अधिक लग सकता है, मगर यह व्यवस्था साम्राज्य को अधिक स्थायी और मजबूत बनाती है। नियन्त्रण के उपरांत भी साम्राज्य को स्थायी बनाने के लिए यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती थी। भारत में भी लगभग ऐसा ही सब कुछ हुआ। धर्म प्रचारकों को आदिवासी क्षेत्र अपने लिए अधिक अनुकूल प्रतीत हुए, जहां के अशिक्षित और निर्धन व्यक्तियों को वे सहज ही चिकित्सा या मुफ्त भोजन आदि की सुविधा देकर अपने मोहपाश में बांध सकते थे। इसलिए भारत में अंग्रेजी सरकार ने इन पिछड़े हुए इलाकों पर हमेशा ही अपना विशेष ध्यान दिया और भारत के लिए बनाये गये विभिन्न कानूनों में इन्हें गवर्नर या गवर्नर जनरल के विशेष अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत रखा। देश से अपना बोरिया-बिस्तर समेट लेने के बाद भी अंग्रेजी सरकार अपने इन धर्म-प्रचारकों को हमारे यहां छोड़ गयी, जो नासूर के समान हमें निरन्तर सालते रहे हैं। भारतीय संविधान की धारा २५(१) में नागरिकों को अपने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इच्छानुसार धार्मिक मत रखने और उसके प्रचार प्रसार के लिए प्रयत्न करने की निर्बाध आजादी दी गई है। इन विदेशी मिशनरियों ने संविधान की इस धारा का भरपूर लाभ उठाया और धर्म की आड़ लेकर हमारे यहां निरन्तर राष्ट्रविरोधी गतिविधियों को प्रेरित किया है। धर्म की आड़ में ही अनेक विदेशी प्रचारकों ने हमारी केन्द्रीय और राज्य सरकारों को भी लम्बे समय तक अंधकार में रखा है। नागालैंड में विद्रोही नागाओं से बातचीत करके शांति स्थापित करने के लिए जो आयोग बनाया गया था, उसमें एक विदेशी पादरी स्काट का विशिष्ट स्थान था। बाद में मालूम हुआ कि यह पादरी एक ओर तो शांति मिशन में केन्द्रीय सरकार के एक समर्थक के रूप में कार्य करता था, और दूसरी ओर, अन्दर ही अन्दर, विद्रोही नागाओं को और अधिक कठोर रुख तथा राष्ट्रविरोधी कार्यों के लिए प्रेरित भी करता था। मगर जब तक इस तथ्य की जानकारी मिली, तब तक काफी विलम्ब हो चुका था। नागालैंड की समस्या काफी गम्भीर और विषम हो चुकी थी। तब पादरी स्काट को न केवल शांति प्रयत्नों से अलग किया गया, अपितु उसे देश से निष्कासित भी किया गया। आदिवासी क्षेत्रों के लोगों को राष्ट्र विरोधी कार्यों के लिए उभारने में एक अन्य पादरी फरेर की गतिविधियां भी काफी चर्चित रही हैं। इस क्रम में और भी अनेक व्यक्ति प्रमुख रहे हैं, जिनकी चर्चाएं हुई हैं और इनमें से अनेक को देश से निष्कासित किया गया है।

इस समय हमारे देश में विदेशी मिशनरियों की कुल संख्या लगभग ६॥ हजार है। इनमें से लगभग ढाई हजार राष्ट्रमंडलीय देशों की हैं, और लगभग चार हजार अन्य देशों की। इनके अतिरिक्त हजारों की संख्या में ऐसी मिशनरियां भी हैं, जो विदेशी न होते हुए भी इन विदेशी संस्थाओं सम्बन्धित हैं और इनक निर्देश में काम करती हैं। इन विदेशी ईसाई मिशनरियों को खुले रूप में लगमग ७०-८० करोड़ रुपये विदेशों से प्राप्त होते है।

विदेशी धन

सन् १९६७ में अकेले अमरीका ने ही लगभग ५४ करोड़ रुपए इन मिशनरियों को दिये थे। इसके अतिरिक्त भी चोरी-छुपे काफी धन इन संस्थाओं को विदेशों से प्राप्त होता है, जिसके बारे में निश्चित अनुमान लगाना कठिन है। स्पष्ट ही विदेशी सरकारें यह धन किसी परोपकार या समाज सेवा के लिए व्यय नहीं करतीं। अपितु इस धन के साथ उनके निहित स्वार्थ भी हमारे यहां आकर डेरा डाल लेते हैं। विदेशों से प्राप्त इस धन से, ये मिशनरियां, अस्पताल तथा शिक्षण संस्थाएं संचालित करती हैं और कुछ अनाथालय आदि भी चलाती हैं। मुख्य बात यह है कि इन अस्पतालों में देशी चिकित्सा-पद्धति के स्थान पर विदेशी चिकित्सा-पद्धति को अपनाया जाता है और शिक्षण संस्थाओं में केवल अंग्रेजी का बोल-बाला होता है। आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा तथा चिकित्सा के दोनों ही कार्य अक्सर निःशुल्क होते हैं। इससे लोग सहज ही इन विदेशियों के चंगुल में फंसते चले जाते हैं। लगभग एक दशक पूर्व विश्व हिन्दू परिषद् ने भारत में इन विदेशी ईसाई मिशनरियों के बारे में आंकड़े प्रकाशित किये थे। उन आंकड़ों के अनुसार इन प्रचारकों ने भारत को ६७ क्षेत्रों में बांट रखा है तथा ५४ देशों के धर्म-प्रचारक यहां कार्य करते हैं। इन मिशनरियों के अधीन भारत में ४,८७७ प्राथमिक शालाएं, १,२२८ मिडिल स्कूल, ८८९ उच्च विद्यालय, ५९ महाविद्यालय, ४२६ छात्रावास, ७०७ अस्पताल, ५५४ अनाथालय, ९,७२७ पादरी, २,५०० महिला

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म प्रचारक तथा ५७ धर्म-प्रचारक प्रशिक्षणालय कार्य कर रहे हैं। निश्चित ही अब तक इन आंकड़ों में काफी वृद्धि हुई होगी, जो हमारे लिए चिन्तनीय है। ईसाई मिशनरियों के अतिरिक्त, ३६ विदेशी मुसलमान धर्म-प्रचारकों का उल्लेख भी उपर्युक्त आंकड़ों में किया गया था। ये विदेशी धर्म-प्रचारक और मिशनरियां किस प्रकार भारत में राष्ट्र विरोधी कार्यों में लिप्त रहती हैं, इस तथ्य को तो भारत के राष्ट्रवादी गिर्जाघर के लाट पादरी जे. एस. विलियम ने भी इन शब्दों में स्वीकारा है 'ये चूहे काले कपड़ों में छुप कर अपने विदेशी प्रभुओं के लिए भारत की जासूसी कर रहे हैं।'

कुछ राज्यों में प्रतिबंध

उड़ीसा मध्यप्रदेश तथा अरुणांचल प्रदेश में इन विदेशी मिशनरियों पर पहले से ही कुछ प्रतिबन्ध लगे हुए हैं। अब पं० बंगाल में लगाये जाने वाले सम्भावित प्रतिबन्धों से नियन्त्रित क्षेत्रफल में कुछ वृद्धि होगी। मगर इससे समस्या के स्थायी समाधान की कोई संभावना नहीं। हमारा पिछला अनुभव बतलाता है कि जब इन विदेशी मिशनरियों या धर्म-प्रचारकों पर किसी राज्य में प्रतिबंध लगाया जाता है तो वे पड़ोस के दूसरे राज्य को अपना अड्डा बना लेते हैं और अपने स्थानीय एजेण्टों के माध्यम से अपना कारोबार चलाते रहते हैं। इसलिए समस्या के समाधान हेतु केन्द्रीय सरकार के द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर इस दिशा में कोई ठोस कार्य किया जाना चाहिए। सन १९६७ में यह प्रश्न जब संसद में उठाया गया था तो उस समय गृह मंत्रालय की ओर से यह आश्वासन दिया गया कि सरकार विदेशी मिशनरियों के भारतीयकरण करने पर विचार कर रही है। मगर तब से अब तक इस दिशा में कोई ठोस कार्य हुआ नहीं। जनता शासन के समय पर, संसद सदस्य श्री ओमप्रकाश त्यागी ने इस संबंध में अपना एक निजी विधेयक, 'धर्म स्वतंत्रता राजनीतिक क्षेत्रों में काफी अधिक विवाद चला। केन्द्रीय सरकार के कुछ वरिष्ठ सदस्यों ने विधेयक का करते विरोध हुए यह मंशा जाहिर की कि इस विषय पर नये सिरे से और संशोधित रूप में सरकारी विधेयक प्रस्तुत किया जाय। मगर सरकारी दल के आपसी अन्तर्विरोध के कारण यह विचार भी क्रियान्वित नहीं किया जा सका।

वस्तुस्थिति यह प्रतीत होती है कि विदेशी ईसाई मिशनरियों पर प्रतिबन्ध लगाने की तीव्र इच्छा के बावजूद हमारे राजनेता उसकी क्रियान्विति से केवल इसलिए संकोच कर रहे हैं कि इस कार्य से उन्हें देश के डढ़ करोड़ ईसाइयों के मतों से कही हाथ न धोना पड़े। मगर यह आशका निर्मूल है। कोई भी निष्ठावान ईसाई विदेशी मिशनरियों की राष्ट्र विरोधी गतिविधियों का समर्थन नहीं कर सकता। इन दिनों हमारे देश के पूर्वांचलपर हालात जिस तेज से विगड़ते जा रहे हैं और उस बिगाड़ में इन मिशनरियों का जो निश्चित हाथ प्रमाणित होता जा रहा है, उसे देखते इस दिशा में कोई भी विलम्ब हमारे लिए आत्मघाती होगा।

फिर बात केवल पूर्वांचल की ही नहीं हैं। देश के अन्य अनेक क्षेत्रों में भी, मुख्यतः आदिवासी क्षेत्रों में, इन विदेशियों की घुसपैठ निरन्तर बढ़ती जा रही है। ऐसी स्थिति में, राष्ट्रीय स्तर पर विदेशी ईसाई मिशनरियों को प्रतिबन्धित किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। सविधान के अन्तर्गत दी गयी स्वतन्त्रता केवल स्वदेशियों के लिए ही हो सकती है, विदेशियों के लिए नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्रविरोधी कार्यों में संलग्न विदेशी पादरियो भारत छोड़ो

सत्यज्ञान का सूर्य उगा है
उदय हुआ है स्वर्ण विहान,
रह न सकेगा आर्य देश में
ईसाई मत का अज्ञान॥

यहां पर एक और बात स्पष्ट कर देना आवश्यक है। यह प्रतिबन्ध लगा देने से निश्चित ही समस्या के समाधान में हमें सहायता मिलेगी। मगर केवल प्रतिबन्ध लगा देने से ही सब कुछ नहीं हो जाएगा। हमें उन कारणों को भी दूर करना होगा जिनकी वजह से हजारों लाखों मील दूर से आने वाले ये विदेशी धर्म प्रचारक हमारे अपने स्वदेशी बन्धुओं को हमसे दूर करके पराया बना देते हैं। स्पष्ट ही वे मुख्य कारण हैं अशिक्षा, गरीबी और और भयानक सामाजिक भेदभाव। हमें युद्ध स्तर पर आदिवासी तथा पिछड़े क्षेत्रों में राष्ट्रीय शिक्षा का प्रसार होगा तथा अनेक छोटे-बड़े उद्योगधन्धों का प्रसार करके भुखमरी और गरीबी का मूलोच्छेदन करना होगा।

सामाजिक भेदभाव

इसके साथ ही देश में सामाजिक भेदभाव की भावना को समाप्त करके सब में एकता और भाईचारे की भावना भरनी होगी, जिससे आदिवासी क्षेत्रों के लोग अपने को अलग-थलग रखने की भावना को त्याग सकें। यह कार्य, आरक्षण या अन्य किसी वैधानिक व्यवस्था के द्वारा पूरा नहीं हो सकता। विभिन्न नीतियों को एक-दूसरे के विरुद्ध उभारने से भी यह उद्देश्य पूरा नहीं होगा। इसके लिए तो हमें एक ओर जहां राष्ट्रीय दृष्टिकोण की शिक्षा का प्रसार करना होगा, वहां दूसरी ओर प्रचार के विभिन्न साधनों तथा आपसी सपर्क के द्वारा भी सामाजिक भेदभाव की भावना को निर्मूल करना होगा। यदि हम अपने देश के पिछड़े हुए लोगों को भली-भांती शिक्षित कर सकें ओर उनकी रोजी-रोटी की समस्या को हल कर सकें तो निश्चित ही भविष्य में वे न तो किसी विदेशी की चाल के शिकार हो सकेंगे और न उन्हें किसी प्रकार के विशेष संरक्षण की आवश्यकता होगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुरादाबाद का साम्प्रदायिक दंगा

—रामनिवास एम०, ए० एल० एल० बी०, वेद मन्दिर नई दिल्ली-३६

मुरादाबाद पीतल के कलात्मक बर्तन-उद्योग के लिए विश्व-भर में प्रसिद्ध रहा है और आज भी है। लेकिन गत् १३ अगस्त. ८० को मुरादाबाद की प्रसिद्धि का कारण कुछ, और ही था —नगर में ईद के दिन ईदगाह के मैदान से ही साम्प्रदायिक हिंसा की एक तेज लहर उठ खड़ी हुई थी।

देश-विभाजन के समय ऐसा लगता था कि साम्प्रदायिक दंगे इस बंटवारे के साथ ही समाप्त हो जायें गे। लेकिन यह कल्पना यथार्थ का रूप न ले सकी और एक दशक की खामोशी के बाद साम्प्रदायिक शक्तियां फिर से अपने आपको संगठित करने में जुट गईं। इस बार उत्तर की बजाय दक्षिण को गतिविधियों का केन्द्र बनाया गया और केरल में मुस्लिम लीग का पुर्नजन्म हुआ। धीरे धीरे मुस्लिम लीग केरल की राजनीति में एक शक्ति बन गई। १९७१ में कांग्रेस (सत्तारूढ़) ने मुस्लिम लीग से चुनाव समझौता करके राष्ट्रीय स्तर पर उसे प्रतिष्ठा प्रदान करायी। देश की बहुसंख्यक जनता जो अपनी उदारता के लिए जानी जाती रही है, इस ओर से सदैव की भांति उदासीन बनी रही। इस उदासीनता और सरकारी छत्र छाया का लाभ उठाकर साम्प्रदायिक शक्तियां सारे देश में अपने पांव पसारने और शक्ति-संग्रह करने में लगी रहीं। यह प्रकिया निर्बाध रूप से आज भी जारी है। मुरादाबाद, सम्भल, रामपुर, बिजनौर और अलीगढ़ आदि के दंगे इसी प्रक्रिया की परिणितियां हैं।

देश में जो भी मुस्लिम-आबादी-बहुल-क्षेत्र हैं वे साम्प्रदायिक दंगों के लिए सदैव ही उर्वरा-भूमि साबित होते रहे हैं। मुरादाबाद भी इसका अपवाद नहीं है। यह जिला सन् १८७१ से ही साम्प्रायिक संवेदन-शीलता के लिए सुपरिचित रहा है। पीतल के बर्तन बनाने के उद्योगों का ज्यों-ज्यों विकास होता जा रहा है। त्यों-त्यों विदेशों को निर्यात में वृद्धि हो रही है और उसी अनुपात में श्री ओर समृद्धि की छाया मुरादाबाद को अपने अंचल में समेटती जा रही है। इस उद्योग में लगे अधिकांश मालिक और कारीगर मुसलमान हैं, इसलिए विकास का अधिक लाभ भी उन्हें ही मिल रहा है। अधिकांश व्यापार तेल-उत्पादक अरब देशों के साथ होता है। आंकड़ों के अनुसार लगभग ९० करोड़ रुपये के वार्षिक व्यापार में लगभग २५ करोड़ रुपया अरब देशों से आता है। इस ९० करोड़ रु० के वार्षिक व्यापर में गैर-मुस्लिम व्यापरियों का हिस्सा मात्र दो करोड़ रु० है। इससे एक बात तो प्रकट है ही कि "पैट्रो;डालर" मुरादाबाद' में खूब जोर-शोर से आ रहा है। अतः जब कुछ लोग यह कहते हैं कि साम्प्रदायिक दंगों में इस "पैट्रो-डालर" की भी एक भूमिका रही है तो यकायक' इस बात पर अविश्वास करना कठिन लगता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुरादाबाद के आस-पास के जिलों बिजनौर व रामपुर आदि में भी मुस्लिम आबादी काफी संख्या में है और इस पूरे क्षेत्र में साम्प्रदायिक तनाव पैदा हो जाने की आशंका बराबर बनी रहती है। अतः अचानक पैदा हो जाने वाली किसी भी स्थिति से कुशलता-पूर्वक निपट सकने के लिए उ०प्र० के तत्कालीन मुख्यमंत्री और वर्तमान केन्द्रीय योजना मंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी ने सन् १९७६ में इन तीनों जिलों को मिलाकर मुरादाबाद कमिश्नरी का निर्माण कर दिया था। लेकिन जनता सरकार के गठन के पश्चात स्थिति पूर्ववत् कर दी गई थी। अब १३ अगस्त, ८० के पश्चात् लागातार होते रहे भीषण दंगों के बाद उ०प्र० सरकार ने मुरादाबाद और इसके आस-पास के जिलों को मिलाकर पुनः मुरादाबाद कमिश्नरी का निर्माण किया है। यदि १३ अगस्त ८० को भी मुरादाबाद एक साधारण जिला न होकर एक कमिश्नरी होता तो सभी उच्चाधिकारी मौके पर उपस्थित रहे होते और ईदगाह के मैदान से शुरू हुए साम्प्रदायिक जुन से कारगर तरीके से निपटा गया होता।

मुरादाबाद का ईदगाह का मैदान काफी बड़ा होने के बावजूद ईद के दिन नमाजियों से खचाखच भर जाता है। इस बार भी ऐसा ही था। कुछ लोग अपने बच्चों को भी साथ लाये थे। विभिन्न पार्टियां और स्वयंसेवी संगठनों के कैम्प हमेशा की भाँति लगे थे। अमन कमेटी के कैम्प में सभी प्रमुख अधिकारी और नगर के प्रमुख नागरिक उपस्थित थे। नमाज अदा की जा चुकी थी और शहर इमाम खुतबा की तैयारी कर रहे थे। अचानक नमाजियों के बीच सुअर घुस जाने का शोर हुआ और भगदड़ मचने लगी। देखते-देखते अतिरिक्त जिलाधिकारी की रैन्क के एक अधिकारी श्री डी०पी० सिंह कई अन्य अधिकारी, कई थानाध्यक्ष और अनेकों सिपाही धराशायी कर दिये गये। स्थिति नियन्त्रण से बाहर होते देख जिलाधिकारी ने पुलिस व पी० ए०सी० को जो अभी तक मूक-दर्शक बनी हुई थी गोली चलाने का आदेश दिया। पुलिस व पी० ए० सी० ने गोली चलाने से पहले आंसू गैस के गोले छोड़े लेकिन उनका कोई प्रभाव नहीं हुआ। भीड़ एकदम हिंसा पर उतारू हो गई थी, उस पर गोली चलाये बिना नियन्त्रण स्थापित नहीं किया जा सकता था। मजबूर होकर गोली चलाई गई लेकिन क्या इससे स्थिति नियन्त्रित हुई? सारे शहर में आगजनी और छुरेबाजी का दौर शुरु हो गया। जहां भी कोई बाल्मीकि, अन्य हिन्दू व पुलिस वाला दिखाई देता ईदगाह से लौटी भीड़ के कुछ सिरफिरे लोग उन्हें मौत के घाट उतार देते। पुलिस चौकियों और थानों में आग लगाई गई और हथियार लूटे गये। मुरादाबाद के दंगों के बाद' अलीगढ़, इलाहाबाद, वाराणसी, दिल्ली, पीलीभीत, बरेली मऊ, सम्भल और चंदोसी आदि में दंगे हुए। खुलकर विदेशी और देशी हथियारों का प्रयोग किया गया। पुलिस व पी०ए०सी० पर सर्वत्र आक्रमण किये गये। विभाजन के दिनों की 'सीधी कार्यवाही '[डायरेक्ट एक्शन] की याद ताजा करा दी गई।

इतना सब कुछ होने के बावजूद भी जिन्होंने यह सब किया उन पर कोई प्रमुख राजनैतिक दल उंगली उठाने वाला नहीं है। हमारे चुनावों के वर्तमान ढ़ांचे में इस तथाकथित अल्पसंख्यक समुदाय के वोट काफी मूल्यवान हैं और कोई भी इन्हें थोक-भाव में प्राप्त करने के लिए ललचाया रहता है।

मुरादाबाद' में उ०प्र० मुस्लिम लीग के अध्यक्ष डा० शमीम को गत् विधान-सभा चुनावों में मात्र तीन हजार वोट मिले थे। भाजपा के डा० हंसराज, जो आर०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एस०एस० के प्रदेश-स्तर के नेता हैं, को तेरह हजार वोट मिले। और कांग्रेस (इ) के श्री मौहम्मद सद्दीक छब्बीस हजार वोटों से विजयी रहे। इन आंकड़ों से प्रकट होता है कि मुरादाबाद की बहुसंख्यक' जनता 'साम्प्रदायिक नहीं कही जा सकती। फिर, साम्प्रदायिकता का यह नग्न ताण्डव क्यों देखने को मिला? इसका कारण वह मानसिकता है जो पिछले तैंतीस वर्षों में मुसलमानों में मजबूती से पैदा कर दी गई है —यह मानसिकता है अपने को आम देशवासी से अलग समझने की। इसी कारण आम मुसलमान राष्ट्रीय मुसलमान को वोट देने पर भी लीग को भुला नहीं पाता है और जरा सी उत्तेजना पाते ही उसका स्वरूप विशुद्ध सांम्प्रदायिक हो जाता है।

साम्प्रदायिक दंगे पूरे राष्ट्र के माथे पर एक कलंक हैं। मुसलमानों के लिए तो और भी बड़ा कलंक क्योंकि उन्होने अशफाकउल्ला खां और अब्दुल हमीद जैसे शहीद पैदा किये हैं। यदि मुसलमानों के साथ भारत में भेदभाव बरता गया होता तो क्या यहां राष्ट्रपति जैसे सर्वोच्च पद पर दो-दो बार मुसलमान पहुंच पाते और क्या आज वायु-सेनाध्यक्ष' एक मुसलमान हो पाता। अतः मुसलमानों को 'इस्लामी साम्राज्यवाद' के भ्रामक नारे में नहीं आना चाहिए और भारत को ही अपना जीने और मरने का स्थान समझ कर चैन से अपने हिन्दू भाइयों के साथ रहना चाहिए। इसी में उनका और देश का, दोनों का भला है।

भौगोलिक शब्दों की विवेचना एवं भूगोल संबन्धी जानकारी

[१] अक्षांश रेखाएं—[पृथ्वी के गोलाकार होने के कारण उनकी आकृति गोल बनाई जाती है] मानचित्र पर काल्पनिक रेखाएं जो पूर्व से पश्चिम की ओर खींची जाती हैं, उन्हें अक्षांश रेखाएं कहते हैं। पृथ्वी के मध्य जो खीची जाती हैं, उसे भूमध्यरेखा कहते हैं इस रेखा से प्रत्येक ध्रुव ९० अंश की दूरी पर है। इस रेखा से उत्तर की ओर वाली रेखाएं उत्तरी अक्षांश और दक्षिण की ओर वाली रेखाएं दक्षिणी अक्षांश रेखाएं कहलाती हैं। ये रेखाएं उत्तर और दक्षिण की ओर छोटी होती चली जाती हैं। अन्त में ९०अंश पर बिन्दु मात्र ही रह जाती हैं। २३½ अंश उत्तर की अक्षांश रेखा कर्क रेखा और २६½ अंश दक्षिण की अक्षांश रेखा मकर रेखा कहलाती हैं।

[२] **देशान्तर या मध्यान्ह रेखाएं**—जो रेखाएं उत्तरी ध्रुव से दक्षिण ध्रुव तक अर्थात् उत्तर से दक्षिण की ओर खींची जाती हैं उन्हें देशान्तर रेखाएं कहते हैं। एक देशान्तर रेखा को शून्य अंश की कल्पना कर ली है। यह रेखा लंदन के निकट ग्रीन विच शहर से होकर जाती है।

अतएव उसको ग्रीनविच की देशान्तर रेखा कहते हैं। इसको प्रधान मध्यान्ह रेखा (Prime Meridion) भी कहते हैं। जो रेखाएं इस रेखा से पूर्व की ओर हैं उनके पूर्वी देशान्तर रेखाएं और जो पश्चिम की ओर हैं उनको पश्चिमी देशान्तर रेखाएं कहते हैं। ये ग्रीनविच रेखा से १८०° पूर्व और १८०° पश्चिम की ओर खींची जाती हैं। 'मध्यान्ह' शब्द का अर्थ दोपहर है। जब एक मध्यान्ह रेखा के ठीक ऊपर सूरज चमकता है तो उन सब स्थानों पर दोपहर हो जो उस मध्यान्ह रेखा पर स्थित हैं। इसी कारण इन रेखाओं का नाम मध्यान्ह पड़ गया है। ये सब ध्रुवों पर ठीक एक स्थान पर मिल जाती हैं।

—आर्य वृजेश चन्देरी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—राधेश्याम आर्य

छोड़ो देश हमारा

ईसा के चेलों ने आकर
भारत में कुहराम मचाया।
लोभ-जाल में हमें फंसाकर
अनाचार का पथ दिखलाया ।।

ज्योतिर्मय भारत में तुमने।
दूषित अपना पाँव पसारा।
छोड़ो मधुमय देश हमारा ।।

राम कृष्ण की यह धरती है
त्याग तथा बलिदानों की।
ऋषि-मुनियों की वसुन्धरा यह—
भू है दिव्य महानों की ।।

तिमिराश्रित भौतिक संस्कृति से
फैला रहे गहन अंधियारा।
छोड़ो मधुमय देश हमारा ।।

अपौरुषेय वेदों की भू पर
बता बाइबिल की बातें।
भारत की भोली जनता पर
करते मिथ्या प्रतिघातें ।।

हटो ! विदेशी पादरियों तुम !
आर्य रक्त ने ललकारा।
छोड़ो मधुमय देश हमारा ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—कुमारी ऋचा

भारत का विकास केवल अध्यात्म से ही सम्भव है।

पूज्य गुरुजनों और प्रिय भैया बहिनो,

लखपति वाप की बेटी रीता ने गले में फाँसी लगाकर आत्महत्या कर ली" "कृषि वज्ञानिक द्वारा आत्महत्या" "जहरीली शराब पीने से ५० मरे" फर्जी दवाई का कारखाना पकड़ा गया"।

भाइयों, आप कोई भी अखवार उठाकर देख लीजिए आपको ये शीर्षक देखने को मिल जाएंगे। ये सब बातें हमारे देश के पतन के अलग-अलग प्रकार दर्शाती हैं।" अध्यक्ष की अनुमति से मैं अपने विपक्षी भाइयों से निवेदन करना चाहूंगी कि वे जासूसी बाल उपान्यासों की वजाय कभी अखबार पढ़ने का कष्ट भी उठाएं। विज्ञान-विज्ञान-विज्ञान आखिर इसमृग मरीचिका के भुलावे में हम कहाँ पहुंचाना चाहते हैं, अपने देश को?

मैं यहाँ स्पष्ट कर देना चाहूंगी कि दिए गए विषय में विज्ञान शब्द का अर्थ किसी विषय के व्यवस्थित व तर्क पूर्ण ज्ञान से नहीं है। अगर ऐसा माना जाए तव तो अध्यात्म ही सम्पूर्ण विज्ञान है किन्तु यहां विज्ञान का आशय— "ये चौवीसों घण्टे घरघराती मशीनों, के वातावरण में विषैला धुआँ और अवशेष पदार्थ छोड़ते कल-कारखानों से है। विपक्षी भाई तो उनकी मोटर फ्रिज, टेलीवीजन, रेल, हवाई जहाज को ही विज्ञान मान रहे हैं। मैं एक सीधा सवाल अपने भोले भाइयों से पूछना चाहूंगी कि जिस की वकालत आप कर रहे हैं—वह किसलिए है? आप कहेंगे अपने शरीर के लिए। मैं पूछती हूं शरीर किसलिए है? शरीर को संचालित कौन कर रहा है? शायद आपके पास कोई सटीक जवाब नहीं होगा किन्तु ये वे बुनियादी सवाल हैं कि जिन पर किसी राष्ट्र का विकास या विनाश निर्भर करता है। हर राष्ट्र की अपनी एक चिन्तन-श्रृंखला होती है जो उसकी जीवनी-शक्ति हुआ करती है और इसके पीछे उस देश का इतिहास, संस्कृति, भौगोलिक परिस्थितियां, सामाजिक मनोविज्ञान होते हैं।

जैसे योरोप शीत कटिबन्ध वाले देशों का चिंतन आत्मरक्षा व शारीरिक सुविधाओं के विकास के लिए बाहर के भूभागों पर आधिपत्य का का चिंतन रहा, अमेरिका भी इसी में शामिल है। पानी-फसल-जंगल-पेड़ों का दर्शन भी मुश्किल से कर पाने के कारण अरब देशों की अपनी संस्कृति बनी—एशिया के भू-भाग, चीन, फिलिस्तीन और भारत का चिंतन सर्वथा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परे रहा । सम्पन्न और सर्वोत्तम जलवायु वाले भू-भाग भारत पर ही मनुष्य जाति उत्पन्न और विकसित हुई और वेदों का प्रकाश भी यहीं के ऋषियों के हृदयों में हुआ । क्या मेरे विपक्षी भाई भूल गए कि जब भारत आध्यात्मिकता के उच्चतम शिखर पर था तब वह जगद्गुरू था, सोने की चिड़िया था, ह्वेन चाँग और मेगस्थनीज जैसे पर्यटकों ने लिखा है कि अगर स्वर्ग की कोई कल्पना साकार हो सकती है तो वह भारत है, अगर संसार में कहीं सुख है तो "आध्यात्मिकता की जननी" भारत में है ।

भाइयो, इतिहास की अच्छाइयों से ही किसी राष्ट्र का विकासशील और उज्जवल वर्त्तमान बन सकता है । मैं अपने विपक्षियों को बता देना चाहूंगी कि आध्यात्मिकता का अर्थ हिमालय की कन्दराओं में घुसकर छुप जाना नहीं हैं – वेद तो कहता है—"कर्मण्ये वेह कर्माणि जिजिविषेच्छत समा" । सत्कार्य करते हुए सौ से भी ज्यादा साल जीने की इच्छा कर । आध्यात्मिकता तो मनुष्य में उन उदात्त मानवीय मूल्यों के उदय होने का नाम है जिससे हम अपना और दूसरों का कल्याण करते हैं ।

मैं मानतो हूं कि आज देश में भुखमरी है, बेरोजगारी है, गरीबी है, किन्तु इस ा निदान विज्ञान या औद्योगिकीकर· की बात शुरू की तब से पांच पंचवर्षीय योजनाएं पूरी हो चुका हैं किन्तु इससे तो बिड़ला की संपत्ति बढ़ी है, टाटा और मफतलाल की पूंजी बढ़ी है, देश के चौदह बड़े घरानों के पास दो तिहाई पूंजी है और आधे से ज्यादा लोग गरीबी की सीमा से भी नीचे हैं. यानी उन्हें बीस रुपए महीना भी नहीं मिल पाता ।

मैं पूछती हूं आज उद्योगपति का चरित्र ज्यादा भ्रष्ट है जबकि ज्ञान के प्रकाशन हमारे ये सच्चरित्र अध्यापक गण किस तरह अपना गुजारा चलाते हैं, वे हा जानते हैं ।

विज्ञान हमें क्या दे रहा है—ये नग्नता, ये धूं-धूं करके जल रहे विद्या मन्दिर, ये अध्यापकों को छुरा घोंपते छात्र, ये नग्न डिस्कोथेक, ये थिरकते कबरे— बेइमानी, भ्रष्टाचार, मानसिक संत्रास बीमारी और भी तमाम विनाशकारी चीजें—शायद मेरे भोले विपक्षियों को यही पसन्द है । यद्यपि ये विपक्षा विज्ञान का पक्ष लकर आपको गुमराह करने का बहुत बड़ा अपराध कर रहे हैं किन्तु मैं इन शब्दों क साथ अपनी बात समाप्त करूंगी कि—

"हे प्रभो ! तू इन्हें क्षमा कर दना क्योंकि
ये बेचारे नहीं जानने कि ये कितना
बड़ा अपराध कर रहे हैं ।"

(जन-ज्ञान मासिक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अणु में छिपा विराट् मानव

लालबहादुर शास्त्री

सुप्रसिद्ध पत्रकार "आभा" की श्रीमती ललिता शास्त्री से भेंट वार्ता

जवानो आगे बढ़ो ! भगवान हमारी रक्षा करेगा। ऐसे जोशीले उदगारों से भारतीय सैनिकों में उत्साह का संचार कर गीता को दोहराने वाले नेता थे—लालबहादुर शास्त्री। सचमुच ही अपने आप में एक अनोखा व्यक्तित्व लिए हुये पूर्णतः देश के लिए समर्पित उस महान् नेता की याद आज भी प्रत्येक देशवासी को असीम प्रेरणा प्रदान करती है।

११ जनवरी उनका स्मृति दिवस। उस महामानव की कुछ शब्दों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित करने की व उनके जीवन प्रेरक प्रसंगों से कुछ शिक्षा-ग्रहण करने की इच्छा से उनकी अर्धांगिनी श्रीमती ललिता शास्त्री से एक भेंटवार्ता आयोजित की।

जनपथ मार्ग पर स्थित बंगले के लान में घूमते हुये सौम्यता-सादगी की मूर्ति ललिता जी को देखकर शास्त्री जी की विनम्र शान्त प्रतिमा ही आंखों में तैर गई। ललिता जी मानों उसी सौम्यता का प्रतिरूप हैं।

अभी इसी सोच में डूबी थी कि उनकी भतीजी रश्मि जी अन्दर आईं। कुछ बातचीत हम कर ही रहे थे कि तभी ललिता शास्त्री ने अन्दर प्रवेश किया।

मैंने अभिवादन कर अपना परिचय दिया व आने का उद्देश्य बताया। ललिता जी एक बार किसी अनजाने लोक में खो गईं—शायद शास्त्री जी की दिव्य स्मृति में—, किन्तु यह विस्मृति अलौकिक थी। मैंने शास्त्री जी की स्मृति कुरेदने वाला ही एक प्रश्न पूछा

'ललिता जी ! आज राजनीतिज्ञ देशहित को भूलकर केवल सत्ता के लिये सोचते हैं। क्या शास्त्री जी के जीवन के कुछ ऐसे—प्रसंग आपको याद होंगे जब उन्होंने कुर्सी से अधिक महत्व अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्य को दिया हो ? "वैसे तो उनका सम्पूर्ण जीवन ही देश व जनता के प्रति समर्पित था। और एक सच्चे राजनीतिज्ञ का जीवन देश के लिए समर्पित होना चाहिये। उनके हृदय में दिन रात-समाज एवं देश के उत्थान का जनून छाया रहता है। उसकी निगाह में सत्ता कुछ भी नहीं होती - देशहित ही सर्वोपरि रहता है। शास्त्री जी भी इसी कोटि के राजनीतिज्ञ थे। यही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कारण था कि १६२१ में जब देश गुलाम था—गांधी जी के एक आह्वान पर अध्ययन को बीच में अधूरा छोड़ राष्ट्र हित के लिये सत्याग्रह आन्दोलन में कूद पड़े थे। अधिक क्या कहूं उनकी तो हर सांस देश के लिये थी। तब भी मुझे एक दो महत्वपूर्ण प्रसंग कुछ याद आ रहे हैं एक है कामराज योजना के अन्तर्गत मंत्री पद से इस्तीफा व दूसरा है अटियालूर ट्रेन दुर्घटना को नैतिक जिम्मेदारी मानकर—रेल मंत्री के पद को त्यागा था।

वे अक्सर कहा करते थे--

'मैं कुर्सी पर बहुत हल्का बैठता हूं'।
यह तो उनके लिये जनता की सेवा का साधन का माध्यम था।

—केवल उन्नीस महीने के प्रधान मंत्रित्व काल में अर्थात् इतनी अल्पावधि में शास्त्री जी को असीम लोकप्रियता के अन्य आप क्या कारण समझती हैं।
ऐसा लगा कि इस प्रश्न को सुनकर ललिता जी के सामने अतीत के पृष्ठ खुलते जा रहे हैं। वे बोलीं—

चाहे वो साधारण कार्यकर्त्ता रहे हों मंत्री या प्रधानमंत्री—लेकिन कभी भी स्वयं को 'लोक सेवक से अधिक कुछ नहीं समझा। दीन निर्धन जनता के प्रति उनके मन में असीम सहानुभूति एवं पीड़ा थी। मैं आपकी इस बात का सबसे मुख्य कारण यही मानती हूं कि उनके अपने रहन-सहन, बातचीत एवं लिबास आदि में जन-साधारण ने अपनी छवि देखी थी। चाहे पारिवारिक वेदना हो या विपत्ति, देश की गरिमा प्रतिष्ठा एवं मान के आगे सभी कुछ तुच्छ था। वे सदैव देश के कार्य को ही प्राथमिकता देते थे। बस यही सब कारण थे जिससे आज भी प्रत्येक भारतीय के हृदय में उनके प्रति आदर व निष्ठा विद्यमान है।

यह सही है—और जैसा कि आपने अभी कहा है कि शास्त्री जी एकमात्र अकेले ऐसे नेता हैं जो साधारण भारतीय नागरिक की तरह जिन्दगी जीते थे—क्या इसके पीछे की मूल प्रेरणा आप बता सकती हैं ?

उन पर सबसे अधिक प्रभाव था—बाल्यकाल से ही प्रबल संस्कारों की जन्मदात्री मां रामदुलारी का ! जिन्होंने उनके हृदय में सरलता-सादगी व देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भर दी थी। जिन परिस्थितियों में उनका जन्म हुआ, अध्ययन किया। उसका असर उन पर जीवन पर्यन्त रहा।

दूसरे पूज्य बापू जी की उन पर अमिट छाप थी। साधारण जीवन एवं उच्च विचारों को ही उन्होंने अपना ताना बाना बना लिया था, उनके ताने बाने के बीच उनके जीवन की धुरी चलती रही। जिसके फलस्वरूप (बाह्य दिखावा) बनावटी एवं ऐशोआराम की चीजें उन्हें सम्मोहित न कर सकीं।

क्या आप शास्त्री जी के जीवन के कुछ अन्य ऐसे प्रसंग बता सकेंगी जो युवा पीढ़ी को प्रेरणा दे सकें ?

आज की युवा पीढ़ी को उनसे बहुत कुछ सीखना चाहिए। उनकी देशभक्ति शिक्षा के प्रति लगाव आत्मस्वाभिमान, कर्त्तव्यनिष्ठा, ईमानदारी, सहृदयता एवं सादगी ये तमाम गुण सदैव देश की युवा पीढ़ी को प्रेरणा देते रहेंगे ! साथ ही उनकी धरोहर प्रत्येक भारतीय को प्रभावित करती रहेगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामयिक विचार

—सत्यपाल शास्त्री

यह कैसी धर्मनिरपेक्षता है

लखनऊ और दिल्ली से प्रकाशित होने वाले 'नेशनल हैरल्ड' का उर्दू संस्करण' कौमी आवाज' अब (१४, दिसम्बर, संजय गान्धी के जन्म दिवस से) दिल्ली से भी प्रकाशित होने लगा है। दिल्ली संस्करण के प्रथम अंक में अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति (इन्दिरा) का पूरे पृष्ट का एक विज्ञापन प्रकाशित हुआ है, जिसे पढ़कर हमारे आश्चर्य की सीमा न रही और हमारे मुंह से अनायास निकला—यह कैसी धर्मनिरपेक्षता है ! विज्ञापन इस प्रकार है—'अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति (इन्दिरा) सदा देश के दूसरे सबसे बड़े बहुसंख्यक समुदाय (अर्थात मुसलमानों—लेखक) के अधिकारों की ध्वज वाहक रही है। वह 'कौमीआवाज' के दिल्ली से प्रकाशन के समारम्भ पर हार्दिक बधाई प्रस्तुत करती है। 'कौमीआवाज' भी सदा देश के दूसरे सबसे बड़े बहुसंख्यक समुदाय के हितों का प्रवक्ता और लोकतन्त्र व धर्मनिरपेक्षता का ध्वजवाहक रहा है। दिल्ली से उसके प्रकाशन का समारम्भ एक नेक काम है।' इसका मतलब तो यह हुआ कि इन्दिरा कांग्रेस की स्थापना मुसलमानों के अधिकारों और हितों की रक्षा के लिए हुई है। यदि इन्दिरा कांग्रेस मुसलमानों के अधिकारों और हितों की रक्षा के लिये सदा तैयार रहने के बावजूद धर्मनिरपेक्ष है, तो हिन्दू महासभा; राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आदि संगठन साम्प्रदायिक कैसे हो गये ? यदि हिन्दू हितों की रक्षा साम्प्रदायिकता है, तो मुस्लिम हितों की रक्षा साम्प्रदायिकता क्यों नहीं—धर्म निरपेक्षता क्यों है ? इसका केवल एक उत्तर है और वह यह कि सत्तारूढ दल दोहरे मापदंड अपना रहा है। इस दल के लिये यह कोई नई बात नहीं। स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू सारी उम्र हिन्दू सगठनों का नाम ले-लेकर उन्हें कोसते रहे। उन्होंने एक विचित्र थ्योरी प्रतिपादित की कि वैसे तो सभी समुदायों की साम्प्रदायिकता बुरी है, लेकिन बहुसंख्यकों की साम्प्रदायिकता अल्पसंख्यकों की साम्प्रदायिकता की अपेक्षा अधिक बुरी है। इस मामले में श्रीमती इन्दिरा गांधी अपने पिताजी से भी आगे बढ़ गई। उनके शासनकाल में केरल में कांग्रेस और मुस्लिम लीग साथ-साथ सरकार में बने रहे। दोनों में राजनैतिक समझौता का कारण पूछने पर इन्दिरा जी ने कहा कि 'मुस्लिम लीग उत्तर भारत में तो साम्प्रदायिक है; लेकिन दक्षिण भारत में साम्प्रदायिक नहीं। ऐसी स्थिति में यदि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू अनुभव करते हैं कि अपने ही देश में उनकी उपेक्षा हो रही है—अपमान हो रहा है, तो वह बेचारे ठीक ही सोचते हैं। कहां तो बेचारे हिन्दुओं की यह दुर्दशा कि वे अपने आपको हिन्दू कहने में भी शर्म महसूस करने को बाध्य हैं। और कहां कांग्रेस की यह निर्लज्जता पूर्ण स्वीकारोक्ति कि हमारा तो जन्म ही मुस्लिम अधिकारों और हितों की रक्षा के लिये हुआ है। भगवान ही इस देश की रक्षा करें।

आँख निकाल लेने की संस्कृति

नवम्बर के अंतिम सप्ताह में अचानक अखबारों में यह खबर छपी कि भागलपुर (विहार) में पुलिस ने अनेक नागरिकों को, जिन्हें वे अपराधी समझते हैं, पकड़कर उनकी आंखें निकलवा लीं। यह भी छपा कि आज की नहीं, अपितु अक्तूबर १९७९ की बात है और तब से अब तक जितनी घटनाएं हो चुकी हैं, उनकी संख्या १३० तक बताई जाती है। इस वर्ष अक्तूबर में जब मामला उच्चतम न्यायालय में पेश हुआ, तब जनता को इस बारे में पता चला। जिनकी आंखें फोड़ी गई थीं, उनमें से अधिकतर १७ से २५ वर्ष तक की उम्र के बच्चे अथवा युवक हैं।

हमारा देश भी विचित्र है। यहां पीड़ितों को हमदर्द नहीं मिलते हैं, तो अपराधियों के साथ हमदर्दी जाहिर करने वाले भी हैं। कितने आश्चर्य की बात हैं कि आंखें निकाल लेने सदृश वीभत्स कृत्य को भी कुछ लोग सही ठहरा रहे हैं। कोई कहता है कि इन्हें दंडित करने से अपराधों में कमी हुई है, कोई कहता है कि जनता ने इनकी आंखें निकालने के कृत्य का विरोध नहीं किया। हमारा यह निश्चित और सुविचारित मत है कि किसी व्यक्ति का (भले ही वह अपराधी क्यों न हो) आंखें निकालने से बड़ा पाप हो ही नहीं सकता। यदि ऐसी घटनाओं पर भी हमारी आत्मा अन्याय का विरोध और प्रतिकार नहीं करती, तो समझना चाहिये कि हमारी आत्मा 'मर चुकी है'। किसी अपराध पर हाथ काट डालना या आंखें निकाल लेना असभ्य देशों की क्रूर सरकारों के शासन काल में ही सम्भव है। हमारे देश में ऐसा करना तो क्या, स्वप्न में भी ऐसा करने की बात सोचना अक्षम्य अपराध है।

भागलपुर के पुलिस कर्मचारी अपने अपराधी सहकर्मियों के दंडित किये जाने के विरुद्ध जो शोर-गुल मचा रहे हैं, उसकी जितनी भी निन्दा की जाये, कम है। जब तक कोई व्यक्ति न्यायालय में अपराधी सिद्ध न हो जाये, तब तक उसे सजा नहीं दी जा सकती। अपराधी सिद्ध होने पर भी उसे उतनी ही सजा मिलनी चाहिये, जितनी सजा की अनुमति कानून देता है। जो लोग यह कह रहे हैं कि विचाराधीन कैदियों की आंखें निकाल लेने से अपराधों में कमी हुई हैं, इसलिये पुलिस कार्यवाई ठीक ही है, वे आग से खेल रहे हैं। उनका वैचारिक पतन हो चुका है। प्रतिक्रिया स्वरूप कुछ लोग यह कहने लगे हैं। कि विचाराधीन कैदियों की आंखें निकालने वाले पुलिस जनों की आंखें निकाल ली जानी चाहियें।

उर्दू द्वितीय राजभाषा के रूप में

बिहार सरकार ने उर्दू को द्वितीय राजभाषा का दर्जा दे दिया है और इसके विरुद्ध राज्य भर में तीव्र आन्दोलन शुरू हो गया है। दिसम्बर के दूसरे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सप्ताह [illegible] पटरियों पर धरना देकर पटना रेल जंक्शन पर रेलगाड़ियों के आवागमन में रुकावट डाली और अब यह आन्दोलन दरभंगा; छपरा नवादा, रांची और अन्य स्थानों तक भी जा पहुंचा हैं। उर्दू के सम्बन्ध में जारी अध्यादेश का विरोध करने के लिये गठित द्वितीय राजभाषा विरोधी संघर्ष समिति की अपील पर छात्र कक्षाओं से अनुपस्थित रहे।

राज्य सरकार को न जाने क्या सूझा, जो उसने बैठे बिठाये यह मुसीबत मोल ले ली। मुसलमानों को प्रसन्न करने के लिये उर्दू को द्वितीय राजभाषा का का दर्जा दे दिया गया। बिहार में उर्दू के अतिरिक्त मैथिली, भोजपुरी, मागधी, उड़िया और बंगला भी प्रचलित हैं। इन भाषाओं के प्रेमियों को शिकायत है कि उनकी भाषाओं की उपेक्षा करके उर्दू को क्यों प्रभाव दिया गया? इतना ही नहीं, मुख्यमंत्री डाक्टर जगन्नाथ मिश्र ने इस सम्बंध में केन्द्रीय सरकार, पड़ोसी राज्यों और अपने मन्त्रिमण्डल के सदस्यों तक की उपेक्षा की। यदि राज्य सरकार उर्दू को बढ़ावा देना चाहती है, तो वह बिहार उर्दू अकादमी के माध्यम से यह काम कर सकती है। अब भी कुछ नहीं बिगड़ा; सरकार को चाहिये कि वह इस अध्यादेश को कानून का रूप न दें। उस हालत में यह स्वयमेव प्रभाव ही न हो जायेगा आन्दोलन को शान्त करने का यही उपाय है।

चरित्र हनन की बीमारी

हमारे देश में चरित्र हनन की बीमारी बढ़ती ही जा रही है। जिसके जी में जो आता है, अपने विरोधी पर निराधार आरोप लगा देता है फिर मांग शुरू हो जाती है कि इस आरोप की जांच की जाये। इस प्रकार निरर्थक बातों पर समय और शक्ति का अपव्यय होता है। इसका ताजा उदाहरण यह है कि लोकसभा में कांग्रेस (अर्स) के एक सदस्य श्री आर. पी. यादव ने आरोप लगाया है कि भारतीय जनता पार्टी के नेता श्री नाना जी देशमुख ने इंडियन एयर लाइन्स के एक संघी मकैनिक को कहकर उस पिट्स विमान में कुछ खराबी करवा दी, जो २३ जून १९८० को दुर्घटनाग्रस्त हुआ और फलस्वरूप श्री संजय गांधी और कप्तान सुभाष चन्द्र सक्सेना को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। श्री यादव का कहना है कि उन्हें यह बात एक पत्र से पता चली, जो लोकसभा के सदस्य श्री रुद्रप्रताप सारंगी (भारतीय जनता पार्टी के बिहारी नेता) ने अपने दल के अध्यक्ष श्री अटल बिहारी वाजपेयी को लिखा। यह पत्र लोकसभा के पटल पर रखा गया। वाजपेयी जी ने पूछा कि आखिर यह पत्र श्री यादव के हाथ लगा कैसे? यह पत्र वाजपेयीजी को तो मिला ही नहीं। श्री सारंगी ने भी सारी कहानी को मन गढ़न्त बताया। यह कहानी कितनी झूठी है, यह तो इसी से जाहिर है कि इस प्रसंग पर नई दिल्ली के उर्दू दैनिक मिलाप के सम्पादक श्री रणवीर ने जो लेख लिखा है, उसमें उन्होंने यह लिख मारा है कि नानाजी देशमुख लापता है। यदि सम्पादक महोदय ने थोड़ा सा भी प्रयत्न किया होता और मामले की खोज की होती, तो वह इतना बड़ा झूठ बोलने के पाप से बच पाते। इन पंक्तियों का लेखक एक मामूली व्यक्ति है, वह तक पिछले दिनों अनेक बार सभा सोसाइटियों में नानाजी देशमुख से मिलता रहा है और रणवीर जी उन्हें लापता बता रहे हैं। नानाजी देशमुख दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष के नाते संस्थान के भवन में ही रहते हैं और कोई भी व्यक्ति जब चाहे उनसे मिल सकता है। इसलिए यह झूठ जनता के गले नहीं उतरेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लगता यह है कि जैसा "वीर अर्जुन" के सम्पादक श्री के० नरेन्द्र ने लिखा भी हैं। सरकार राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर रोक लगाने की भूमिका बना रही है। (संघ को राजनैतिक संगठन तो घोषित कर ही दिया गया है।) अंग्रेजी में कहावत है कि 'पहले कुत्ते को बदनाम करो और फिर उसे फांसी पर चढ़ा दो।" हमारी सरकार यही कुछ कर रही है।

श्री संजय गांधी का देहान्त हुए छह महीने से अधिक बीत चुके हैं। इस बीच अदालती जांच की घोषणा वापस ले ली गई और विभागीय जांच की रिपोर्ट प्रकाशित नहीं की गई। अब किस बात की जांच होनी है? सरकार एक ही मामले की बार-बार जांच करवाती है और इस बीच जनता उस प्रसंग को भूल जाती है। यही कुछ अब होगा। श्री यादव ने यह आरोप लगाकर एक भौंडा नाटक किया है-- इससे अधिक कुछ नहीं।

ठीक उस समय (२० दिसम्बर की रात्रि) जब ये पंक्तियां लिखी जा रही हैं। आकाशवाणी ने समाचार दिया है कि नानाजी देशमुख ने भुवनेश्वर में संवाद-दाताओं को सम्बोधित करते हुये कहा कि यह आरोप निराधार है। अब हमारे पाठक स्वयं देख लें कि 'मिलाप के सम्पादक के इस कथन में कितना सच है कि नानाजी देशमुख लापता हैं।

श्री रणवीर के झूठ का पक्का प्रमाण अगले दिन (२१ दिसम्बर को) तब मिला, जब नानाजी देशमुख ने नई दिल्ली में संवाददाता सम्मेलन बुलाकर अपने पर लगाये गये आरोपों का प्रबल खंडन किया। इन्दिरा कांग्रेस के महामन्त्री श्री श्यामसुन्दर महापात्र ने भी इस आरोप को निराधार बताया। आश्चर्य की बात है कि आकाशवाणी और दूरदर्शन लगातार तीन दिन तक किसी न किसी रूप में इस समाचार को उछालते रहे। लोकसभा के मार्क्सवादी कम्युनिष्ट सदस्य श्री ज्योतिर्मय वसु ने ठीक ही कहा है कि दुर्घटनाग्रस्त विमान में तोड़ फोड़ का आरोप वैसा ही बनावटी है, जैसा मार्च १९७७ के संसदीय चुनाव से एक-दो दिन पूर्व प्रकाशित यह समाचार था कि अमेठी के समीप श्री संजयगांधी के प्राण लेने के लिए, उन पर गोलियां, बम आदि से हमला किया गया।

संसद् में हल्ला-गुल्ला

युवकों के हृदय में बुजुर्गों के लिए सम्मान की भावना कम हो रही है। इसका असर संसद की कार्रवाई पर भी पड़ा है। इस बार लोकसभा के मध्यावधि चुनाव और राज्यसभा के द्विवार्षिक चुनाव में बुजुर्गों की उपेक्षा की गई और युवकों को तरजीह दी गई। ये युवक परिपक्व नहीं निकले और इन्होंने संसद् के सदनों में हल्ला-गुल्ला मचाने में ही अपने कर्तव्य की इति श्री समझली है। पिछले दिनों राज्य-सभा में एक ऐसी घटना घटी, जैसी पहले कभी न घटी थी। इन्दिरा कांग्रेस के सदस्य श्री एन० के० पी० साल्वे ने सभापति श्री मुहम्मद हिदायतुल्ला (जो उप-राष्ट्रपति भी हैं) को सम्बोधित करते हुए कहा कि "यह सदन न तो कोई अनाथा-लय है, जिसके आप सुपरिंटेंडेंट हों और नहीं यह कोई स्कूल है, जिसके आप मुख्या-ध्यापक हों।"

यह पहला अवसर न था, जब सभापति का अपमान किया गया हो। एक दिन पूर्व ही एक अन्य सदस्य श्री एम० सी० भंडारे ने सभापति से कहा था कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"आपके रुलिंग धोखाधड़ी वाले होते हैं।" यह भी भाग्य की विडम्बना ही थी कि श्री साल्वे ने जो नागपुर में श्री हिदायतुल्ला के छात्र रह चुके हैं, उनके ७५ वें जन्म दिन पर हीं उनका अपमान किया। श्री हिदायतुल्ला इतने नाराज हुये कि वे यह कहकर सदन से चले गये कि "अब मैं कभी नहीं लौटूंगा।" इस पर कुछ महिला सदस्याएं उनके चेम्बर में जाकर उनको मना लाईं। इस प्रसंग पर टिप्पणी करते हुये सदन के सदस्य श्री पीलू मोदी ने कहा कि ऐसी "गड़बड़ियां इसलिए हो रही हैं; क्योंकि सदन में बुजुर्गों का स्थान युवकों (यंग्स्टर्स) ने ले लिया है।' इस सिलसिले में उन्होंने विशेष रूप से श्री जे० के० जैन का नाम लिया। (श्री जैन दिल्ली वासी हैं, लेकिन मध्यप्रदेश से चुनकर आए हैं। वे स्वयं मानते हैं कि वे खुराफात करने का कोई भी अवसर हाथ से नहीं जाने देते। उनकी मात्र योग्यता यह है कि वे दिल्ली से 'दूरन्देश' नामक एक सान्ध्य दैनिक निकालते थे, जो इन्दिरा कांग्रेस का अन्ध समर्थन करता था।

हमारे विचार में यदि युवकों को संसद् में लाना ही है, तो उन्हें लोकसभा में लाना चाहिये। राज्यसभा तो है ही। वयोवृद्ध लोगों के लिए—यहां तक कि अंग्रेजी में राज्यसभा के सदस्यो को 'ऐल्डर्स' (बुजुर्ग) नाम से पुकारा जाता है। स्वर्गीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू जी कहा करते थे कि राज्यसभा उन अनुभवी लोगों के लिये है, जो चुनाव के कीचड़ में नहीं धंसना चाहते। आशा है कि भविष्य में राज्यसभा के लिए नामजदगी के समय सभी राजनैतिक दल इस बात को ध्यान में रखेंगे।

प्रचार योग्य साहित्य

१. सत्यार्थ प्रकाश में क्या है?	:	८० पैसे
२. गीता का योग परकभाष्य	:	२०)
३. ईश्वर : वैज्ञानिकों की दृष्टि में	:	१५)
४. सामवेद भाष्य	:	४०)
५. प्रकृति और सर्ग	:	६)
६. ऋग्वेद शतकम्	:	३)
७. यज्ञ मीमांसा	:	१०)
८. वेदाञ्जलि	:	२५)
९. सोमसरोवर	:	१५)
१०. उपनिषद् संग्रह	:	१०)

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानंद संस्थान के नए प्रकाशन

1. यज्ञ मीमांसा अर्थात् अग्नि होत्र दर्पण

सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डा० रामनाथ

वेदालंकार की पांडित्य पूर्ण भेंट

संपादक—प्रो० धर्मवीर

मूल्य 10) : 21 जनवरी तक 5)

2. सरस्वतीन्द्र जीवन चरित्र

स्व० चिम्मनलाल वैश्य द्वारा १८६१ में लिखा

प्रथम हिन्दी जीवन चरित्र

सजिल्द : मूल्य ३०)

3. सुखी गृहस्थ: प्रचारार्थ मूल्य 60 पैसे

ऋग्दवे शतकम् : 100 मंत्रों का संग्रह

मूल्य 3) अनुपम भावार्थ सहित

4. सोम सरोवर : स्व० चमूपतिजी

मूल्य 15) की सजिल्द अनुमम रचना

दयानन्द संस्थान वेद मन्दिर पो० आ० अलापुर दिल्ली-३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज ?

क्या वह केवल सुधार आन्दोलन है

प्राचार्य दत्तात्रेय वाब्ले, अजमेर

कुछ समय पूर्व आर्य जगत् में होने वाली वह चर्चा भी आजकल बन्द हो गयी है जिसके द्वारा आर्य समाज में बढ़ती हुई शिथिलता पर चिन्ता और विचार होता था। यह लक्षण अच्छे नहीं हैं, या तो हमें अब आर्यसमाज के भविष्य की चिन्ता नहीं रही या हमें उसकी आवश्यकता या उपयोगिता में आस्था नहीं है, इस उदासीनता के जहां अन्य कारण भी हो सकते हैं वहां एक प्रमुख कारण आर्यसमाज के वास्तविक स्वरूप और उद्देश्य के सम्बन्ध में प्रचलित भ्रम भी एक है। आर्यसमाज के बाहर उसके अनेक प्रशासक भी यह मानते रहे हैं कि आर्यसमाज केवल एक धार्मिक और सामाजिक सुधार आन्दोलन है और अब स्वाधीनता प्राप्ति के बाद उसकी विशेष आवश्यकता तथा उपयोगिता नहीं रही हमारे संविधान के नीति निर्देशक तत्वों तथा मौलिक अधिकारों में आर्मसमाज द्वारा प्रतिपादित प्रायः सब सामाजिक सुधारों को सम्मिलित कर लिया गया है। इसलिये उनके लिए किसी आन्दोलन या प्रचार की आवश्यकता नहीं है, ऐसा भी कहा जाने लगा है। किन्तु आर्यसमाज के स्वारूप के सम्बन्ध में इस प्रकार की धारणा सर्वथा भ्रमपूर्ण है। आर्यसमाज वास्तव में एक धार्मिक क्रान्तिकारी आन्दोलन है और सामाजिक सुधार केवल उन धार्मिक मान्यताओं के परिणाम मात्र हैं जिनका ऋषि दयानन्द जी ने प्रतिपादन किया था उदाहरण के लिये जाति-पांति और छूआ-छूत मनुष्य की समानता और एकता के वैदिक सिद्धान्त के प्रतिकूल होने के कारण उनका विरोध आवश्यक था, यह स्मरण रखने की बात है कि आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों या उपदेशों में कहीं पर भी हिन्दुओं के सामाजिक सुधार की बात नहीं लिखी या कही, उनके जीवन तथा कार्य का केन्द्र बिन्दु उस प्राचीन वैदिक धर्म की पुनः स्थापना करना था जिसका उन्होंने अपने ग्रन्थों में विवेचन किया है और उसी उद्देश्य से उन्होंने हिन्द धर्म में प्रचलित मतान्तरों और अन्धविश्वासों की समालोचना की है। वस्तुतः हिन्दू समाज में प्रचलित अधिकांश सामाजिक बुराईयां उसके धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं। इसलिये स्वामी दयानन्द की मान्यता थी कि उन्हें बदले बिना केवल सामाजिक सुधार सर्वथा अस्थायी होंगे। हम देख भी रहे हैं कि स्वाधीनता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्राप्ति के बाद धार्मिक उदारता के नाम पर न केवल अनेक अन्धविश्वासों को बल्कि जाति पाति छूआ छूत, बाल विवाह, दहेज और यहां तक की समाप्त प्राय: सतीप्रथा के सामाजिक अभिशाप तक पुन: उभर रहे हैं।

हिन्दू रक्षा का प्रश्न

अपनी आन्तरिक कुरीतियों से जर्जर हिन्दू समाज जब सर्वथा पद दलित और अरक्षित था उस समय आर्यसमाज ने उसकी सुरक्षा तथा नवजीवन का जो उत्तर-दायित्व अपने ऊपर लिया उसे उसने गत १०० वर्षों में बहुत हद तक पूरा किया है। आज हिन्दू स्वयं अपनी रक्षा के लिये जागरूक और सक्षम हैं। गत कुछ वर्षों से तो यह भी स्पष्ट होता जा रहा है कि एक तरफ जहाँ आर्यसमाज के हाथ से हिन्दुओं का नेतृत्व खिसकता जा रहा है वहां कुछ अन्य संगठन हिन्दू रक्षा के कार्य को और अधिक प्रभावशाली ढंग से करने में समर्थ हैं। स्वाधीन भारत में हिन्दू समाज के लिये विदेशी और विधर्मी तत्वों से भी वह खतरा नहीं रहा जिसका आर्यसमाज ने अपने प्रारम्भिक जीवन में निर्भय होकर मुकाबला किया था। इसलिये मेरी यह स्पष्ट मान्यता है कि अब आर्यसमाज को अन्य हिन्दुओं की रक्षा से कहीं अधिक चिन्ता स्वयं अपनी रक्षा और भविष्य के सम्बन्ध में करनीं चाहिये।

हिन्दुओं की रक्षा की दृष्टि से भी आर्यसमाज का अपना स्वतंत्र और पृथक किन्तु शक्तिशाली अस्तित्व आवश्यक है। स्वर्गीय लाल लाजपतराय ने अपनी प्रसिद्ध अंग्रेजी पुस्तक "दी आर्यसमाज" में सन् १९१५ में ही जो गंभीर चेतावनी दी थी वह आज भी कहीं अधिक प्रासगिक प्रतीत होती हैं। उन्होंने लिखा था कि आर्य-समाज पहले और अन्त तक हिन्दुओं के लिये है और रहेगा किन्तु हिन्दू धर्म में उसका विलीन हो जाना दोनों के हित में नहीं हैं, वकील और मुवक्किल दोनों का हित एक होने पर भी वकील पृथक रहकर ही अपने मुवक्किल की रक्षा कर सकता है।

आर्यसमाज की स्थिति

समाज सुधार तथा राष्ट्रीय शिक्षा के लोकप्रिय क्षेत्र से भी अब आर्यसमाज का नेतृत्व तथा प्रभाव निरन्तर क्षीण होता जा रहा है। दुर्भाग्य से धार्मिक क्रान्ति के अपने आधारभूत प्रमुख क्षेत्र में भी अब वह एक कागजी संगठन बनता जा रहा है। कोई भी हिन्दू केवल चन्दा देकर उसका सदस्य बन सकता है। नियमों और ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित धार्मिक सिद्धान्तों को मानने की शर्त केवल औपचारिक घोषणा से पूरी समझी जाती हैं। उन्हें समझने या समझाने की कोई व्यवस्था नहीं हैं। श्राद्ध, तीर्थ यहां तक की मूर्तिपूजा करते रहने पर भी सदस्यता समाप्त नहीं होती। जात पांत आदि बन्धन अब भी वैसे ही हैं। इस प्रकार आर्यसमाज सुधारवादी हिन्दुओं का एक सामाजिक संगठन मात्र बनता जा रहा है। सदस्यता के साथ ही आर्यसमाज और उसके मन्तव्यों तक से उनका सम्बन्ध प्राय: समाप्य हो जाता है। ऐसी स्थिति में उनके परिवार या सन्तान का वैदिक धर्म के अनुयाई होने या रहने का प्रश्न ही नहीं उठता। वर्तमान राजनैनिक परिवेश में सिद्धान्तों से ज्यादा लोकप्रियता और लोकरंजन का महत्व है। मन्दिरों, गुरूओं, अवतारों, तन्त्र मन्त्र और मूर्तियों पर आस्था के पीछे अन्धविश्वास की जो संस्कारजन्य मनोवृत्ति है उसे पनपा कर यह आशा करना व्यर्थ है कि उनके परिणाम स्वरूप प्रचलित सामाजिक बुराइयां दूर हो सकेगी। विष वृक्ष की जड़ें सींचकर उसके पत्तों को नष्ट करने के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समान यह प्रयास है, कावे में कुफू के समान इनका इलाज करने का दावा करने वाले आर्यसमाज तक में यह रोग फैल रहा है अतः उसके भविष्य ही नहीं अस्तित्व तक को बनाये रखने के लिये इसके सिवाय अब अन्य मार्ग दिखाई नहीं देता कि वह कम से कम अपने इस लम्बे कटु अनुभव के बाद एक पृथक धार्मिक संगठन के रूप में अपने आपको सुरक्षित करें, जो उसका वास्तविक तथा मूल स्वरूप भी हैं। सामाजिक सुधार के क्षेत्र में जाहिरा सफलता के कारण आर्यसमाज का वास्तविक धार्मिक क्रान्तिकारी स्वरूप उसके अनुयायियों की दृष्टि से भी ओझल होता जा रहा है, यदि आर्यसमाज मुख्य रूप से सामाजिक आन्दोलन ही था तो प्रत्येक आन्दोलन के समान उसका तत्कालीन लक्ष्य पूरा होने पर उसकी आवश्यकता समाप्त हो जाती है। जैसा ऊपर संकेत किया गया है। यदि अब आर्यसमाज की कोई उपयोगिता और आवश्यकता है तो वह उसके एक धार्मिक क्रान्तिकारी संगठन के रूप में ही हो सकती है। स्वयं आर्य बने रहे बिना आर्यसमाज तो विश्वम् आर्यम् की कल्पना तक नहीं कर सकता, स्वयं हिन्दू धर्म का अंग बने रहने के प्रयत्न के कारण ही हम एक चौथाई हिन्दुओं को भी अभी तक आर्य नहीं बना सके। इस असफलता पर लज्जित और चिन्तित होने के स्थान में हमारे कुछ नेता उलटे "कृणवन्तो आयानि हिन्दूम" अर्थात् आर्यों को ही हिन्दू बनाने के प्रयत्न में हैं।

नवीन नहीं किन्तु भिन्न

अक्सर यह आक्षेप किया जाता है कि ऋषि दयानन्द किसी नवीन धर्म की स्थापना नहीं करना चाहते थे, इसलिये आर्यसमाज का पृथक या भिन्न अस्तित्व उसे अलग सम्प्रदाय बना देगा। प्रश्न यह है कि क्या उसका आज भी पृथक अस्तित्व नहीं है या हम उसे मिटाना चाहते हैं, और क्या वह बहुसंख्यक हिन्दू धर्म में विलीन होकर उसका सम्प्रदाय नहीं बन जायेगा। वस्तुतः जो लोग उसे केवल एक सुधारवादी आन्दोलन मानते रहे हैं वे ही उसे धर्म का एक आधुनिक सम्प्रदाय समझते हैं, देहली के उच्च न्यायालय ने सन् १९७५ में अपने निर्णय में उसकी यही कानूनी स्थिति घोषित की है। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के ११ वें सम्मुल्लास में हिन्दू धर्म की प्रत्येक शाखा यहां तक की नानक और कबीर जैसे सुधारक पन्थी की भी कड़ी आलोचना की हैं। ऐसी दशा में आर्यसमाज के पृथक अस्तित्व से इन्कार करना ऋषि दयानन्द को खुली चुनौती देना है। आर्यसमाज के पृथक धार्मिक अस्तित्व का यह अर्थ लगाना भी उपहासाप्रद है कि ऐसा करने से वह एक नवीन धर्म बन जायेगा। भिन्न और नवीन पर्यायवाची नहीं हैं पृथक और स्वतंत्र होने पर भी आर्यसमाज का वैदिक धर्म प्राचीन है और हिन्दू धर्म नवीन है। वस्तुतः आज के तथाकथित आधुनिक और सुधरे हुए हिन्दू धर्म की कोई भी परिभाषा ऐसी नहीं की जा सकती कि जिसमें आर्यसमाज को सम्मिलित किया जा सके। अनेक प्रमुख हिन्दू विचारक तो उसे धर्म ही नहीं मानते इसलिये आर्यसमाज उसका सुधरा हुआ धार्मिक संस्करण कैसे हो सकता है यदि हिन्दू धर्म नाम का कोई धर्म है तो भी वह श्रुति स्मृति पुराणोक्त धर्म ही हो सकता है जो पुराणोक्त व्यवहार में केवल धर्म हो है, महात्मा गांधी जैसे समाज सुधारक की दृष्टि में भी मूर्तिपूजा और अवतार हिन्दू धर्म के अंग हैं। ऐसी स्थिति में ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म के अनुयायी धार्मिक दृष्टि से न केवल अल्पसंख्यक ही हैं अपितु वह बहुसंख्यक हिन्दू अर्थात्

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सनातन या पौराणिक धर्मावलंबियों से सर्वथा पृथक और भिन्न भी हैं इस वस्तु स्थिति को वे ही अस्वीकार सकते हैं जिन्हें या तो आर्यसमाज की स्थिति और उसके संस्थापक के सम्बन्ध में सही जानकारी नहीं है या वे जो उसके अहितचिन्तक नहीं हैं, तो नादान मित्र अवश्य हैं।

आर्य और हिन्दू

जैसा उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि मेरा यह विवेचन केवल धार्मिक दृष्टि से ही आर्यसमाज के स्वतंत्र अस्तित्व को उजागर करने के लिये किया गया है इसलियें हिन्दू शब्द की आज जो धर्म निरपेक्ष व्याख्या स्वीकार की गई है इसके परिवेश में आर्य और आर्यसमाजी भी हिन्दू समाज के ही अंग हैं। आज नाम का यह विवाद इस लिये भी महत्वहीन है कि सावरकर तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संचालक और श्री अटल बिहारी वाजपेयी जैसे प्रखर हिन्दूत्वनिष्ठ व्यक्त भी हिन्दू और हिन्दू धर्म की इस भिन्नता को स्वीकार करते हैं। सावरकर ने 'हिन्दुत्व" नामक अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में तो यहां तक कहा है कि हिन्दुओं की एकता और संगठन के व्यापक दृष्टि-कोण से भी यह आवश्यक है कि हम यह स्वीकार करलें कि सिख, जैन, बौद्ध और आर्यसमाजी हिन्दू धर्म के अंग नहीं हैं किन्तु हिन्दू समाज के ही अंग हैं। सामाजिक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से परिभाषित हिन्दू और हिन्दू समाज के वे विशिष्ठ अंग तभी बन सकते हैं जब हम उन्हें स्वयं अनिश्चित और बहुसंख्यक सनातनी हिन्दू धर्म को स्वीकार करने के लिए विवश न करें। सनातनी हिन्दू धार्मिक और सामाजिक दोनों दृष्टि से हिन्दू हैं। किन्तु इस देश को जन्मभूमि और पुण्यभूमि मानने वाले अन्य समुदाय केवल सामाजिक दष्टि से ही हिन्दू संगठन में रह सकते हैं यदि उनको भी हिन्दू धर्म का अनुयायी कहने या मानने का आग्रह किया गया तो वे हिन्दूत्व की परिधि से भी निकलने के लिये विवश हो जायेंगे जैसे सिखों के सम्बन्ध में हो रहा है।

अपने पृथक और स्वतंत्र धार्मिक अस्तित्व और संगठन द्वारा ही आर्यसमाज को पुनः जीवित, जाग्रत और प्रभावशाली बनाया जा सकता है अपनी इस दृढ़ मान्यता और विश्वास को मैं इस लेख द्वारा आर्य जगत के विचारार्थ प्रस्तुत करना चाहता हूं।

आर्यसमाज एक क्रान्तिकारी आन्दोलन है, जिसकी स्थापना मानव मात्र की एकता, के लिए हुयी थी। नाना मत—वादों को समाप्त कर "यत्र विश्वं भवत्येक नीडं" की कल्पना साकार करना हमारा काम है। इस्लाम ईसाइयत व हजारों जहरीले-मनुष्य को मनुष्य से पृथक करने वाले मत समाप्त करने के लिए धरती पर मनुष्य को मनुष्य बनकर रहना सिखाने के लिए आर्यसमाज को युद्ध घोषणा कर आगे बढ़ना चांहिये।

—वेद भिक्षु:

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

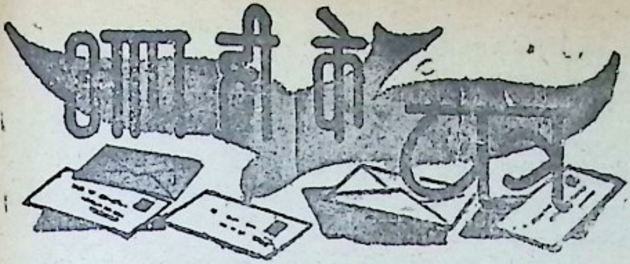

कनाडा से आया एक पत्र

श्रीमती जी और महोदय:

मैं आपसे सविनय नम्रतापूर्वक प्रार्थना करना प्रसन्न करूंगा कि यदि आप मुझको बाबा पृथ्वीसिंह जी आजाद का पता दे सकें तो मैं आप का बहुत कृतज्ञ रहूंगा और मुझको बड़ी प्रसन्नता होगी। विवरण जिन्होंने आपके जन ज्ञान में चैत्र संवत् २०३७ वर्ष १२—अंक १२, में अपना लेख लिखा है।

वृद्धो अपने को बदलो

वैसे लेख तो राकेश रानी का भी मुझको बहुत पसन्द आया है लेकिन सच क्या है ऊपर वाला ही जानता है; लेकिन इतना मैंने भी देखा है, ३३ साल आजादी के बाद भारतीय जवानों की दुनिया या कहिये कि जवान भारत के लिए पानी पीने तक का इन्तजाम भी नहीं हो सका है। यह आँखों देखी बात है, कानों सुनी नहीं है।

नेहरू सरकार ने अपने साथियों को छूट देकर सारे देश में भ्रष्टाचार के कीड़े देश वासियों के खून में भर दिये हैं, इन कीड़ों को मारना आसान नहीं है। यह इस समय ब्रिटिश सरकार से भी कई गुना ताकतवर हो चुके हैं। खैर प्रयत्न जारी रखना हर विवेकी मनुष्य की पूंजी है, हार मानना कायरता है। बाकी जीवन के मैदान में होते ही, मुझे तो संग्राम का सा मैदान सा लगता है। क्या आर्य जगत बढ़ती हुई जनता के बारे में कुछ सोच समझ रहा है, १६४७ में कुल ३५० मिलियन थे अब ६५० मिलियन हो गये है, लेकिन जमीन का हिस्सा उतना ही है जितना कि १६४७ में था। मुझको तो यह चिन्ता है कि आगे २० साल के बाद क्या होगा, वैसे प्रभू की महिमा है, वही जानता है।

आपका विश्वासी
शीतलसिंह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महोदय

आप द्वारा जन-ज्ञान पत्रिका का संचालन देश के हिन्दुओं के लिए बेहद उपयोगी साबित होगा। यह निश्चित है कि इस के दूरगामी परिणाम अवश्य निकलेंगे।

आज राष्ट्र के हिंदुओं की हालत उस मृग के समान है जिसके खुद के मस्तिष्क पर ही कस्तूरी है लेकिन वह उसे ढूढ़ता फिर रहा है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि आपकी यह पत्रिका हर हिंदू को उसकी पहचान करवाये।

देश का हर हिन्दू आपके साथ है और हर परिस्थिति का पूरी बुलंदगी के साथ सामना करने को तैयार है।

दिसम्बर अंक की सामग्री हमें काफी शिक्षा प्रद लगी है इसके लिए आप साधुवाद के पात्र हैं।

सधन्यवाद—
मणीशंकर शर्मा (चूरू)

माननीय वेदभिक्षु: जी, सादर प्रणाम

सेवा में निवेदन है कि जन ज्ञान मासिक अक्तूबर ८० में हिंदु समिति का प्रकाशन पढ़कर अति दुःख हुआ कि ५००० (पांच हजार) वर्षों उपरान्त एक महान आत्मा संसार में आये जिसने संकेत किया कि तुम आर्य हो, आर्यों की सन्तान हो, उठो और राक्षसों को भगाओ और संसार को आर्य बनाओ उस आवाज ने हमें हिंदु से आर्य बनाया जिसके कारण हमने स्वाधीनता प्राप्त की, लेकिन कुछ काल के अंदर हम हिंदू नाम से फिर चिपके। हमने हिंदु सभा बनाई, हमने स्वायं हिंदु सभा बनाइ, हमने राम राज्य परिषद बनाई, हमने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ बनाया, जन संघ बनाया, अब हमारे भाई के० नरेन्द्र जी ने हिन्दू मंच बनाया और आपने हिंदू रक्षा समिति बनाई। आप इतिहास की ओर ध्यान दें कि जितनी सोसाइटियां हिंदू नाम पर हावी हैं उनका आज तक क्या हुआ है। क्यों ऋषी दयानंद हिंदू नाम से कोई समिति नहीं बना सकते थे—क्योंकि वे सत्य के आधार पर जो हमारा नाम था, उस नाम से आर्यसमाज की स्थापना की—हमारा कोई भी धर्म ग्रंथ हिंदू नाम नहीं बताता—दूसरों ने हमें हिंदू कहा हम हिंदू बन गये कारण कि हम पराधीन थे, हमें ऋषी ने जगाया और इस नाम से छुटकारा दिलाने का प्रयत्न किया और अपना वास्तविक नाम आर्य देकर हमें सच्चा स्वरूप बताया, आपसे हम निवेदन करते हैं कि आर्यों को एकत्र करो—और उन्हें संचेत करो कि वैदिक धर्म खतरे में है, वैदिक संस्कृति पर आघात हो रहा है—भारत खतरे में है, आर्य जागेंगे और आर्य ही इसको जगाएंगे और हिंदू हमेशा खतरे में रहेगा इसे ईसाई भी खाएंगे —मुसलमान भी खाएंगे—अन्य जातियां भी इसे खाएंगी कारण यह नाम पराधीनता में प्राप्त हुआ है और पराधीनता में अनेक बुराइयां घर कर जाती हैं इसलिए मैं विनती करता हूं कि ओ३म ध्वज के नीचे सब आर्यों को एकत्र करके और आन्दोलन आरम्भ करो। आर्य धर्म, संस्कृति, जाति को बचाओ, इसी में देश और आर्य जाति की भलाई है—

विनीत — दौलत राम मंत्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रिय महोदय

जन ज्ञान का पिछले माह का अंक देखा। जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आप हिन्दू धर्म के उत्थान में लगे हैं। इस सम्बंध में एक सुझाव देना चाहता हूं।

पिछले कुछ समय में अंग्रेजी व उर्दू पत्रों में इस्लाम व उर्दू के विषय में अनेकों लेख लिखे जा रहे हैं। इनका उद्देश्य मुसलमानों को विशेषाधिकार दिलवाना है। यदि यही स्थिति चली तो १९४६-४७ की दशा की पुनरावृत्ति होने की संभावना है। अतः अपने पत्र के द्वारा प्रयत्नों के अतिरिक्त एक ऐसी समिति गठित कीजिये। जो इन सब प्रकार की बातों का खंडन कर सके तथा हिन्दू दृष्टिकोण रख सके। यह काम जितना शीघ्र हो सके; अच्छा है।

साथ में अमेरिकन पत्रिका न्यूजवीक में छपी ईसाइयों के एक दुष्कर्म की कहांनी संलग्न की है। भारत के अतिरिक्त सभी हिन्दू बौद्ध देशों में सहनशील होने के कारण इनकी यही कहानी है। उत्तरी अफ्रीका इस्लाम के प्रादुर्भाव के पूर्व ईसाइयों का बोलवाला था परन्तु एक असहनशील धर्म—इस्लाम के कारण वहां से इन लोगों को जड़ से उखाड़ फेंका। इसका मतलब यह नहीं कि हिंदू अपने धर्म की विशेषताओं को छोड़ दें। परंतु शठे शाठे समाचरेत की नीति को अपनाये बिना कोई काम नहीं बनेगा।

वास्तव में पश्चिमी एशिया से निकले तीनों ही धर्म—जुड़ाइस्म, ईसाई व इस्लाम में काफी समानता है। सबके पैगम्बर एक ही हैं। और इब्राहीम या एबराहम से आरम्भ होते हैं। असहनशील होने के कारण यह दूसरों का धर्म परिवर्तन करना अपना धर्म समझाते हैं।

भवदीयः
विद्यासागर

माननीय अध्यक्ष जी सादर, नमस्ते

सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण की वात करते हुए महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में मनुजी के वचन का हवाला देते हुए लिखी है कि परस्त्रीगमन करने वाला वृक्ष का जन्म पाता है। क्या यह अनुवाद सही है। यदि सही नहीं है तो अनुवाद सत्यार्थ प्रकाश से अगले अंकों से निकाल दिया जाए।

महर्षि दयानंद तथा मनीषी विद्वान प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय वृक्ष में जीव नहीं मानते है और सर्वत्र ऐसा ही उल्लेख है। आपके जनवरी के, जनज्ञान में वनस्पति में जीव होने से इंकार नहीं किया है। यानी वृक्ष में जीव है ऐसा लिखा है। वृक्ष में ज्ञान—करना न करना और उलटा करना गुण नहीं है। अतः वृक्ष में ज्ञान कभी नहीं हो सकती। यदि आप वनस्पति में जीव मानते हैं (मैं ऐसा नहीं समझता) तो पशु आदि के मारने में भी दोष नहीं होना चाहिये। यह लिखते हुए मेरा हाथ कंप रहा है। फिर भी आशा है कि आप इसका उचित उत्तर देकर मेरी शंका दूर करने का प्रयास अवश्य करेंगे।

१. मनुष्य या योगा कितनी देर तक पानी में डबकी लगाकर अपनी सांस रोक सकता है पानी के अंदर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२. जीव, शरीर छोड़ने के कितने समय बाद जन्म लेता है। प्रमाण सहित लिखें।

कष्ट के लिए धन्यवाद

आपका
रामराज तिवारी
सुलतानपुर (उ० प्र०)

आदरणीय बहन जी (अध्यक्ष दयानन्द संस्थान), नमस्ते

बहन जी, मैं जैसा समझता हूं कि किसी भी आर्य धर्म ग्रन्थ में मांस व मछली खाना वर्जित होगा अगर नहीं तो वह पुस्तक (ग्रन्थ) आर्यों का नहीं अनार्यों का होगा।

एक रोज एक सज्जन ने मुझे यह कहा कि मांस व मछली खाना मनुस्मृति के अनुसार सही है जिसपर मैंने विरोध जाहिर किया। जिस पर वे मनुस्मृति लाकर दिखाया और एक नहीं अनेकों ऐसे मंत्र देखे और अर्थ पढ़ा जिसमें स्पष्ट लिखा था कि कौन मांस सबसे अच्छा होता है और कौन सी मछली अच्छी होती है। मैं देखकर चुप रह गया और जवाब में यह कह कर संतोष किया ऐसी पुस्तक को जला देना अच्छा होगा। लेकिन बाद में यह जरूर महसूस किया कि यह मेरी कमजोरी है या तो सही अर्थ न होगा या अर्थ का अनर्थ होगा। इसी समस्या के समाधान के लिए यह पत्र लिख रहा हूं क्या गलत है और क्या सही है। पुस्तक का विवरण निम्न प्रकार है:—

टीकाकार—पं० गणेशदत्त पाठक
प्रकाशक—बाबू ठाकुर प्रसाद गुप्त (२००४)

अध्याय पांच अभम्य निरूपण—११ मंत्र से ४६ तक खुलेआम मांस भक्षण पर जोर।

पाठीन रोहितावाद्यौ नियुक्तौ हव्यकव्ययो
राजीवान्सिहतुण्गेश्च सशल्कांश्चैव सर्वश।

बहन जी, अगर बात सत्य है तो मैं आज से ही इन ग्रन्थों को अनार्य ग्रन्थ की संज्ञा देता हूं नहीं तो इसका सही अर्थ क्या होगा यथाशीघ्र पत्र द्वारा दें और सही अर्थवाला मनुस्मृति एक प्रति अवश्य भेज दें जिसे मैं उस सज्जन को बतला सकूं कि मांस खाना शास्त्र संगत है या असंगत।

धीरेन्द्र कुमार गुप्त
ग्राम—पतनुका
पो०—वुधनगरा, जि० सीतामढ़ी (विहार)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

डा० भवानीलाल भारतीय पंजाब विश्व विद्यालय के महर्षि दयानंद पीठ के अध्ययक्ष होंगे

यह समाचार सर्वत्र हर्ष से सुना जाएगा कि धुन के धनी, विद्वान जागरूक लेखक, वक्ता डा › भवानीलाल "भारतीय महर्षि दयानंद विद्यापीठ के अध्यक्ष नियुक्त हुए हैं।

बधायी आशा है आप अपनी प्रतिभा से दयानंद. गौरववृद्धि में कारण बनेंगे—

वेदभिक्षु:

जन-ज्ञान के प्रथम सदस्य

आर्य बन्धु रिटायर्ड कैपटेन सोमपाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला देवी जी का स्वर्गवास दिनांक २२-११-८० को होने के फलस्वरूप आर्यसमाज सदर बाजार बरेली कैन्ट द्वारा साप्ताहिक अधिवेशन दिनांक ३०-११-८० को श्रद्धांजलि अर्पित कर दो मिनट को मौन धारण कर दिवंगत आत्मा तथा उनके परिवार जनों को शांति प्रदान करने तथा दुःख सहन करने की शक्ति के लिए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की गई।

जिला आर्यसभा भटिण्डा के समाचार

१४-१२-८० को आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल भटिण्डा में जिला आर्य-सभा की मीटिंग श्री निहालचन्द जी की प्रधानता में हुई पद अधिकारियों का चुनाव प्रधान श्री निहालचन्द जी रामामंडी उप-प्रधान (कार्यकर्त्ता प्रधान) श्री ओमप्रकाश जी आर्य वानप्रस्थी आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल भटिण्डा

उपप्रधान—श्री वेदप्रकाश जी आर्य मानसा मंडी

मन्त्री—श्रीमती कमलाजी भाटिया प्रिन्सिपल आर्य गलर्ज हाई स्कूल भटिण्डा

उप-मन्त्री—श्री तरसेमचन्द जी गौनियाना एवं श्री धर्मदेव जी भटिण्डा

कोषाध्यक्ष—श्री वजीरचन्द जी भटिण्डा

अन्तरङ्ग सदस्य—श्री मेघराज जी बुडलाडा, श्री बनारसी दास जी बरेटा मंडी, श्री चिरंजी लाल जी तलवन्डी साबो—

नीचे लिखे प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हुए:—

१. जिन जिन आर्यसमाजों में पुरोहित हैं वहां दैनिक दोनों समय सन्ध्या-हवन यज्ञ किए जाया करे।

२. प्रत्येक सभासद् के घर महर्षि दयानन्द का चित्र, सत्यार्थ प्रकाश तथा आर्यसमाज के नियमों वाला चार्ट होना चाहिए सम्भव हो तो घरों पर ओ३म् का झण्डा भी लगाया जावे।

३. सत्संगों की हाजिरी बढ़ाई जावे स्वयं आते समय अपने इष्ट मित्रों तथा परिवार को भी लाने का यत्न करना चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४. प्रत्येक सभासद् को प्रतिवर्ष एक दो बार अपने घर पर पारिवारिक सत्संग के रूप में हवन यज्ञ अवश्य कराना चाहिए।

५. अपने इष्टमित्रों सम्बन्धियों के यहां भी हवन यज्ञ करने की प्रेरणा देनी चाहिए।

६. प्रत्येक सभासद् को प्रातः काल उठकर अपने सारे परिवार में परस्पर नमस्ते करनी चाहिए।

७. आर्यसमाज की सभी शिक्षा संस्थाओं में धर्मशिक्षा अनिवार्य हो।

८. आर्यसमाज से सम्बंधित कोई संस्था जब कलेण्डर छपवावे तो उसमें आर्य पर्व तिथि सहित अवश्य ही प्रकाशित किए जाया करें।

९. सभी आर्य शिक्षा संस्थाओं में उचित स्थान पर आर्य पर्वों का बोर्ड लगाया जावे—पर्व की तिथि से कुछ दिन पहले शिक्षा संस्था का मुख्य अधिकारी आर्यसमाज के मंत्री व प्रधान जी से मिलकर पर्व को उत्साह पूर्वक मनाने का प्रोग्राम बनाकर उसे बोर्ड पर लिखे तथा अधिक से अधिक स्त्री पुरुषों को सूचित करके पर्वों में आमन्त्रित करें।

जिला आर्यसभा भटिण्डा का मुख्य कार्यालय आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल भटिण्डा में और उप- कार्यालय आर्य गलर्ज हाई स्कूल भटिण्डा में होगा।

भटिण्डा के निकट की आर्य समाजें आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल भटिण्डा की सेवाओं से लाभ उठावें।

ओमप्रकाश आर्य
कार्यकर्त्ता प्रधान
जिला आर्य सभा भठिण्डा

बीसवीं शताब्दी का एक और चमत्कार

इस विज्ञान के युग में आप प्रतिदिन पत्रिकाओं में विभिन्न चमत्कारपूर्ण आविष्कारों के विषय में पढ़ते रहते हैं। इसी चमत्कार श्रृखला में से और एक चमत्कार पूर्ण आविष्कार के विषय में सुनकर आप सभी आश्चर्य चकित होंगे—

पिछले दिनों गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोलाझाल मेरठ (उ० प्र०) के एक छात्र के प्रयास द्वारा एक अभूतपूर्व तथ्य प्रकाश में आया—वह यह कि एम्पलीफायर के लीड पर एक साधारण वेयर् (तार) लगाकर उससे पूरा रेडियो का काम लिया जा रहा है। इस एक मात्र तार खण्ड की सहायता से एक साधारण एम्पलीफायर द्वारा पार्श्वस्थ दिल्ली आदि रेडियो स्टेशनों का संपूर्ण प्रोग्राम स्पष्टरूपेण सुना जा रहा है।

श्री रमेशचन्द्र शास्त्री का देहान्त

अजमेर के श्री रमेशचन्द्र शास्त्री का पिछले दिनों देहान्त हो गया। वे हंसमुख विद्वान प्रभाशाली वक्ता थे। पिछले दिनों बीकानेर में दो रातें उनके संग बीतीं वे सच्चे आर्य थे। प्रभु दिवगत को शांति व परिवार को धैर्य दें। —वेदभिक्षु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

दयानन्द-संस्थान

का

नया बड़ा

सूची पत्र

★
★★

१.१.८१ से लागू

★
★

दयानन्द संस्थान (ट्रस्ट)
१५९७ हरध्यानसिंह मार्ग, नई दिल्ली ५
दूरभाष ५६२६३९/८०१२११/५६९८६१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक साहित्य

१. ऋग्वेद (६ मण्डल) महर्षि दयानन्द कृत भाष्य

ग्रन्थ १०×१५ इंच के ६०४ पृष्ठों में है। सुनहरी कपड़े की जिल्द वजन लगभग ३ किलो है।

मन्त्र, शब्दार्थ—भावार्थ सहित
पुस्तकालय संस्करण : मूल्य ८५)
आर्ट पेपर पर उपहार संस्करण : २०१)

ऋक् का तात्पर्य यह है कि उससे सब पदार्थों के गुणों और स्वभावों का वर्णन किया जाता है और वेद अर्थात् जो सत्य-सत्य ज्ञान का हेतु है। इन दो शब्दों से ही बना है ऋग्वेद और उसी से इस महान् ग्रन्थ के पठन-पाठन की उपयोगिता स्पष्ट है।

२. ऋग्वेद (७-१० मण्डल)
सुनहरी जिल्द (१०×१५ इंच साइज, पृष्ठ ५०० से अधिक)

पुस्तकालय संस्करण : मू० ८५)
उपहार संस्करण : मू० २०१)

३: यजुर्वेद-सामवेद भाष्य—पृष्ठ ४८०। साइज १०×१५ इंच। वजन २ किलो लगभग। भाष्यकार महर्षि दयानन्द सरस्वती—आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री।

पुस्तकालय संस्करण : मू० ८५)
उपहार संस्करण : मू० २०१)

यजुर्वेद में चालीस अध्याय हैं और कुल १९७५ मन्त्र। ईश्वर ने ऋग्वेद में गुण और गुणी के विज्ञान के प्रकाश के द्वारा सब पदार्थ सिद्ध किए हैं। उन मनुष्यों को पदार्थों से जिस-जिस प्रकार यथायोग्य उपकार प्राप्ति हेतु क्रिया करनी चाहिए तथा क्रिया के जो-जो अग व साधन हैं उन्हें यजुर्वेद में प्रकाशित किया गया है।

भगवान् की प्राप्ति का साधन है उपासना। यह ज्ञान और कर्म के समन्वय का उदात्त रूप है। सामवेद इस सम्बन्धी प्रक्रिया से सम्बन्धित है। सामवेद में वर्णित समन्वय और उपासना ज्ञान के समुन्नायक हैं। इसी दृष्टि से सामवेद का अध्ययन अभीष्ट है। ग्रन्थ की भाषा, भावार्थ आदि सभी अनुपमेय हैं।

४. अथर्ववेद भाषा भाष्य। १०×१५ इंच के ४५६ पृष्ठ।

सुनहरी जिल्द पुस्तकालय संस्करण मूल्य ८५)
उपहार संस्करण : मूल्य २०१)

अथर्ववेद का यह भाष्य सुप्रसिद्ध आर्यमनीषी पं० क्षेमकरण दास त्रिवेदी द्वारा किया गया था। ईश्वर कृत चारों वेदों में से अथर्ववेद भी एक है। ज्ञान-विज्ञान और आयुर्वेद का विशद, प्रेरक वर्णन पढ़कर आप मन्त्रमुग्ध हो उठेंगे।

५. ऋग्वेद भाष्य सम्पूर्ण—मू० १५१)
६. यजुर्वेद+सामवेद+अथर्ववेद भाष्य १५१)
७. यजुर्वेद भाष्य महर्षि दयानन्द कृत सजिल्द मू० ५१)
८. अथर्ववेद परिचय : पं० विश्वनाथ विद्यामार्त्तण्ड। मूल्य ८)

यह एक खोजपूर्ण प्रामाणिक ग्रंथ है। इसमें अथर्ववेद का परिचय पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड ने नितान्त सरल और बोधगम्य भाषा में दिया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसे पढ़कर आप जहां लेखक की विद्वत्ता और ज्ञान का अनुभव करेंगे वहां आपको अथर्ववेद में वर्णित विषयों की भी संक्षिप्त जानकारी प्राप्त होगी। लेखक वेदों के प्रकाण्ड पंडित और भाष्यकार हैं।

९. अथर्ववेदीय चिकित्सा शास्त्र : विद्यामार्त्तण्ड स्वामी ब्रह्ममुनिजी
कपड़े की सुनहरी जिल्द (द्वितीय संस्करण) मू० २५)

यह एक महत्त्वपूर्ण शोध ग्रंथ है। स्वस्थ रोगी न हों और रोगी स्वस्थ हो जायें, यही आयुर्वेद शास्त्र का प्रयोजन है। इस ग्रंथ में अथर्ववेद में वर्णित चिकित्सा-पद्धति के सम्बन्ध में महान् मनीषी द्वारा खोजपूर्ण सामग्री प्रस्तुत की गई है। आयुर्वेद व वैदिक साहित्य के मर्मज्ञों के लिए यह ग्रन्थ एक वरदान है।

१०. सामवेद भाष्य सजिल्द मूल्य ४०)
पं० विश्वनाथ विद्यामार्त्तण्ड का अनुपम आध्यात्मिक भाष्य

११. वैदिक गीता भाष्य सजिल्द मूल्य २५)
स्व० पं० आर्यमुनि कृत यह गीता भाष्य आज तक के गीता भाष्यों में सर्वश्रेष्ठ है।

१२. वेदांजलि सजिल्द मू० २५)
३६५ मन्त्रों का भाष्य, प्रतिदिन के स्वाध्याय के लिए अनुपम।
वैदिक विनय के तीनों भागों का नया सुसम्पादित संस्करण

१३. अपने प्रभु से ! प्रार्थना अजिल्द मूल्य ८)
आर्याभिविनय के कुछ मन्त्रों की विस्तृत व्याख्या। श्री ज्ञानी पिण्डीदास जी के परिश्रम व स्वाध्याय का परिणाम।

१४. श्रीमद्दयानन्द प्रकाश : स्वामी जी का भक्तिपूर्ण जीवन
स्वामी सत्यानन्द जी की लेखनी का प्रसाद जिसे पढ़कर आप भाव विभोर हो जाएंगे। सजिल्द मूल्य १५)

१५. अथर्ववेदीय मन्त्र विद्या सजिल्द मूल्य १५)
स्वामी ब्रह्ममुनि जी की अथर्ववेद में खोजों का अनुपम ग्रन्थ

१६. उपनिषद् संग्रह : महात्मा नारायण स्वामी जी। मूल्य १०)
पांच उपनिषदों की विस्तृत व्याख्या।

१७. वैदिक सत्संग पद्धति (हिन्दी) नया संस्करण मू० १)
इस पुस्तक में साप्ताहिक सत्संग के लिए सन्ध्या, प्रार्थना-मन्त्र, स्वस्तिवाचन-शान्तिप्रकरण, हवन, मन्त्रों का अर्थ सहित संग्रह उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त ईश्वर-भक्ति के भजन, प्रातः काल उठने के अवसर पर उच्चारित किये जाने वाले मन्त्र तथा अनेक भजन आदि दिये गये हैं।

१८. वैदिक अर्थनीति—श्रीपाद दामोदर सातवलेकर। पृष्ठ ३२
(रायल साइज) मूल्य ५० पैसे

महामहोपाध्याय स्वर्गीय श्रीपाद दामोदर सातवलेकर की इस लघु कृति में आज के सर्वाधिक विवादास्पद विषय अर्थात् धन एवं स्वामित्व के सिद्धान्त का वैदिक व्याख्या के अनुसार सारगर्भित विवेचन किया गया है। उन्होंने बताया है कि वेद का धन के सम्बन्ध में क्या विचार है। आप भी लघु पुस्तक को पढ़कर जान सकेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१९. वैदिक अर्थशास्त्र परिचय : पं० भारतेन्द्र नाथ। मूल्य २)

इस पुस्तक में वैदिक अर्थशास्त्र के मूल सिद्धान्तों की चर्चा तो की ही गई है, साथ ही आज के अर्थव्यवस्था सम्बन्धी प्रचलित वादों से उसकी श्रेष्ठता पर भी प्रकाश डाला गया है। वैदिक अर्थशास्त्र के मूल तत्त्वों को जानने के लिए यह एक उपयोगी और खोजपूर्ण पुस्तक है।

२०. क्या वेद मांस भक्षण का विधान है ?
लेखक—आचार्य शिवपूजन जी, कानपुर मू० १)५०

वेदमन्त्रों की विकृत व्याख्यायें करने वालों ने अर्थ का अनर्थ कर एक विचित्र स्थिति का सृजन कर दिया है। इस प्रकार के मतिभ्रम को फैलाने में पाश्चात्य लेखकों का भी सक्रिय योगदान रहा है। इस पुस्तक में वेद में मांस भक्षण का प्रतिपादन करने वालों को मुंहतोड़ उत्तर दिया गया है।

२१. वेद और बाइबिल—दीनानाथ सिद्धान्तालंकार। मू० २)५०

इस पुस्तक में वेद और बाइबिल की शिक्षाओं के सम्बन्ध में एक तुलनात्मक विवेचन है। इससे पाठकों को वेद की गरिमा का तो ज्ञान होता ही है साथ ही बाइबिल में वर्णित धारणाओं और मान्यताओं के सम्बन्ध में भी वस्तुस्थिति का बोध हो जाता है। इसमें वेदमन्त्र और बाइबिल के वचन दायें-बायें पृष्ठों पर साथ-साथ दिये गये हैं, जिन्हें पढ़कर बिना परिश्रम के भी आप दोनों की तुलना में समर्थ हो सकते हैं।

२२. मोक्ष का वैदिक मार्ग—आचार्य वैद्यनाथ व योगिराज पथिक
मूल्य १)५०

इस पुस्तक के नाम से ही इसमें प्रतिपादित विषय स्पष्ट हो जाता है। पुस्तक में दोनों ही विद्वान् लेखकों ने मोक्ष की प्राप्ति के सम्बन्ध में वेदप्रणीत मार्ग की नितान्त सरल भाषा में व्याख्या की है।

२३. ईश्वर-भक्ति : स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती
मू० २)५०

यह ग्रन्थ स्वामी सर्वदानन्द जी के चिन्तन का प्रतिदान है। ईश्वर भक्ति के सम्बन्ध में इस पुस्तक को महान् वैदिक विद्वान् की अनमोल कृति कहा जा सकता है। ग्रंथ को पढ़कर प्रभु से मिलने की प्रेरणा स्वतः जाग जाती है।

२४. धर्म का मार्ग : पं० सुरेशचन्द्र विद्यालंकार मू० २)५०

धर्म क्या है और इसका मार्ग क्या है, यह इस पुस्तक में स्पष्ट किया गया है। पाकेट साइज में यह ग्रंथ प्रत्येक व्यक्ति को धर्म का मर्म समझा सकेगा।

२५. अमृत पथ : पं० दीनानाथ सिद्धान्तालंकार सजिल्द मूल्य ८)

दुःख से छूटने के लिए अपना ज्ञान आवश्यक है और जो आत्मज्ञान कराये वह अमृत है। हम सब प्रभु भक्त अमृतपान करें, तो हमारा यह जीवन सफल हो जाये। प्रस्तुत ग्रंथ में पं० दीनानाथ सिद्धांतालंकार ने अपने अनेक वर्षों के अनुभव का सार प्रस्तुत किया है।

२६. स्वर्ण पथ : स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
मूल्य २ रु० ५० पैसे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सरल वेदमन्त्रों के भागों की सरस व्याख्या —बच्चों व साधारण पढ़े-लिखे व्यक्तियों के लिए अनुपम है। पुरस्कार में बच्चों को देने के लिए उपयोगी पुस्तक है।

२७. वैदिक धर्म ही क्यों ? —महात्मा नारायण स्वामी
मूल्य १)

प्रसिद्ध संत, विद्वान् और विचारक महात्मा नारायण स्वामी जी का यह उपहार जन-जन के मन में वेद के प्रति—वैदिक विचारों के प्रति आस्था उत्पन्न करने में समर्थ है।

२८. महान् अनुपमेय : ऋषिराज स्वामी दयानन्द मूल्य २ रु० ५० पैसे

लेखक— पं० शिवदयालु आर्य। क्या-क्या विशेषताएं थीं, क्या गुण थे, क्या देन थी, महर्षि दयानन्द की ? दयानन्द के सम्बन्ध में अनेक दृष्टियों से विचार करते हुए लेखक ने गागर में सागर भर दिया है।

२९. धर्म का सार : ९ कथाएं मूल्य २ रु० ५० पैसे

लेखक—मंगलाप्रसाद पारितोषिक विजेता स्व० पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय

इस पुस्तक में ९ कथाओं के माध्यम से लेखक ने धर्म का जो सजीव चित्रण जन-साधारण के लिए प्रस्तुत किया है, उसे पढ़कर मन आनन्द से भर जाता है। सरल और सीधे ढंग से गहन तत्त्वों को समझने-समझाने के लिए पुस्तक अपूर्व है। कथा-वाचकों के लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

३०. आर्याभिविनय (काव्यमय व्याख्या) मूल्य २ रु० ५० पैसे

प्रार्थना अनुपम, कविता हृदयग्राही, भाषा सरस। बस पढ़िये और अपने में मग्न हो जाइए। जेब में रख सकें, सदा पढ़ सकें, ऐसी आकर्षक पुस्तक—सभी दृष्टियों से अपूर्व।

अन्य उपयोगी साहित्य

३१. ऋषि दयानन्द ने कहा था : २) ५० पैसे

इस पुस्तक में विभिन्न विषयों पर महर्षि दयानन्द की प्रेरक, युक्तियों और सूक्तियों का संग्रह प्रस्तुत है। समाज व्यवस्था से लेकर राजनीतिक और आध्यात्मिक विषयों से लेकर व्यक्तिगत जीवन तक के लिए मार्गदर्शक ऋषि दयानन्द के वाक्यों का यह संग्रह पाठकवृन्द के लिए नितान्त उपयोगी है।

३२. योगेश्वर श्रीकृष्ण : स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
नया चतुर्थ संस्करण मूल्य १)५० पैसे

योगेश्वर श्रीकृष्ण सरीखे महापुरुष के सम्बन्ध में व्याप्त अनेकों भ्रान्त धारणाओं का तर्कों के आधार पर प्रबल खण्डन करते हुए इस पुस्तक में इस विश्ववन्द्य महापुरुष के प्रेरक जीवन की झांकी प्रस्तुत की गयी है।

३३, यज्ञ प्रसाद : महात्मा आनन्द स्वामी जी मूल्य १)

इस पुस्तक में महात्मा आनन्द स्वामी के उपदेशों का सार नितान्त प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। यज्ञ के अवसर पर वितरित करने की दृष्टि से यह पुस्तक एक उत्तम प्रसाद है। यज्ञ के बाद प्रसाद रूप में सभी बांटें। यह सच्चा यज्ञ प्रसाद है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विवाह पर बांटने के लिए

३४. धरती का स्वर्गः गहस्थ आश्रम मूल्य ३]
लेखक—पं० शिवकुमार शास्त्री महामहोपदेशक सजिल्द मूल्य ४)
तीसरा नया संस्करण अत्यन्त सजधज के साथ छापा गया है। विवाह पर बांटने के लिए अनुपम प्रेरक भेंट है।

३४A. आदर्श परिवार १]
३४B. सुखी गृहस्थ ६० पैसे
३५. स्वामी दयानन्द [जीवन चरित्र] मूल्य ३)
३६. ज्योति स्तम्भ मूल्य ८)

इस ग्रन्थ में १२ शीर्षस्थ आर्य नेताओं के जीवन चरित्र बड़ी ही प्रेरणादायी भाषा में प्रस्तुत किये गये हैं। इनके साथ ही इन सभी महापुरुषों के चित्र भी आर्ट पेपर पर इस पुस्तक में दिये गये हैं। ग्रन्थ प्रत्येक दृष्टि से संग्रहणीय है।

३७. आर्य क्रान्तिकारी : श्री बनारसी सिंह मूल्य ४ रु०
स्वदेश को विदेशी दासता के बन्धनों से मुक्ति दिलाने हेतु आर्य समाज के जो अनन्य वरेण पुरुष क्रान्ति के महायज्ञ में स्वयं को समर्पित कर अकरत्व प्राप्त कर गये, उनकी प्रेरणामयी संक्षित जीवन कथाएं इस पुस्तक में प्रस्तुत की गयी हैं। पढ़ कर कुछ कर डालने को मन स्वयं मचलता है।

३८. विश्व को आर्य समाज का सन्देश : पं० भारतेन्द्र नाथ

मूल्य ६० पैसे

इस लघु पुस्तक में आर्य समाज द्वारा मानव मात्र के कल्याण के लिए प्रस्तुत सन्देश को बड़ी ही ओजपूर्ण भाषा में प्रस्तुत किया गया है, जिसे पढ़ कर आपको आर्य समाज के सत्य रूप को जानने व समझने में सहायता मिलेगी। पुस्तक का ६ भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

३९. सत्यार्थ प्रकाश : १. प्रचार संस्करण बिना जिल्द मूल्य ५ रु०
४०. ,, ,, २. राज संस्करण सजिल्द मूल्य ६ रु०
४१. ,, ,, ३. उपहार संस्करण कपड़े की बढ़िया जिल्द, बढ़िया कागज पर मूल्य १० रु०
४२. ,, ,, ४. अनुपम शताब्दी संस्करण १०X१५ इंच, बड़ा साइज मूल्य ८५ रु०
४३. ,, ,, ५. अनुपम शताब्दी संस्करण १०X१५] इंच, सुनहरी जिल्द, आर्ट पेपर पर २०१ रु०

सत्यार्थ प्रकाश महर्षि दयानन्द की अमर कृति है एवं एक युगान्तरकारी ग्रन्थ है। इस महान् ग्रन्थ के सम्बन्ध में आर्य जगत् को विशेष परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। सभी के ज्ञान नेत्र इसे पढ़कर खुल जाते हैं।

४४. संस्कार विधि [बड़ा साइज] सजिल्द मूल्य १०]
४५. स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश मूल्य ४० पैसे
यह ग्रन्थ भी महर्षि दयानन्द सरस्वती की अमर कृति है इसमें उन्होंने अपने मन्तव्यों को स्पष्ट कर प्रत्येक मानव को प्रगति पथ पर आरूढ़ होने की राह दिखाई है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४६. मूर्तिपूजा की हानियां मूल्य ४० पैसे

इस लघु पुस्तिका में मूर्तिपूजा की हानियों और दोषों का तर्कसंगत एवं सांगोपांग विवेचन प्रस्तुत ज तथा हिन्दू समाज में व्याप्त भ्रान्त धारणाओं का दिग्दर्शन कराया गया है।

४७. आर्योद्देश्यरत्नमाला मूल्य ४० पैसे

४८. बोध रात्रि [महाकाव्य] मू० १०)

इस ग्रन्थ में कविता के माध्यम से महर्षि की बोधप्राप्ति का वर्णन प्रस्तुत है और साथ ही उनकी सम्पूर्ण जीवन झांकी के कुछ अध्याय भी। यह ग्रन्थ आर्य समाज के साहित्य का एक रत्न कहा जा सकता है। प्रथम संस्करण बर्मा में छपा था, जो ब्रिटिश शासन ने जब्त कर लिया था।

४९. गीत मंजरी [नया तीसरा संस्करण] मू० ३)

यज्ञ एवं अन्य समारोहों के अवसर पर गायें जाने योग्य सैकड़ों भजनों और गीतों को इस पुस्तक में संकलित किया गया है इसका प्रत्येक गीत हृदयस्पर्शी एवं नव प्रेरणादायी है।

५०. आर्यसमाज के आधार : स्वामी दयानन्द मू० २.५० पैसे

ज्ञान अनुपम ज्योति स्वामी सत्यादन्द द्वारा लिखित यह पुस्तक आर्यसमाज को जानने व समझाने अनुपम साधन है।

५१. प्रार्थना सुमन : पं चन्द्रभानु सिद्धन्तभूषण मू० १)५०

इस पुस्तक में विभिन्न विषयों से सम्वन्धित ३१ वेद मंत्रों की हिन्दी और अंग्रेजी में व्याख्या प्रस्तुत की गई है, जो जीवन के विभिन्न क्षत्रों में नवीन प्रेरणा प्रदान करते हैं।

५४. वैदिक संख्या [३२पृष्ट] मूल्य ४० पैसे

५३. श्रद्धाञ्जलियां मू०२.५० पैसे

इस ग्रन्थ में महर्षि दयानन्द सरस्वती को देश-विदेश के नेताओं, मनीषियों और विद्वानों द्वारा व्यक्त की गई श्रद्धांजलियां संकलित हैं। इन्हें पढ़कर महर्षि के साथ ही साथ आर्यसमाज द्वारा विभिन्न क्षेत्र में किए गए योगदान का भी परिचय मिलता है। पुस्तक का अधिकाधिक प्रचार ऋषि के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

प्रचार पुस्तिकाएं (ट्रैक्ट)

आर्यसमाज क्या मानता है? श्री मदनमोहन विद्यासागर मू० ४० पैसे

इस लघु पुस्तक में आर्यसमाज की मान्यताओं की तर्कसंगत व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

५५. महर्षि दयानन्द की विशेषताएं : महात्मा नारायण स्वामी मू० ४० पैसे

यह ट्रैक्ट महर्षि दयानन्द के जीवन की विशेषताओं की संक्षिप्त झलक प्रस्तुत करता है और आर्यसमाज ही नहीं अपितु महर्षि को भी समझने की जिज्ञासा रखने वाले हर व्यक्ति के लिए उपयोगी है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५६. आर्यसमाज की विचार धारा : पं० गगांप्रसाद उपाध्याय,
मू० ४० पैसे

आर्यसमाज की विचारधारा को सही रूप से समझने के इच्छुक प्रत्येक व्यक्ति के लिए इस ट्रैक्ट को पढ़ना सहायक सिद्ध होगा।

५७. आर्यसमाज की मान्यताएं : प्रं० रामचन्द्र देहलवी
मू० ४० पैसे

शास्त्रार्थमहारथी स्व० पं० रामचन्द्र देहलवी के शब्दों में आर्यसमाज द्वारा स्वीकृत मान्यताओं कावर्णन इस लघु पुस्तक में उपलब्ध है।

५८. विश्व को वेद का सन्देश : भारतेन्द्र नाथ मू० ४० पैसे

५९. आर्यसमाज के दस नियम : व्याख्या सहित मू० ४० पैसे

६०. निमन्त्रण आर्यसमाज का : स्व० पं० गगांप्रसाद उपाध्याय
मू० ४० पैसे

पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् व मनीषी थे। उन्होंने इस लघु पुस्तक में आर्यसमाज की विचारधारा पर प्रकाश डाला है।

६१. आर्यसमाज के १०० वर्ष : पं० भारतेन्द्र नाथ मू० ४० पैसे

आर्यसमाज ने १०० वर्ष के कालखण्ड में विभिन्न क्षेत्रों में क्या योगदान दिया है, इसका प्रेरक विवरण पढ़िए इस ट्रैक्ट में, जो अब तक लाखों की संख्या में छप चुका है।

६२. सुख का मार्ग: पं० भारतेन्द्र नाथ मू० ३० पैसे

प्रत्येक मानव सुख-प्राप्ति का इच्छुक है। इसकी प्राप्ति का सरल और सुगम मार्ग जानने के लिए पढ़िए यह लघु पुस्तिका।

६३. आर्य कौन ? पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार मू० ४० पैसे
आर्य शब्द का वास्तविक तात्पर्य और अर्थ समझने के लिए इसे अवश्य पढ़िए।

६४. स्वास्थ्य का महान शत्रु : अण्डा
स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती मू० ४० पैसे

अनेक व्यक्तियों की भ्रान्त धारणा है कि अण्डा मनुष्य का भोजन हो सकता है और उसे खाने में कोई हानि नहीं। इस लघु पुस्तक में इस भ्रान्ति का ठोस तर्कों के आधार पर खण्डन किया गया है।

६५. वेद महिमा ४० पैसे
वेद के सम्बन्ध में शास्त्रों व महापुरुषों के विचार

६६. उपनयन का महत्व ४० पैसे

६७. स्वामी दयानन्द सरस्वती : संक्षिप्त जीवनी ४० पैसे

अंग्रेजी साहित्य

68. Light of Truth—By Swami Dayanand Saraswati सत्यार्थ प्रकाश का सर्वश्रेष्ठ अंग्रजी अनुवाद Rs. 25.00

69. Light of Truth (Abridged) Rs. 3.00

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

70. Life and Teachings of Swami Dayanand by Chhaju Singh Rs. 30,00
श्री छज्जूसिंह लिखित स्वामी जी का जीवन एवं शिक्षाएं नामक यह नितान्त उपयोगी ग्रन्थ है।

71. An Introduction to the Commentary on the Vedas by Swami Dayanand Rs. 15.00
ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का अंग्रेजी अनुवाद पं० घासीराम कृत

72. Teachings of Swami Dayannd Rs. 3.00
इस ग्रन्थ में स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं पर प्रकाश डाला गया है।

73. Ten Commandments Rs. 3.00
आर्यसमाज के दस नियमों की अंग्रेजी भाषा में की गई अनुपम व्याख्या

74. Message of the Arya Samaj to the Universe Rs. 1.00
आर्यसमाज का विश्व को सन्देश का अंग्रेजी अनुवाद

75. Vedic Paryer ६) सजिल्द Rs. 8.00
वैदिक प्रार्थना के सरल व प्रभावशाली अनुवाद

76. Dayanand the Great Paise 50
महर्षि दयानन्द की महानता को इस ग्रन्थ में स्पष्ट किया गया है।

77. An Intoroduction to the Arya Samaj Paise 50
इस पुस्तक में आर्यसमाज का संक्षिप्त परिचय अग्रेजी भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

78. Universal Patriotism Rs. 5.00

79. Christianity and Vedas Rs. 5.00
इस पुस्तक का वर्णित विषय है ईसाइयत और वेद। जिज्ञासु जनों के लिए यह नितान्त उपयोगी लघु ग्रन्थ है।

80. What is Yoga ? Paise 50
इसमें योग के सम्बन्ध में मार्गदर्शन प्रस्तुत किया गया है।

81. Man and his Religion by Dr. Swami Satya prakash Rs.4.00
मानव धर्म की प्रभावशाली व्याख्या प्रस्तुत करने वाली प्रभावशाली पुस्तक

82. A short life of Swami Dayanand Saraswati Rs. 5.00
इस पुस्तक में स्वामी जी की संक्षिप्त जीवन गाथा का वर्णन है।

83, The Great Gayatri paise 50
इस ट्रैक्ट में गायत्री की महत्ता का वर्णन किया गया है।

84. Vedic Fundamentals Rs. 5.00
इस ग्रन्थ में वेदिक मान्यताओं की सांगोपांग व्याख्या है।

85. Essence of Vedic Religion paise 50
इसमें पुस्तिका वैदिक धर्म का सार संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत है।

86. The Fundamentals of the Arya Samaj paise 50
इसमें आर्यसमाज के सिद्धान्तों का परिचय दिया गया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

87. Dayanand's Outline of Vedic philosophy Rs. 15.00
इस ग्रन्थ में महान् विचारक एवं वैज्ञानिक स्वामी सत्यप्रकाश जी ने वैदिक दर्शन सम्बन्धी स्वामी दयानन्द के विचारों को प्रभावपूर्ण भाषा में प्रस्तुत किया है।

88. Yoga of patanjali Rs. 5.00
पातंजल योग का संक्षिप्त परिचय अंग्रेजी भाषा में

89. Ramayana (Two parts) by Shri H. N. Kapoor Rs. 20.00
रामायण का संक्षिप्त रूप

ईसाइयत व इस्लाम सम्बन्धो साहित्य

९०. पोप की सेना का भारत पर हमला ४० पैसे
९१. वाइबिल को चुनौती ४० पैसे
92. Challenge to the Christian Faith paise 15
93. Bible in the Balance—Charles Smite paise 60
९४. चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की ६० पैसे
९५. हिन्दुओं को चेतावनी मूल्य ४० पसे
९५A. भारत के मुसलमानों का क्या किया जाए ? मूल्य ४० पैसे
९५B. क्या ईसा खुदा का बेटा था ? मूल्य ४० पैसे
९५C. ...और पादरी भाग गया मूल्य ४० पैसे

विविध साहित्य

९६. वेद ज्योति—चारों वेदों के १००-१०० मंत्रों का अर्थ सहित संग्रह संग्रह कर्ता व भाष्यकार = स्वामी अच्युतानन्द जी सरस्वती।

सजिल्द: मूल्य ८)

९७. बाल सत्यार्थ प्रकाश:—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती।

बच्चों व साधारण पढ़े लिखे व्यक्तियों के लिए सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् स्वामी जगदीश्वरानन्द जी का यह ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का सार सबल रूप में प्रस्तुत करता है।

मूल्य ४ रु०

९८. भाई परमानन्द: जीवन चरित्र —बनारसी सिंह

बच्चों में राष्ट्र व धर्म भक्ति के भाव भरने के लिए प्रस्तुत जीवनी अत्यन्त उपयोगी है।

सजिल्द मूल्य ३रु०

९९. वन्दना के स्वर: काव्यसंग्रह: क्षेमचन्द्र सुमन

भारत के सुप्रसिद्ध कवियों द्वारा महर्षि दयानन्द को काव्यमय श्रद्धांजलियां—हिन्दी का यह अपूर्व संग्रह अपनी उपमा आप ही है। पुस्तक का विमोचन आर्यसमाज की शताब्दी पर श्रीमती इन्दिरा गांधी ने किया था। सजिल्द: मूल्य १५)

१००. वाल्मीकि रामा णः [संक्षिप्त]श्री प्रेमचन्द्र शास्त्री

सम्पूर्ण वाल्मीकि रामायण का सार प्रस्तुत ग्रन्थ में अत्यन्त रोचक व प्रेरक ढ़ंग से प्रस्तुत किया गया है बांटने, पारतोषिक देने व प्रचार के लिए अत्युत्तम।

सजिल्द मूल्य ६)

१०१. ज्ञान दर्शन: लेखक डा० भवानी लाल भारतीय एम०ए०पी०एच०डी.।

भारत के सभी मत-मतान्तरों का विशद युक्ति तर्कपूर्ण विवेचन ग्रन्थ का विषय है, जिसे लेखक ने अपनी सूझबूझ के साथ भली प्रकार निभाया है। लेखक को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ पर १९७६ का विद्यावती शारदा पुरस्कार भी मिला है।

सजिल्द: मूल्य १५रु.

१०२. दयानन्द चित्रकथा—रंगीन

बच्चों को पुरस्कार देने योग्य अनुपम पुस्तक १ रु०

१०३. योग की राह पर: योगिराज जगन्नाथ पथिक मूल्य १)

[योग मार्ग पर कैसे चलें ? जानने के लिए उपयोगी]

१०४. पातंजल योगशास्त्र मूल्य १रु०

योग की वास्तविकता का प्रमाणिक मार्गदर्शन

१०५. भारत की अवनति के सात कारण मूल्य १)५०

हमें क्यों गिरें ? क्यों परिधान हुए ? यह जागने और आगे बढ़ने के लिए स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती की शक्ति शाली रचना—प्रचार के लिए महत्व पूर्ण।

१०६. बृहस्पति राजधर्म सूत्र मूल्य २रु०५० पै०

संसार के सर्वप्रथम राजनीतिज्ञ आचार्य बृहस्पति की महत्वपूर्ण रचना। यह दुर्लभ ग्रन्थ विश्व साहित्य की अनमोल निधि है।

१०७. उपनिषद् कथा माला: महात्मा नारायण स्वामी मूल्य २)

जीवन का सत्य—प्राणों का गीत—आत्मा का भोजन जिन्हें चाहिए वे यह पुस्तक पढ़ें। अनुभव होगा कि हमने प्रकाश देखा है। अपने ढग की एकमात्र पुस्तक।

१०८. अध्यात्म योग: पं० दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

[कपड़े की जिल्द] मूल्य: १०रु०

अध्यात्म नाम है उस शास्त्र का जो आत्मा को सत्य मानकर चलता है। योग उस शास्त्र का, विज्ञान का नाम है जो अध्यात्म मार्ग को विकसित करता है। अध्यात्म ज्ञान के पावन सन्देश का प्रचार करना ही इस ग्रन्थ के निर्माण का उद्देश्य है।

१०९. स्वामी श्रद्धानन्द[जीवन परिचय] मूल्य: १)

११०. महर्षि दयानन्द का ऐक्यवाद मूल्य २)

महर्षि की एकता सम्बन्धी विचार धारा का स्पष्ट चित्रण प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु की लेखनी से अत्यन्त प्रभावशाली बन पड़ा है।

१११. महर्षि दयानन्द के ऐतिहासिक संस्मरण मूल्य २)

डा०भवानी लाल भारतीय द्वारा लिखित यह पुस्तक इतिहास के विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

११२. राष्ट्रवादी दयानन्द मूल्य:२रु०५० पैसे

११६. योग और ब्रह्मचर्य[सचित्र] मूल्य २ रु० ५० पै०

११४. मुझे आर्य समाज क्यों प्रिय है ? —यशपाल मूल्य: १)

अपने घर पर ओ३म् पताका लहराएं

लागत से कममूल्य पर झंडे देने का प्रबन्ध संस्थान ने किया है। बढ़िया कपड़ा। सुन्दर आकर्षक छपाई। मूल्य अत्यन्त कम।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१२X१८ इंच का झण्डा—२५०रु० सैंकड़ा
१८X२७ ईंच का झण्डा—३५० रु० सैंकड़ा
२८X३० ईंच का झण्डा –६०० रु० सकड़ा
(झण्डों पर बढ़िया स्क्रीन प्रिंटिंग है।)

नया साहित्य

१. भारत के वीर बच्चों की अमर कहानियां मूल्य २)५०
(पुस्तक बच्चों के लिए अत्यन्त प्रेरक व उपयोगी है।)
२. उपदेश मंजरी मूल्य ४)
महर्षि दयानन्द के पूना में दिए गए व्याख्यानों का संग्रह।
३. वैदिक समाज व्यवस्था
लेखक—डा० प्रशान्त वेदालंकार सजिल्द मूल्य १५)
४. महर्षि दयानन्दपरक हिन्दी के महाकाव्य:लघु शोध मूल्य १०)
५. ईश्वर: संसार के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों की दृष्टि में।
पं० क्षितीश कुमार वेदालंकार द्वारा संग्रहीत—सजिल्द मूल्य १५)
६. महर्षि दयानन्द के राजनैतिक सिद्धान्त
श्री लक्ष्मीकान्त दीक्षित लिखित— मूल्य १)
७. लिंग पुराण में क्या है ?
स्व० पं० भीमसेन विद्यालंकार —मूल्य १)
८. जीवन को उन्नत करने का मार्ग—पं० विश्वनाथ विद्यामार्त्तण्ड मूल्य १)
९. गायत्री मंत्र का चार्ट चार रंगों में—मूल्य १) ७५ सैंकड़ा
१०. कायाकल्प —पं० बुद्धदेव विद्यालंकार की अमर रचना मू० २)५०
११. ज्योतिर्मय—साधु टीं० एल वास्वानी की अमर श्रद्धांजलि मू० ३)
१२. छत्रपति शिवाजी मू० ३)

अपने क्षेत्र मे दयानन्द संस्थान की एजेंसी लीजिए

नियम:

१. एजेन्सी के लिए आरम्भ में ५००) नेट का साहित्य मंगाना होगा। २५०) सुरक्षा निधि के रूप में जमा कराना होगा। यह राशि एजेन्सी समाप्ति पर लौटा दी जा सकेगी।

२. संस्थान प्रत्येक एजेन्ट को २५) प्रतिशत कमीशन देगा।

३. भेजने का, पैंकिग का व्यय संस्थान देगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४. ३ मास के पश्चात् अगर कोई साहित्य नहीं बिकेगा तो बदला जा सकेगा। ऐसी स्थिति में एक ओर का व्यय संस्थान देगा।

५. वर्ष भर की कुल बिक्री पर २ प्रतिशत विज्ञापन सामग्री व विज्ञापन व्यय संस्थान देगा।

५. यदि कोई एजेन्ट अधिक उत्साह से पूरा समय देकर कार्य करेंगे तो उन्हें अन्य सुविधाए भी दी जा सकेंगी, जिनका निर्णय अध्यक्ष संस्थान करेंगे।

७. प्रत्येक विवाद का निर्णय दिल्ली क्षेत्र के अन्तर्गत ही माना जायेगा।

८. आरम्भ में साहित्य के साथ साइन बोर्ड भी दिया जायेगा ।

९. एजेन्सी का क्षत्र, कार्य का विवरण आदि परस्पर विचार-विमर्श से निश्चित किया जा सकता है ।

१०. एजेन्सी का कार्यकाल ३ वर्ष होगा। संतोषजनक काम होने पर समय बढ़ाया जा सकता है।

११. प्रत्येक आदेश के साथ १/४ धन अगाऊ भजें।

१२. सभी DRAFT—DAYANANDSANSTHAN, NEWDELHI -5 के नाम भेजें।

१३- १००) नैट से अधिक के आदेश पर २५ प्रतिशत और १०००) नैट से अधिक के आदेश पर ३३ प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा।

— मंत्री

दयानन्द संस्थान

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य
दो जिल्दों में मूल्य २५१)है।
किन्तु प्रचार के लिए रिआयती
मूल्य में दे रहें हैं। सम्पर्क करें।

जन-ज्ञान (मासिक)का नमूना पत्र लिखकर मुफ्त मंगाएं

वेद मंदिर का संचालन

वेद मन्दिर का संचालन "दयानन्द संस्थान" कर रहा है। यह संस्थान चुने हुए विद्वानों संन्यासियों और कर्मठ कार्यकर्त्ताओं का एक पंजीकृत संगठन है।

दयानन्द सस्थान का पूरा पंजीकृत नाम "ऋषि दयानन्द वैदिक संस्थान" है ।

यह संस्थान भारतीय संस्था अधिनियम के अन्तर्गत पंजीकृत संस्थान है।

दयानन्द संस्थान के उद्देश्य

(१) वेद और वेदोक्त विचाराधारा का प्रसार तथा अज्ञान, अभाव और अन्याय की समाप्ति।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(२) मानव के कल्याणर्थ सत्य, ज्ञान, मानवता और न्याय पर आधारित व्यवस्थाओं के प्रचार हेतु वैदिक साहित्य और पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन व शिक्षण संस्थाओं की स्थापना।

(३) अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए चरित्रवान् धर्म प्रचारक, विशेषज्ञ' अन्वेषक और संन्यासी महानुभावों की सेवाएं उपलब्ध करना।

(४) अपने केन्द्र खोलना समान उद्देश्य वाले संगठनों से सम्बन्ध करना, उनकी सहायता करना व अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए अन्य संस्थाएं स्थापित करना।

संस्थान के अधिकारी चुने हुए विद्वान् व संन्यासी महानुभाव हैं।

संस्थान संसार के ज्ञात इतिहास में प्रथम बार २५,००० की संख्या में चार वेदों का भाष्य चार वर्ष में ही प्रकाशित कर अपना कीर्तिमान प्रस्तुत कर चुका हैं।

वेद मन्दिर के लिए सभी प्रकार की सहायता

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर

शहीद लेखराम नगर अलीपुर दिल्ली-३६ को भेज सकते हैं।

वेद मन्दिर को दिया दान आयकर से मुक्त है।

नया ! नया !

गायत्री मंत्र का बड़ा चार्ट

२०X३० इंच साइज में तिरंगा छपा ऊपर "ओ३म्" नीचे गायत्री मंत्र मूल्य २)

१००) सैंकड़ा —भारी संख्या में मंगाएं

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, दिल्ली-३६

राजधानी में बन रहा विशाल वेद मंदिर और आपका कर्त्तव्य

१. दान के प्रत्येक अवसर पर वेद मन्दिर को स्मरण रखिए।

२. अपने किसी भी प्रियजन की स्मृति में कमरा बनवाइए। लागत ५,०००) से १०,००१) तक।

३. यज्ञशाला, मुख्यद्वार, अतिथिशाला, गोशाला व अन्य विभागों को पूर्ण करने में सहयोग दीजिए।

४. कम से कम १००० ईटों का व्यय देकर २५१) की अपनी आहुति भेजिए।

५. पुस्तकालय के लिए पुस्तकें, अलमारी, दरी लाउडस्पीकर, पखे आदि दान में भेंट कीजिए।

६. अपने नगर से वेद मन्दिर के लिए धन संग्रह कर भेजिए।

५०१ रु० देने वाला के नाम का पत्थर लगेगा।

१००१ रु० व अधिक देने वालों वालों का चित्र भी प्रकाशित होगा।

नोट—दानदाताओं का दान आयकर से मुक्त है, अतः उदारतापूर्वक दान दीजिए।

—अध्यक्ष

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नया साहित्य

१. भारत के मुसलमानों का क्या किया जाए ? ४० पैसे
२. हिन्दुओं को चेतावनी ४० „
३. इस्लामी साम्राज्यवाद की चुनौती ६० „
४. पोप की सेना का भारत पर हमला ६० „
५. क्या ईसा खुदा का बेटा था ? ४० „
६. ईसाई मत खण्डन २० „
७. पादरियों को चुनौती २० „
८. BIBLE IN THE BALANCE ६० „
९. और पादरी भाग गया ४० „

एक हजार मंगाने पर ५० प्रतिशत की छूट

---

१. सुखी गृहस्थ मूल्य ६० पैसे
२. ऋग्वेद शतक मूल्य ३-००
३. सोम सरोवर मूल्य १५-००
[स्व० पं० चमूपति एम. ए.
सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या]
४. प्रार्थना पुष्पाञ्जलि मूल्य ६-००
—डा० रामनाथ वेदालंकार
५. यज्ञ—मीमांसा मूल्य २०-००
डा० रामनाथ वेदालंकार
६. प्रकृति और सार्ग : आचार्य उदयवीर शास्त्री ६]
७. सत्यार्थ प्रकाश का महत्व : पं० बिहारीलाल शास्त्री ५]
८. सत्यार्थ प्रकाश में क्या है ? प्रो० धर्मवीर ८० पैसे
९. सत्यनारायण कथा—समीक्षा ५० „
१०. अमृत के तीन घूंट ६० „
११. वैदिक सांध्य गीत : वेदभूषण १)

राष्ट्र का सजग प्रहरी, धार्मिक दर्शक

जन-ज्ञान मासिक

वार्षिक मूल्य २०)

नमूना पत्र लिख बिना मूल्य मंगाए

१५९७ हरध्यानसिंह मार्ग, नई दिल्ली—५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज ही हिन्दू रक्षा समिति के सदस्य बनें व औरों को बनाएं

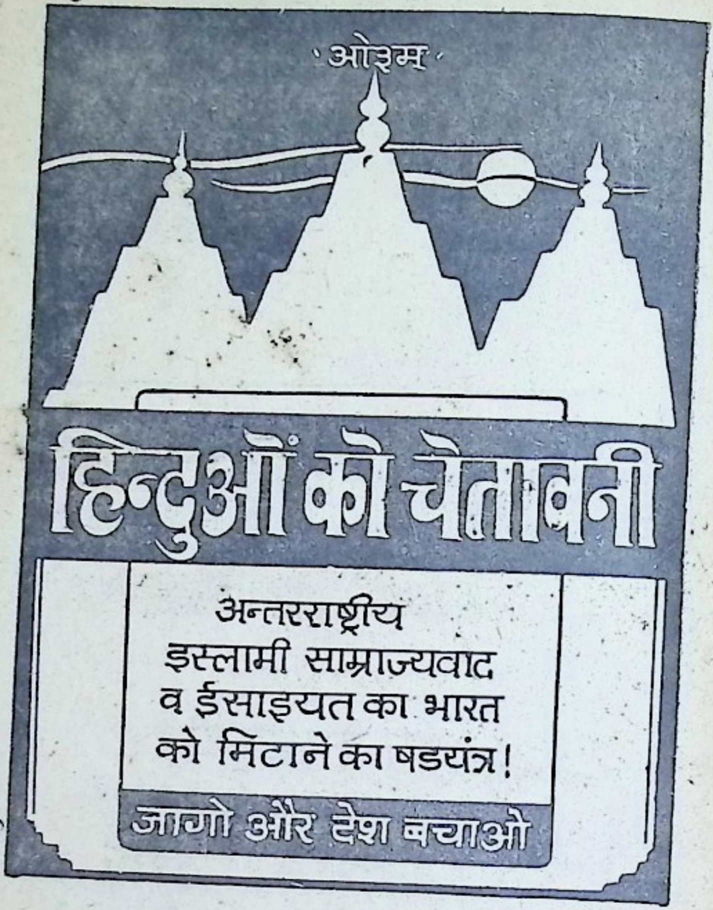

इस पुस्तक को भारी संख्या में बांटिए । ४० पैसे की पुस्तक को हम केवल २०) सैकड़ा में दे रहे हैं । प्रत्येक देशभक्त कम से कम १०० मित्रों तक इसे पहुंचाएं यह मेरी प्रार्थना है—

—अध्यक्ष

मुद्रक : आर्यधन प्रिंटर्स, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-११०००६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

हिन्दुओं को चेतावनी

अन्तरराष्ट्रीय
इस्लामी साम्राज्यवाद
व ईसाइयत का भारत
को मिटाने का षडयंत्र !

जागो और देश बचाओ

दयानन्द संस्थान
वेद मन्दिर नई दिल्ली ११०००५

मूल्य ४०) पैसे । किन्तु प्रचार के लिए २०) सैकड़ा
प्रत्येक हिन्दू देश की रक्षा के लिए १०० पुस्तक अवश्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक) नई दिल्ली-५	जनवरी १९८१	D-C-201 R.N. 107119/65

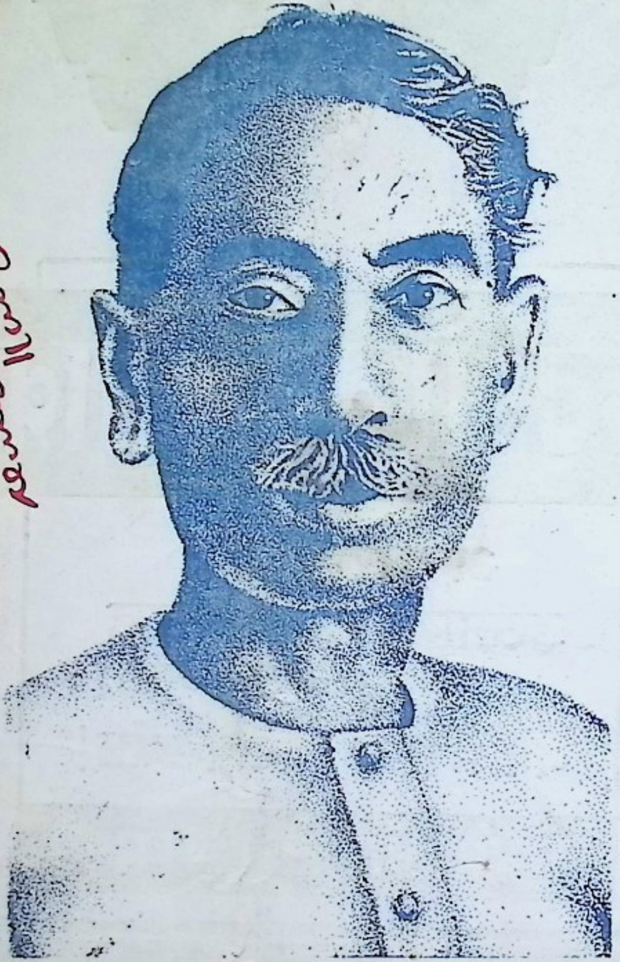

उपन्यासों के द्वारा राष्ट्र में सामाजिक
क्रान्ति के सूत्रधार

स्वर्गीय प्रेमचन्द

संपादक [illegible] द्वारा [illegible] प्रिन्टर्स दिल्ली में छपा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi